अल्लाह को अपना बना लो

अज़ इफ़ादात
हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब
मुअल्लिफ़
मौलाना अरसलान बिन अख़्तर

अल्लाह को अपना बना लो

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब

मुअल्लिफ़

मौलाना अरसलान बिन अख़्तर

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

अल्लाह को अपना बना लो

इफ़ादात

हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब

प्रस्तुतकर्ता

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

Allah Ko Apna Banalo

Author

Hazrat Maulana Tariq Jameel Sahab

Edition: **2014**

Pages: **240**

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Ph.: 011-23289786, 23289159 Fax: 011-23279998
E-mail: faridexport@gmail.com | Website: faridexport.com

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

मौलाना अरसलान बिन अख़्तर

अकाबिर की नज़र में

मौलाना हकीम मोहम्मद अख़्तर साहब दामत बरकातुहुम की नज़र में!

किताब "अल्लाह तआ़ला बन्दों से कितनी मोहब्बत करते हैं" 300 किताबों से मुस्तनद है जिसमें सूफ़ी मौलवी अरसलान साहब सल्लमहूल्लाहु तआ़ला ने अपने फ़ितरी ज़ौक़े आ़शिक़ाना व आ़रिफ़ाना से मोहब्बत व मारिफ़त के निहायत मुफ़ीद मज़ामीन जमा किए हैं। मुझे क़वी उम्मीद है कि ये किताब और मौसूफ़ की दीगर किताबों का मुताला उम्मते मुस्लिमा के लिए मग़फ़िरत और मोहब्बते ख़ुदावन्दी के हुसूल में निहायत मुफ़ीद साबित होगा। दिल से दुआ़ करता हूं कि हक़ तआ़ला मौसूफ़ की तसनीफ़ और तालीफ़ करदा किताबों को उम्मते मुस्लिमा के लिए निहायत मुफ़ीद बना कर क़ारईन और मुआ़वनीन के लिए सदक़-ए-जारिया बनाए। आमीन!!

अल-आ़रिज़

हकीम मोहम्मद अख़्तर अ़फ़ल्लाहु अन्हु

शहीदुल इस्लाम मौलाना यूसुफ़ लुधयानवी रह0 की नज़र में!

हज़रत लुधयानवी रह0 ने मौलाना अरसलान की किताब "अ़लामाते मोहब्बत" की तक़रीज़ में लिखा है कि ज़ेरे नज़र मजमूआ़ में हज़रत मौलाना हकीम मोहम्मद अख़्तर साहब के मुस्तरशिद "जनाब मोहम्मद अरसलान बिन अख़्तर" ने निहायत मेहनत व अर्क़ रेज़ी से सलासत से मामूर और मुस्तनद हवालों से मुज़य्यन ज़ेरे नज़र किताब मुरत्तब फ़रमाई है। जो कि तहसीन और लायक़े एतमाद है। अल्लाह तआ़ला इस मजमूए को नाफ़े बनाए। आमीन!

अल-आ़रिज़

हज़रत मौलाना यूसुफ़ लुधयानवी शहीद रहमतुल्लाहि अलैह

"मौलाना अरसलान बिन अख़्तर" हज़रत मौलाना डॉक्टर मुफ़्ती निज़ामुद्दीन शहीद की नज़र में

डॉक्टर साहब के क़लम से मुख़्तलिफ़ कुतुब पर लिखी गई तक़ारीज़ के चन्द इक़्तिबासात

मौलवी अरसलान बिन अख़्तर की किताब "नमाज़ में ख़ुशू व ख़ुज़ू" में अक़वाले सलफ़ का अच्छा ज़ख़ीरा है। खुसूसन दूसरे हिस्से में ख़ुशू व ख़ुज़ू" की सिफ़त पैदा करने के तरीक़े ख़ूब बयान किए गए हैं। अल्लाह से दुआ है कि अल्लाह तआ़ला उनको उम्मत के लिए नाफ़े बनाए। आमीन!!

बन्दे ने अ़ज़ीज़ मोलवी अरसलान की किताब "हूसूले विलायत" देखी, माशाअल्लाह इस मक़सद के लिए इन्तहाई नाफ़े और मुफ़ीद है इस किताब के मज़ामीन भी माशाअल्लाह बहुत ऊँचे हैं इन्शाअल्लाह इसके पढ़ने से हर शख़्स में मोहब्बते इलाही का जज़्बा पैदा होगा। अल्लाह तआ़ला मुअल्लिफ़ की मेहनत को अपनी मख़्लूक़ के लिए बाइसे हिदायत बनाए आमीन!!

हज़रत डॉक्टर साहब रह0 ने मौलाना अरसलान की किताब "अल्लाह के आ़शिक़ों की आशिक़ी" की तक़रीज़ में लिखा है कि मोलवी अरसलान साहब का तअ़ल्लुक़ बैत चूंकि आ़रिफ़ बिल्लाह हज़रत मौलाना हकीम मोहम्मद अख़्तर साहब से है, इसलिए उनके मुस्तरशिदीन को भी माशाअल्लाह इन चीज़ों में से वाफ़िर हिस्सा मिला है। इसलिए मोहब्बते इलाही का मौज़ू मुअल्लिफ़ मौसूफ़ के लिए शुनीद नहीं बल्कि दीद है। मेरी दुआ है कि अल्लाह तआ़ला मोलवी अरसलान को अपनी मोहब्बत व मारिफ़त कामिला नसीब फ़रमा दे आमीन!! हज़रत डॉक्टर साहब ने "गुनाहों का समुन्दर" नामी किताब में दौराने तक़रीज़ लिखा है बन्दा मोलवी अरसलान की मेहनत को क़द्र की निगाह से देखता है और दुआ़ करता है कि अल्लाह तआ़ला इस किताब को अपने दरबार में क़बूल फ़रमाए। आमीन!

फेहरिस्त

अल्लाह कौन?

हदीसे मुबारक है: احاط بصره بجميع مرئيات अल्लाह तआला की नज़र सारी कायनात को देख रही है, मिसाल के तौर पर يرى دبيب النملة السوداء...... على الصخرة السماء......فى ليلة الظلماء एक काला पत्थर है......पहाड़ भी काला है...... फिर रात भी काली है......फिर ऊपर जंगल छा चुका है...... पत्ते पड़े हुए हैं...... घास है...... पराली है...... काला पहाड़ ......काला पत्थर...... काली रात......फिर ऊपर घास वग़ैरह है...... नीचे एक काली चींटी के चलने से काले पत्थर पर एक लकीर पड़ रही है...... अल्लाह कह रहा है मैं लकीर भी देख रहा हूं।

कभी आप चींटी उठा कर देखो......उसके तो पांव ही नज़र नहीं आते वो लकीर क्या बनाएगी? वो तो नर्म मिट्टी पर चले तो लकीर मुश्किल से बने तो पहाड़ और पत्थर पर लकीर कैसे बनेगी? अगर बड़ी बड़ी खुर्दबीन लगाइ जाएं तो बनती नज़र आएगी, अल्लाह अर्श पर हो के कह रहा है, कि मैं उसे देख रहा हूं। रात का अंधेरा, पहाड़ का अंधेरा, घास का अंधेरा, घास और पराली का अंधेरा, जंगल का अंधेरा, चींटी का अपना अंधेरा, और इस की हक़ीर काली टांगों का अंधेरा भी, मुझसे ये लकीर नहीं छुपा सकता, वो ऐसा बसीर है।

वो सुनने वाला कैसा है...... واسروا قولكم ......

आहिस्ता बोलो...... اواجهروابه ...... ज़ोर से बोलो...... انه عليم بذات الصدور ...... तुम्हारे अन्दर छुपे हुए भेद को भी जानता है...... يعلم السر ...... तुम चुपके चुपके बोले...... واخفى ...... तुम दिल ही दिल में बोले...... अल्लाह कहता है, मैं ये भी सुनता हूं।

☆ तुम्हारे सांस को निकलता देखे, उतरता देखे
☆ तुम्हारे सांस की आवाज़ सुने, दिल की धड़कन सुने
☆ रगों में चलने वाले ख़ून तक की आवाज़ को सुने
☆ पत्ता टूटे उसके टूटने की आवाज़ को सुने
☆ ज़मीन पर गिरे उसके गिरने की आवाज़ को सुने
☆ चींटीं की पुकार सुने, आवाज़ सुने, फरयाद सुने
☆ तहे ख़ाक चलने वाले कीड़े की आवाज़ और सदा सुने
☆ सात समुन्दर की तह में चलने वाली मछली की पुकार सुने,
☆ रेत का एक एक ज़र्रा
☆ ज़मीन का एक एक ज़र्रा
☆ दरख़्त का एक एक पत्ता

يعلم ما فى البرِّ والبحر ज़मीन के अन्दर जो कुछ है अल्लाह के इल्म में है।

किस रब से टक्कर ले रहे हो?

मेरे बन्दो! मेरी बन्दियो! किस से टकराते हो......? जिसने ज़मीन दो दिन में बिछाई......, किस से टक्कर ले रहे हो......? لتكفرون بالذى خلق الارض فى يومين

وتجعلون له اندادا जानते भी हो ये कौन है?

"ذالک رب العالمین"

ये कुल कायनात का शहनशाह है...... बादशाह है...... रब है...... पालने वाला है, ज़मीन के अंधेरे में छुपी हुई चींटी को भी रिज़्क़ पहुंचा रहा है, आंखों से, बड़ी बड़ी खुर्दबीनों से नज़र न आने वाले जरासीमों को वो रिज़्क़ पहुंचा रहा है...... उस रब से टक्कर ले ली तुमने? किस से टकराते हो?

ज़मीन इस लिए बिछाई कि उसपर तुम मस्त हो कर चलो......? इसलिए बिछाई कि उसपर अकड़ कर चलते रहो......? उसपर नाचते, कूदते, गाते हो...... क्या तुमहें ख़बर नहीं है कि अल्लाह वो आंख रखता है...... لا تاخذه سنة ولا نوم जो न ऊँघती है और न सोती है।

क्या इसे नज़र नहीं आ रहा है...... जब तुम बेपर्दा हो कर चलती हो...... जब तुम ज़ेब व ज़ीनत करके निकलती हो...... जब तुम तकब्बुर के साथ अपने माल के घमण्ड में...... अपने हुस्न के घमण्ड में...... अपनी कमाइयों के घमण्ड में...... जब तुम चलते हो...... तो क्या वो आंख सो गई है......? क्या वो ग़ाफ़िल हो गया है......? क्या उसे नज़र नहीं आ रहा......? क्या मौत तुम्हारा गला नहीं दबाएगी......? क्या क़बर तुम्हें ज़ेर व ज़बर नहीं करेगी?

क्या इस हुस्न को अल्लाह तबारक व तआला मिट्टी में नहीं मिलाएगा...... वो कीड़े भी तैयार हो चुके हैं......

जिनमें तक़सीम हो चुकी है...... कि गालों का गोश्त ये कीड़े खाएंगे...... आंखों का गोश्त ये कीड़े खाएंगे...... जिसे काजल से सजाया और घंटों जिनकी नोक पलक को संवारा उसके तो कीड़े भी तय हो चुके हैं कि ये कीड़े उसकी आंखों को खाएंगे, वो माथा जिसे झूमर से सजाया उसको खाने वाले कीड़ों की तादाद मुक़र्रर हो चुकी है।

उसका पेट, उसकी राने उसकी टांगें, उसके बाज़ू उसकी उंगलियां किसने क्या खाना है रिज़्क़ बन कर हमारे वजूद तक़सीम हो चुके हैं, जिस वजूद को कीड़े खा जाएंगे।

सबसे बड़ा मसला

तो जो सबसे बड़ी आफ़त और मुसीबत है कि इन्सान ये दुनिया छोड़ कर जाता है, कितने अरमानों से आप लोगों ने घर बनाए हुए हैं और हर शख़्स ने बनाए हैं, हत्ताकि चिड़या भी घोंसला शौक़ से बनाती है, एक बया, एक परिन्दा छोटा सा, वो भी बड़े ज़ौक़ व शौक़ से तिन्के इकट्ठे करता हैं और अपने लिए घोंसला बनाता है कि ये हर जानदार की फ़ितरत है कि वो रहने के लिए कोई न कोई ठिकाना बनाता हैं, कितने अरमानों से इन्सान घर बनाता है और फिर ख़ामोशी से छोड़ कर लोगों के कंधों पर सवार हो कर अंधेरी कोठरी में जाकर सो जाता है।

अल्लाह से सुलह कर लो

आज तक जो गुनाह किए, एक आंसू, जो आपकी आंखों से निकला न हो, सिर्फ़ आंखें डुबडुबा जाएं और इस

चश्म के अन्दर ही पानी रह जाए बाहर न निकले तो भी ये इतना बड़ा समुन्दर है कि मेरी आपकी ज़िन्दगी के हज़ारों साल के काले दफ़्तर को धोखे में रख देगा क्योंकि हमारा वास्ता दुनिया के बादशाह से नहीं है, उस बादशाह से है रहम करना जिसकी शान है, बिछड़ा बेटा मां से मिला, तो इतनी खुशी मां को नहीं होती जितना कि तौबा करने पर अल्लाह को अपने बन्दे से प्यार होता है।

इधर मैं ने तौबा की, उधर सातों आसमानों पर चरागां हो गया, फ़रिश्ते कहते हैं क्या हो गया, तो अल्लाह कहते हैं: मेरा एक बन्दा मुझसे रुठा हुआ था, आज उसने मुझसे सुलह की, उसकी खुशी में चरागां है।

भाई चरागां तो इस्तेमाल करें कि लोगों को अल्लाह के साथ जोड़ा जाए, बिछड़े बच्चे को माँ-बाप से मिलने पर इतनी खुशी न होगी, आप एक बन्दे को तौबा करवा दें।, उसे मस्जिद का रास्ता दिखा दें, इतना इनशा अल्लाह तआला आप पर खुश होगा।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से पूछा कि आपके महबूब कौन हैं? फरमाया :

जो मेरे बन्दों को मेरे साथ मिलाता है, वो मेरा महबूब बन जाता है, मां क्या मोहब्बत करती है, जो अल्लाह करता है, इकलौता बेटा हो तो वो कहे अम्मी! वो कहेगी...... मेरा बेटा...... वो कहे अम्मी! वो कहेगी जी...... फिर कहेगा अम्मी! वो कहेगी हूं......फिर कहेगा अम्मी! वो कहेगी बकवास न कर...... जिसका कोई हिस्सा ऐसा नहीं जो

गुनाहों की सयाही से दाग़दार न हो, इस दामन में कोई ऐसी जगह नहीं, जिसपर नाफ़रमानी की सियाहियां न हों, इस सब के बावजूद आपने कहा या अल्लाह! तो सत्तर दफ़ा ज़वाब आएगा : "لبیک، لبیک یا عبدی"

मेरे बन्दे ! वाह मैं कब से तेरे इन्तिज़ार में बैठा हूं कि कभी तो मुझे भी पुकारेगा।

अल्लाह से तअ़ल्लुक़ जोड़ लो

मेरे भाइयो! हम ये कह रहे हैं कि अपने अल्लाह से तअ़ल्लुक़ जोड़ लो, तब्लीग़ कोई जमाअ़त नहीं...... कोई तह्रीक नहीं, ये वही है जो मैं अर्ज़ कर रहा हूं और हर जगह जहां आप हैं अल्लाह से तअल्लुक़ जोड़ें ये कोई हुकूमत नहीं कि तअ़ल्लुक़ बनाना मुश्किल हो, हज़ार बरस के गुनाहों को एक आंसू धो देता है, तौबा करें, अपने अल्लाह को मना लें उसके सामने झुक जाएं हुकूमत से आदमी गुमराह नहीं होता है, दिल से आदमी गुमराह होता है फ़क्र से कोई गुमराह नहीं होता दिल से आदमी गुमराह होता है।

اقرب الیه من حبل الورید शहे रग से ज़्यादा तुम्हारे क़रीब है واذا سالک عبادی عنی فانی قریب जब मेरे बन्दे पूछें तो उनसे कहो जब और सवाल आए हैं یسئلونک عن الیتمی तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है ये यतामा के बारे में पूछेते हैं आप قل اصلاح لهم خیر मेरे नबी सल्ल0 यूं यूं कहें یسئلونک عن الانفال، قل

الانفال لله والرسول ये आपसे माले ग़नीमत के बारे में पूछते हैं, तो मेरे नबी सल्ल0 आप उनसे ये ये कहो...... ويسئلونک عن الخمر والميسر ये आप से शराब और जूए के बारे में पूछते हैं قل तो मेरे नबी आप सल्ल0 उनसे ये कहो......मुख़्तलिफ़ सवाल आए...... क़ुरआन में उनका जवाब देने के लिए अल्लाह ने अपने नबी से फ़रमाया :

उनसे ये कहो, उनसे ये कहो, उनसे ये कहो।

अल्लाह इन्सान की शहेरग से ज़्यादा क़रीब

फिर एक सवाल आया कि हमारा रब कहां है? يا رسول الله صلى الله عليه وسلم...... بعيد ربنا فناديه ام قريب فنناجيه، हमारा रब दूर है कि ज़ोर से बुलाएं या क़रीब है कि आहिस्ता बुलाएं, इसका जवाब जो पिछले सवाल में उसके मुताबिक़ यूं होता है يسئلونک عن الله ये पूछते हैं अल्लाह के बारे में قل انه قريب उनसे कहो कि वो क़रीब है, ये होना चाहिए था।

अल्लाह ने यहां तर्ज़े कलाम बदला है واذا سالک عبادی عنی जब ये मेरे बन्दे मेरे बारे में तुझसे पूछें يسئلونک ये साथ जब सवाल होता है, तो आगे जो जवाब आरहा है वो जवाब मुमकिन है आज ये है कल बदल जाए, मैं मिसाल देता हूं, يسئلونک عن الخمر والميسر ये पूछ रहे हैं शराब और जूए के बारे में قل فيهما اثم كبير و منافع للناس आप उनसे कहें इसमें

नफ़ा भी है और नुक़सान भी है लेकिन इस मौक़े पर जवाब ये था लेकिन कुछ अर्सा बाद अल्लाह तआ़ला ने ये बदल दिया और फिर कहा कि शराब और जुवा बिलकुल हराम है, उसके क़रीब न जाओ।

और यहां इबादी है واذا سالك عبادى عنى इसका मतलब ये है कि जब जिस वक़्त, ज़माने, दौर में मेरे बारे में मेरे बन्दे सवाल करेंगे तो जवाब यही है, ये जवाब नहीं बदलेगा, कभी नहीं बदलेगा, वो क्या है, अल्लाह कहता है قل कहो कि वो क़रीब है, ये तर्ज़ नहीं इख़्तियार किया, बल्कि आगे आकर अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद जवाब दिया : وانى قريب मेरे बन्दे मैं तेरे क़रीब हूं, मैं ख़ुद तेरे क़रीब हूं, कितना क़रीब हूं? اقرب اليه من حبل الوريد। तेरी शहेरग से ज़्यादा तुझसे क़रीब हूं।

ख़ूबसूरत चेहरा कीड़ों की ग़िज़ा

स्पेन से कम्बल मंगवाए, सोने के लिए, दस बरस भी सोने न पाए थे कि हमेशा के लिए मिट्टी की चादर ओढ़ कर सो गए, बड़े सारे डिज़ाइन देख कर पलंग बनवाए, बैड बनवाए और जब उठे तो एक पल में उठ कर चले गए और जाकर मिट्टी के बिस्तर पर हमेशा के लिए सो गए, अपनी ख़्वाबगाह में बड़े डिज़ाइन की लाइनें लगवाई, बड़े ख़ूबसूरत क़ुमक़ुमों में बल्ब लगाए और चन्द दिन भी नहीं रहने पाए थे कि उठ कर अंधेरी कोठरी में जाकर सो गए, हर वक़्त अपने घर को चमकाने वाले जाकर वहशत और तन्हाई के

घर में और कपड़ों के साथ जा कर सो जाते हैं, बदन पर कोई चींटी आजाए तो आदमी उसको झाड़ देता है, मार देता है, आज उसके बदन पर करोड़ों कीड़े फिर रहे हैं, जिस चेहरे को गर्मी से बचाता है, सर्दी से बचाता है, भूख से बचाता है, थकन से बचाता है, उसी चेहरे पर आज कीड़ों का हमला है, कोई उसकी आँख खा रहा है, कोई उसकी खाल खा रहा है, कोई उसकी ज़बान नोच रहा है, कोई उसकी टांगों को लगा हुआ है।

और वो पेट कि जिसको भरने के लिए सारी ज़िन्दगी धक्के खाता रहा, वहीं पेट सबसे पहले क़ब्र में फट जाता है, और अल्लाह ने फ़रमाया, ऐ मेरे बन्दे! दुनिया को लालच की नज़र से मत देखा कर, क़ब्र में सबसे पहले तेरे वजूद को जो कीड़ा खाता है, वो तेरी आंखें ही होती हैं सबसे पहले यही शमा बुझती है और वो सबसे पहले इसी को अल्लाह निकालता है और कीड़ों को खिला देता है तो जिस इन्सान का ये हैरतनाक अन्जाम हो कि मौत उसकी शिकारी हो! आफ़ात के फंदे उसके चारों अतराफ़ क़ायम किए जा चुके हों! मुसीबतों की खाइयां क़दम क़दम पर उसके लिए खोद दी गई हों! ग़मों के बादल कभी उसके उफ़ुक़ से अटते ही न हों! खुशियों की किरन बिजली की चमक की तरह आकर गुज़र जाती हो! परेशानियों और तफ़क्कुरात के समुन्दरों में डूबा हुआ हो! और बीमारियां उसके साथ अपना किरदार अदा कर रही हों!

दोस्तों की बेवफ़ाइयां औलाद की नाफ़रमानियां उसके दिल पर नश्तर चला रही हों, क़ब्र उसको रोज़ाना पुकार रही हो, انا بيت وحشة ، انا بيت الدود، انا بيت الظلمة मैं तन्हाई का घर, मैं अंधेरों का घर, मैं कीड़े मकोड़ों का घर, मेरे पास आना है तो कोई ज़ादे राह लेकर आना, आप ज़रा इस ज़िन्दगी की गहराई में देखें कि ये कितनी बेपायदार, बेसबात, बेवफ़ा, बेक़रार ज़िन्दगी है कि जहां एक पल इन्सान को क़रार नहीं, कहीं एक पल इन्सान को ठहराओ नहीं थोड़ी ख़ुशियां देखता है, और फिर चारों तरफ़ ग़मों के बादल एक ख़ुशी को लेने के लिए लाखों के पापड़ बेलने पड़ते हैं, और वो ख़ुशी आती है और चली जाती है, भला ये भी कोई ज़िन्दगी है।

मेरे भाईयो! अगर हम ख़ुद बख़ुद बनते तो जो मर्ज़ी करते, या अपने आपको बनाते जो मर्ज़ी करते, न ख़ुद बख़ुद बने, नेचर ने बना दिया, गिलास तो ख़ुद बना नहीं और कायनात ख़ुद बन गई? लाइट तो ख़ुद चमकी नहीं और सूरज ख़ुद बख़ुद चमक गया? ام خلقوا من غير شئى बताओ तो सही ख़ुद बख़ुद बन गए हो? ام هم الخالقون. नहीं या अल्लाह तूने ही बनाया हम क्या हैं, कुछ भी नहीं हैं, अब हमारी औक़ात क्या है? हमारी हैसियत क्या है? आप मुझे कहेंगे मौलवी साहब, मैं आपको कहुंगा मेम्बर साहब, वज़ीर साहब, सदर साहब, हाजी साहब, शैख़ साहब, करनल साहब, असल मसला ये है कि अल्लाह हमें

क्या कहता है।

अकड़ कर मत चला करो

एक वाक़ेआ मुझे याद आ गया है, सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक के ज़माने में, इराक़ का गवर्नर यज़ीद बिन मोहलब बिन अबी सफ़रा था, ये बाज़ार में जा रहा था बड़ा अकड़ अकड़ कर, आगे मालिक बिन दीनार खड़े थे उन्हों ने टोका, कहा बेटा ये अकड़ अल्लाह को पसन्द नहीं है जो तू चल रहा है।

उसने कहा, बड़े मियां शायद आपने मुझे पहचाना नहीं, बड़े मियां आप नहीं जानते मैं कौन हूं? उन्हों ने कहा बेटा اعرف بذاتك منك जितना तू अपने आपको जानता है मैं उस से ज़्यादा तुम्हें जानता हूं, कहा वो कैसे? उन्हों ने कहा: ان اولك نطفة نجسا

बेटा तेरी इब्तिदा एक नापाक पानी है

وان آخرتك جيفة منطنا

तेरी इन्तिहा बदबू का एक ढेर है

و بينهما تحمل القدرة

एक गंदगी शुरू की, एक ग़िलाज़त आख़िर की, और उसके दर्मियान तो पेशाब पाख़ाने का टोकरा, मालिक बिन दीनार रह0 ने फ़रमाया: तुझे पहचाना कि नहीं।

तो उसकी आंखों में आंसू आगए, कहा शैख़ आपने मुझे सही पहचाना, लोगों ने मुझे नहीं पहचाना। तुम तो

अल्लाह के महबूब सल्ल0 की ज़िन्दगी को अपनी ज़ीनत बनाओ।

अपनी आँखों को हया का काजल लगाओ।
अपने कानों को कुरआन के नग़मों से आशना करो
अपने चेहरे को हुज़ूर सल्ल0 की सुन्नत से सजाओ
अपने लिबास को हुज़ूर सल्ल0 वाला लिबास बनाओ
अपने पाँव में अल्लाह की मोहब्बत की बेड़ियां डालो
अपने हाथों में उसके इश्क़ की हथकड़ियां डालो
अपने गले में उसकी इताअ़त का गलोबन्द डालो
अपने माथों पे उसके सजदों का झूमर सजाओ
फिर देखो अल्लाह को कैसे प्यारे लगोगे।

अल्लाह के रसूल का दामन थाम लो

क्या औ़रतों की तरह लड़के भी मेकअप करते फिर रहे हैं, चूड़ियां पहन कर बैठ जाओ घर अगर यही करना है, और अगर इस इन्सानियत को तबाही के ग़ार से निकालना है तो अल्लाह के वास्ते तौबा करो, अपनी ज़िन्दगी की शाहराह खुद तय करो

हम खुद तराशे हैं मनाज़िल के संग मेल
हम वो नहीं हैं जिनको ज़माना बना गया

हम आपको अपनी तरफ़ मुतवज्जेह कर रहे हैं कि हमारे मोतक़िद हो जाओ, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 का दामन थामो, हम भी उसकी तरफ़ भाग रहे हैं। आप भी

भागो सीखने के लिए निकलो, घर बैठे मिलने का सौदा होता तो हम कभी घर नहीं छोड़ते, ये घर बैठे मिलने का सौदा नहीं है।

"बिस्यार सफ़र बायद ता पोख़्ता शवद ख़ामे"

हज़ारों मंज़िलें तय करना पड़ती हैं, तब जाकर इन्सान किसी किनारे लगता है और पहुंचता है, तो आपमें तो अभी कलियां महक सकती हैं, फूल खिल सकते हैं, हमने तो आज तक कांटे ही चुने, और पता नहीं आगे हमारे मुक़द्दर में बहार देखना है कि नहीं तुम तो तौबा करो कि अगली नस्लें तो बहार देख सकें, ये ज़मीन ज़रूर पाक होगी।

सबसे ज़्यादा डराने वाली क़ुरआनी आयात

मैं ने एक आयत आपके सामने पढ़ी है ख़ुतबे में जिसके बारे में उलमा फ़रमाते है। ये क़ुरआन की सबसे ख़ौफ़नाक आयत है।

☆ اخوَفُ ايةٍ فى القران

कुरआन की सबसे ख़ौफ़नाक आयात

☆ اخوَفُ ايةٍ فى القران

कुरआन की सबसे ज़्यादा डराने वाली आयत

☆ اخوَفُ ايةٍ فى القران

कुरआन की सबसे ज़्यादा लरज़ा देने वाली आयत

☆ اخوَفُ ايةٍ فى القران

कुरआन की सबसे ज़्यादा हैबत वाली आयत

☆ اخوف اٰیۃٍ فی القراٰن

कुरआन की सबसे ज्यादा फड़फडाने वाली आयत, और लरज़ा देने वाली आयत और डराने वाली आयत और हैबत तारी कर देने वाली आयत और पैरों तले ज़मीन निकाल देने वाली आयत है, कौनसी?

"فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ"

आक़िल संभल के चल, देखने वाला तुझसे ग़ाफ़िल नहीं, बनाने वाला तुझसे ग़ाफ़िल नहीं।

उसने पुकार पुकार के एलान किया है। एक राई के दाने के बराबर भी तूने गुनाह किया तो याद रख उसकी सज़ा के लिए तय्यार हो जा और एक राई के दाने के बराबर भी तूने नेकी की तो उसकी जज़ा के लिए तय्यार हो जा, तेरा रब ज़ालिम नहीं है,

"وَاِنْ تَکُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ"

एक राई के दाने के बराबर नेकी कर ली, बुराई कर ली,, कहां?...... فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ...... किसी पहाड़ की ग़ार में, ...اَوْ فِى السَّمٰوٰتِ...... कहां? आसमान की वुस्अ़तों में गुम हो के, ...اَوْ فِى الْاَرْضِ......कहां? ज़मीन के ग़ारों में अंधेरों में छुप के क्या होगा? ......يَاتِ بِهَا اللّٰه...... एक दिन आएगा अल्लाह तुझे सामने करके दिखाएगा।

चंगेज़ ख़ान का मन्सूबा

चंगेज़ ख़ान ने कहा था कि मेरी औलाद बड़े बड़े

मुल्कों पर हुकूमत करेगी, बड़े बड़े महलों में रात गुजारेगी और उन्हें याद भी न होगा कि कोइ बूढ़ा उनके लिए अपना ख़ून दे कर हुकूमत बना गया।

मौत एक ऐसी अटल हकीक़त है कि हर नशे को निकाल देती है ये दुंनिया खेल तमाशा है। माल की दौड़ है कितना कमाना है। कब तक कमाना है। कोई हद है कहीं जाकर रुकना है कहीं तो रुको कि आख़िरत की कुछ सोच सको। कहीं तो रुको कि आगे की भी कुछ सोच सको रोज़ाना नया प्रोगराम, नये मन्सूबे नये से नया डिजाइन हैं।

एक वो मन्सूबा है जो हमारे साथ साथ चल रहा है जो हमें तेज़ी से मौत की तरफ़ ढकेल रहा है इधर ऊंची ऊंची इमारतें बन रही हैं और उधर गहरे गढ़े की तरफ़ हम लुढ़कते चले जा रहे हैं, इधर बड़े ख़ूबसूरत लिबास तय्यार किए जा रहे हैं और उधर कफ़न का सादा लट्ठा भी बाज़ार में आ रहा है। इधर बड़े आली शान और उम्दा खाने तय्यार किए ज़ा रहे हैं और उधर क़ब्र के कीड़े भी मुन्तज़िर हैं। शैख़ साहब की पली हुई लाशा को खाने के लिए।

आप कायनात में गौर क्यों नहीं करते, ये कितनी इब्रत की ज़िन्दगी है एक दम आंख खुलती है कि ये क्यों मर गया? ये कहां जा रहा है? इसको इतने ख़ूबसूरत घर से क्यों ले जा रहे हैं? मौत क्या है?

तो फिर पता चला कि ये जहान तो छोड़ कर लोग चले जाते हैं, तो क्या आगे कोई ज़िन्दगी है? या बस यही

कुछ है, मर गया, कुछ दिन हम रोए और फिर सबने भुला दिया। आप देखते नहीं कि जो लोग कहते हैं कि इसके बग़ैर क्या होगा, फिर देखते हैं कि उसी के बग़ैर सब कुछ हो रहा है। कहते हैं उसके बग़ैर हमारी ज़िन्दगी अब तारीक हो गई। देखते ही देखते उसी घर में रात को चरागां हो रहा होता है जैसे यहां कोई मरा ही नहीं था।

तो यहां आकर ज़ेहन ख़ामोश हो जाता है कि आगे क्या है? अक़्ल तो ख़ामोश हो जाती है लेकिन अगर इन्सान की अक़्ल सलीम हो, मैं कहता हूं मुसलमान न भी हो सिर्फ़ अक़्ल हो और फ़ितरत सही हो तो वो भी इस दुनिया से जी हटा लेता है और कहता है दफ़ा करो इसे छोड़ कर जाना ही है तो इसपर जान क्या लगाएं।

जिस वजूद को मिट्टी ने खाना है उसको घण्टों सजाना भी कोई काम है।

जिस वजूद के लिए ज़वाल और फ़ना तय है जिस हुस्न को बुढ़ापे ने खाना है उसके पीछे लगे रहना भी ज़िन्दगी है।

हज़रत सअद रज़ि० की मौत पर उनका ऐज़ाज़

हज़रत साअद बिन मआज़ रज़ि० का इन्तिक़ाल हुआ तो जिब्रील अलैहि० ने आकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल० आज आपके सहाबा में से कौन फ़ौत हुआ है? आप सल्ल० ने फ़रमायाः क्यों? क्या बात है? जब ईमान वाले की रूह क़ब्ज़ होती है तो सीधी अर्श के नीचे जा कर सजदा

करती है।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने कहाः अल्लाह का अर्श झूम रहा है कि कोई आ रहा है استبشر بموته اهل السماء...... ...... सातों आसमान के फ़रिशते खुशियां मना रहे हैं, कोई आ रहा है, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः हाय मेरा साद गया......आपको पता चल गया क्योंकि वो ज़ख़्मी थे।

तो आप सल्ल0 एक दम तेज़ी से मस्जिद से निकले और आप सल्ल0 इतना तेज़ चले कि सहाबा केराम पीछे दोड़ रहे थे और आप सल्ल0 चल रहे थे और उनकी जूतियों के तस्मे टूटने लगे, उन्हों ने अर्ज़ कियाः

या रसूलुल्लाह सल्ल0 ज़रा आहिस्ता चलें, आपने हमें थका दिया। आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

जलदी चलो! क्योंकि मुझे डर है कि हमारे पहुंचने से पहले कहीं साद को फ़रिश्ते गुस्ल न दे दें और हम उन्हें गुस्ल देने से महरूम रह जाएं।

इसलिए जलदी चलो, जलदी चलो, भागे भागे पहुंचे, तो देखा कि हज़रत साद रज़ि0 की मय्यत कमरे में पड़ी है और कमरा ख़ाली है। सहाबा केराम रज़ि0 बाहर खड़े हो गए, आप अन्दर गए और अन्दर कैसे गए, जेसे अगर सामने से कोई दूसरा आदमी मेरी तरफ़ आऐ तो सीधी चाल तो न चल सकेगा, कोई क़दम इधर रखेगा और कोई उधर, क्योंकि रास्ते में लोग बैठे हुए हैं।

सहाबा केराम ने देखा कि हुज़ूर सल्ल0 कभी इधर

क़दम रखते और कभी उधर क़दम रखते हैं, कभी पांव पूरा रखते हैं कभी आधा रखते हैं, फिर साद रज़ि0 के सरहाने सिकुड़ कर बैठ गए, सहाबा ने पूछा, या रसूलुल्लाह सल्ल0 आपने ऐसा क्यों किया? नज़र तो कोई आ नहीं रहा, आप सल्ल0 ने फ़रमायाः

कमरा फ़रिश्तों से इस तरह भरा पड़ा है कि पांव रखने की जगह भी नहीं है और अभी एक फ़रिश्ते ने अपने पर को सिकोड़ा और मेरे लिए बैठने की जगह बनाई।

हज़रत सअद का जनाज़ा

और हज़रत साद रज़ि0 लमबे चौड़े थे, लहीम शहीम थे लेकिन जब आपका जनाज़ा उठाया गया तो उसका वज़न भी न था, ऐसे लग रहा था कि ऊपर मय्यत ही नहीं है, तो मुनाफ़िक़ बकने लगेः देखा नां, देखा नां ये भी मुनाफ़िक़ था इसलिए इसका भी वज़न ही नहीं रहा।

आप सल्ल0 तक ये बात पहुंची तो आपने फ़रमायाः कि उनकी ज़बानें बन्द करो और बताओ कि सअ़द को तुम लोगों ने नहीं बल्कि फ़रिश्तों ने कन्धा दिया हुआ है तुम तो ख़ाली चल रहे हो, कन्धे तो नीचे फ़रिश्तों के हैं।

जैसे लोगों ने मय्यत को कन्धा दिया होता है और बाज़ों ने ख़ाली नीचे हाथ रखा हुआ होता है अज्र व सवाब के लिए मय्यत को कन्धा देना सवाब का काम है लेकिन जो मेरे जैसे कमज़ोर लोग नहीं उठा सकते वो ख़ाली हाथ नीचे रख देते हैं। तो आप सल्ल0 ने फ़रमायाः आपके तो

ख़ाली हाथ हैं कन्धे तो फ़रिशतों के हैं, जिन पर जनाज़ा जा रहा है।

आशिक़ का जनाज़ा है ज़रा धूम से निकले
मह्बूब की गलियों से ज़रा घूम के निकले

हबीब रह0 का ख़ूबसूरत लड़की की तरफ़ न देखना

हबीब रह0 इब्ने उमैर ताबई हैं, सहाबा केराम रज़ि0 के शागिर्द बड़े ख़ूबसूरत, क़ैद हो गए, कुल दस आदमी थे, नौ उन्होंने क़त्ल कर दिए उनको पकड़ लिया, रोमन सरदार ने कहा मैं ग़ुलाम बनाउंगा, क़ैद में लेकर कहने लगा :

अगर तू ईसाई हो जाए, तो मैं तुझे अपनी बेटी दे दूंगा, तुझे अपनी रियासत में हिस्सा भी दूंगा।

उन्हों ने फ़रमायाः तू अगर सारा जहान भी दे दे तो भी ये नहीं हो सकता।

कुफ़्र तो बेहया होता ही है, हया तो सरासर इस्लाम में है उसने अपनी बेटी से कहा कि इससे बदकारी करो, जब ये इस रुख़ पर आएगा तो इस्लाम भी छोड़ जाएगा, रूम की लड़की थी, इधर रूम का हुस्न उधर अ़रब की जवानी, आग भी तेज़ है और क़ुव्वत भी जवान है, दो ही हैं तीसरा कोई भी नहीं।

अब यहां सारी रुकावटें ख़त्म हैं और वो औ़रत दावत दे रही है और ये नौजवान अपनी नज़र झुकाने की लज्ज़त चखे हुए है। इसे पाकदामनी की लज्ज़त का पता है, लिहाज़ा उसकी नज़र उठने का नाम ही नहीं लेती, उसने

सारे जतन कर मारे, अपने हुस्न का हर तीर आज़माया, अपने मक्र का हर जाल फेंका, लेकिन पाकदामनी की तलवार ने हर हर जाल की हर हर तार को तार तार कर दिया और हर तीर को बेकार कर दिया।

आख़िर तीन दिन के बाद उसने हथियार डाल दिए, कहने लगी, "ماذا يمنعک منی" अल्लाह के बन्दे! ये तो बता तुझे रोकता कौन है, आज तीसरा दिन है, तूने मुझे नज़र उठा कर नहीं देखा, रोकने वाला कौन है, उसने कहाः

मुझे रोकने वाला वो है

لا تاخذه سنة ولا نوم जो न सोता है, न ऊंघता है।

जो मुझसे ग़ाफ़िल नहीं, मैं उससे ग़ाफ़िल हूं, वो मेरा रब है, जो अर्श पर बैठा मुझे देख रहा है, कि मेरी मोहब्बत ग़ालिब आती है या शहवत ग़ालिब आती है, मुझे आगे करता है या शैतान को आगे करता है। ऐ लड़की मुझे मेरे रब से हया आती है, इसलिए मैं ने अपनी हालत को रोक रखा है, वो बाहर निकल कर अपने बाप से कहने लगी।

"الى اَيْنَ اَرْسَلْتَنِىْ اِلىٰ حَدِيْدٍ او حَجَرٍ لَا يَاكُلُ لا يَنْظُرُ"

"आपने मुझे किस पत्थर के पास भेजा है किस लोहे के पास भेजा है जो देखता है न खाता है मैं कहां से गुमराह करूं"।

तेरे रोने ने फ़रिश्तों को भी रुला दिया

एक सहाबी तहज्जुद की नमाज़ में रो रहे हैं कि ऐ अल्लाह जहन्नम की आग से बचा आप सल्ल० ने आकर

देखा और फ़रमाया अरे भाई तूने क्या कर दिया तेरे रोने ने फरिश्तों को भी रुला दिया है ऐसा दर्द व ग़म उनके अन्दर उतर गया था।

मेरे भाइयो! क्या करें कभी तो बैठ के इतना रोना आता है कि हम कहां से कहां चले गए, एक लड़के की दुआ पर आसमान के फ़रिशते उतरते थे, एक नौजवान सहाबी अपने घर में नमाज़ पढ़ रहे थे, दोज़ख़ की आयत पढ़कर चीख़ निकली आप सल्ल0 गली में से गुज़र रहे थे, आपने रोने की आवाज़ को सुना, मस्जिद में वो सहाबी जब नमाज़ पढ़ने के लिए आए तो आपने फ़रमाया, अरे अल्लाह के बन्दे, आज तेरे रोने ने आसमान के बेशुमार फ़रिशतों को रुला दिया, ऐसे जवान थे, जिनके रोने पर फ़रिश्ते रो दिया करते थे।

क़ब्र में A.C

साहेवाल में एक फ़ैमली है बड़े मालदार और नेक लोग हैं एक एक्सिडेन्ट में उनके दो बेटे और पोते मौक़े पर ही हलाक हो गए, वो कहने लगा कि मेरा जी चाहता है कि क़ब्रों में एयर कन्डिशन लगवाऊँ कि उन्हों ने तो कभी ज़िन्दगी भर पसीना नहीं देखा, ज़िन्दगी भर कभी सूरज की तपिश और धूप को नहीं बर्दाशत किया, तो क़ब्र में उनका क्या हाल होगा, कहने लगा मैं ऐसा पागल हो गया कि मेरे जी में आया कि उनकी क़बरों में एयर कन्डिशन चलवा दूं। फिर मुझे ख़्याल आया कि उनके किस काम? क्योंकि मौत

तो सारा क़िस्सा ख़त्म कर के रख देती है।

जब मौत आएगी तो आंख खुल जाएगी और ये दुनिया एक ख़्वाब है, एक आदमी ख़्वाब देख रहा है, मैं बड़े ख़ूबसूरत घर में बैठा हूं। एक आदमी ख़्वाब देख रहा है, मैं झोंपड़े में बैठा हूं, एक आदमी ख़्वाब देख रहा है मैं हल चला रहा हूं, एक आदमी ख़्वाब देख रहा है मैं रेढ़ी चला रहा हूं, मौत दोनों को क़ब्र के गढ़े में पहुंचा कर क़ब्र की मिट्टी दोनों के लिए बराबर कर देती है, घर में रहने वाले के लिए टाइलें नहीं लगाई जाती और झोंपड़े में रहने वाले के लिए वही सादा मिट्टी नहीं होती, ये भी उसी मिट्टी में जाता है और वो भी उसी मिट्टी में जाता है।

शाह व फ़क़ीर एक जगह

क़तर में हमारी जमाअ़त गई हुई थी, एयर पोर्ट पर से वापस आ रहे थे तो रास्ते में एक महल देखा, बहुत लम्बा, चौड़ा मैं ने समझा शायद शाही ख़ानदान में से किसी का है, तो मैं ने पूछा ये किस अमीर का है, हमारे साथी बताने लगे कि ये शाही ख़ानदान का तो नहीं, लेकिन क़तर का सबसे बड़ा ताजिर था।

क़तर में सबसे ज़्यादा मालदार और सबसे बड़ा ताजिर था, और ये उसका महल है, बनाने के बाद पांच साल रहने की नौबत आई, फिर मर गया और उसकी जहां क़ब्र है, वहां क़तर का सबसे फ़क़ीर बद्दू दफ़न है, एक तरफ़ क़तर का सबसे अमीर तरीन और उसके पहलू में क़तर का ग़रीब

तरीन बद्दू, जो सारा दिन भीख मांग के चलता था, उन दोनों की क़ब्र साथ साथ है, कि क़बर नें दोनों को बराबर कर दिया गया है।

देखो मेरा बन्दा ऐसा होता है

एक नौजवान ने दोज़ख़ का ज़िक्र सुना और कपड़े उतारे और जा कर रेत पर लेट गया और तड़पने लगा और कहने लगाः

ऐ नफ़्स! दोज़ख़ की आग...... ये रेत की आग बर्दाशत नहीं दोज़ख की आग कैसे बर्दाशत करेगा? रात को मुर्दार बन कर सारी रात सोता है, और दिन को बेकार फिरता है, तेरा क्या बनेगा?

हुज़ूर अकरम सल्ल0 ये सारा मन्ज़र देख रहे थे, फरमाया आ तुझे खुशख़बरी सुनाऊँः

तेरे लिए आसमान के सारे दरवाज़े खोल दिए गए और अल्लाह खुश हो रहा है और फ़रिशतों से कहता है कि देखो मेरा बन्दा ऐसा होता है।

अल्लाह की अपने बन्दों से मोहब्बत

ارجعی الیٰ ربک راضیة مرضیة मुझे इस क़िस्से में ये आयत समझ में आई कि इससे ज़्यादा लामहदूद मोहब्बत और शफ़क़त के साथ अल्लाह कहेगा :

आजा तू बड़ा थक के आया है, आ जा! तू बड़े धक्के खा के आया है, आ जा तू बड़ी मुसीबतें सह के आया है, आ जा तू बड़ी जुदाइयां सह के आया है, आ जा तू बड़ी

परेशानियों को देख के आया है।

मेरी आग़ोश में, मेरी रहमत की चादर पर सो जा

मेरी रहमत की सीज पर सो जा,मेरी जन्नत में आ जा

فادخلی فی عبادی وادخلی جنتی आ जा, आ जा

तेरे ही लिए जन्नत सजाई है, आज तक उसे सजाया, उसे महकाया, उसे बनाया उसे संवारा कि तू आएगा, उसमें क़दम रखेगा, मुझसे हम कलाम होगा, पर्दे उठ जाएंगे, फ़रिश्ते दाखिल होंगे, और आ कर कहेंगे سلام علیکم، سلام علیکم، بما صبرتم فنعم عقبی الدار.

क्या आपने जहन्नम से हिफ़ाज़त की तय्यारी कर ली है?

मेरे भाइयो! अल्लाह की क़सम नबियों की रातों की नींद उठती है, दिन का क़रार उठता है इसलिए नहीं कि वो रोटी से परेशान होते हैं, इसलिए कि वो जन्नत और दोज़ख़ को देखते हैं, फिर इन्सानियत की नाफ़रमानी को देखते हैं फिर वो बेक़रार हो जाते है कि उनको कैसे अज़ाब से बचाऊँ, ان عذابها کان غراما अज़ाब कोई छोटा-मोटा अज़ाब नहीं है वो भड़कती आग है, खाल को उतार देने वाली आग है, فانذرتکم نارا تلظی अल्लाह कहता है मैं तुम्हें उस आग से डराता हूं जो भड़कने वाली आग है।

मैं तुमको उस आग से डराता हूं।

سیصلی نارا ذات لهب वो अंगारों वाली वो

भड़कने वाली आग है, فی عمد ممددة वो बड़े बड़े सुतूनों में भरी हुई आग है

لهم من جهنم مهاد उनके बिस्तर अंगारों के हैं, उनकी चादरें अंगारों की हैं, فی عمد ممددة उनके सतून भी आग के हैं, يسقى من ماء صديد उनका पानी पीप है जो पीने को दिया जाएगा जो ज़ख़्मों से पीप निकलेगी उसको जमा करके गरम किया जाएगा फिर वो पीने को दिया जाएगा फ़रिश्ते कहेंगे पियो।

जहन्नम का खौलता पानी

يتجرعه ولا يكاد يسيغه पीना चाहेगा पी नहीं सकेगा ......و ياتيه الموت من كل مكان......चारो तरफ से मौत आती दीखाई देगी ......وما هو بعيد......लेकिन वे मरेगा नहीं मौत पुकारेगी, मौत आएगी नहीं, पीने को पानी है तो ऐसा जबरदस्त कि जिन प्यालों में वो पानी है मुंह से करीब लाएगा तो प्याले की तपिश और पानी की तपिश से होंठ सूज कर नीचे वाला होंट लटक कर पावँ तक चला जाएगा और ऊपर वाला होंठ सूज कर सर के ऊपर चला जाएगा न पानी पी सकेगा, न उगल सकेगा, न निगल सकेगा।

फिर फ़रिश्ते मारेंगे, पियो पियो, पीएगा तो आंतें कट जाएगी, पाखाने के रौस्ते से बाहर निक़लेगी, फ़रिश्ते उठा कर सारी आतों को फिर उसके मुंह में ठूस कर के नीचे भर

कर फिट कर देगें उसकी खाल ब्यालीस हाथ मोटी खाल होगी और उसके सर के ऊपर जब पानी डालेंगे ذق...... ......انک انت العزیز الکریم की तफ़्सीर में लिखा हुआ है, फ़रिश्ते पकड़ेगें काफ़िर को, और उसके सर के ऊपर रखेंगे कील और फिर मारेंगे हथौड़ा उसकी खोपड़ी पर और खोपड़ी फट जाएगी और उसके ऊपर डालेंगे पानी, अन्दर जाएगा तो आतों को काट के बाहर फेंक देगा और उसके ऊपर गिरेगा तो ब्यालिस हाथ मोटी खाल उधड़ के ज़मीन पर गिर जाएगी। अल्लाह कहेगा ذق انک انت العزیز الکریم ...... चखो इसको तू दुनिया में बड़ा मुतकब्बिर था। अब किसी आदमी को सारा जहाँ मिल गया और मर के दोज़ख़ में चला गया तो क्या देखा उसने।

एक इब्रतनाक वाक़ेआ

नजरान में एक नौजवान था, बड़ा ख़ूबसूरत, लम्बा चौड़ा क़द, मस्जिद में आया, कोई बुज़ुर्ग बेठे थे, उन्हों ने देखा और देखते रहे, कहने लगा क्या देखते हो?

कहने लगेः तुम्हारी जवानी को देखता हूं कैसी जवानी है। कहने लगाः मेरी जवानी पे तो अल्लाह भी हैरान होता होगा, ये बोल बोलना था कि वो छोटा होना शुरू हो गया घटते घटते एक बालिश्त रह गया, छ फुट का नौजवान छ इन्च का हो गया घर वाले आए और उसे हाथों पे ऐसे उठा के ले आए जैसे मिट्टी को उठा के लाते हैं अल्लाह की ग़ैरत को जोश आया कि बदबख़्त मेरी दी हुई जवानी पे कहता है

कि मैं हैरान होता हूंगा।

फ़रिश्तों की जसामत का अन्दाज़ा

मेरी मख़्लूक़ ऐसी है कि रिवायात में आता है, कि अगर मीकाईल अ़लैहिस्सलाम के सर पर सात समुन्दरों का पानी डाला जाए तो एक क़तरा ज़मीन पर न गिरेगा तो हमारी जवानी क्या हैसियत रखती है? इतने बड़े फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला ने पैदा कर दिए :

و يحمل عرش ربك فوقهم يومئذ ثمانية

अ़र्श के थामने वाले आठ फ़रिश्ते हैं, कान से ले कर यहां तक (हाथ से इशारा किया) फ़ासला सात सौ बर्स का है, अल्लाह के ख़ज़ानों में क्या कमी है?

वुसअ़ते रहमते रब्बानी

मेरे भाइयो और बहनो एक तो आज तक अल्लाह की जो नाफ़रमानियां हुई हैं उससे तौबा करे, क्योंकि तौबा वो अ़मल है जो लाखों साल के गुनाहों को भी धो कर साफ़ कर देता है। सारे मर्द और सारी औ़रतें तौबा करें इतनी तो निय्यत सब ही कर लें।

क्या पता कब बुलावा आ जाए तौबा तो की हुई हो और अल्लाह ऐसा करीम है कि वो कहता है मेरा बन्दा तू इतने गुनाह कर कि आसमान की छत तक पहुंचा दे क्या कोई इतने गुनाह कर सकता है? सारी दुनिया, सारे इन्सान, सारे शैतान मिल कर गुनाह करें तो भी आसमान तक नहीं जा सकते लेकिन अल्लाह हमें कह रहा है कि अगर कोई

औरत कोई मर्द अगर इतने गुनाह भी करे कि आसमान तक चले जाएं और फिर एक बोल बोल दे कि या अल्लाह माफ़ करदे तो मैं वहीं सारे गुनाह माफ़ कर दूंगा। जाओ माफ़ कर दिया।

मां भी इतनी जल्दी माफ़ नहीं करेगी, वो ताने देगी कि तूने मुझे बहुत सताया है मैं नहीं माफ़ करती, कल ही हमारे भाई ये बता रहे थे कि मेरे वालिद मुझ पर नाराज़ हुए और दो साल तक मुझे माफ़ नहीं किया। और अल्लाह कितना मेहरबान है इधर हमने कहाः या अल्लाह! माफ़ कर दे वो कहता है जाओ मैं ने माफ़ कर दिया, मैं कब से इन्तिज़ार कर रहा था कि तू एक दफ़ा कह तो दे, जा मैं ने माफ़ कर दिया, तो ये सारा मजमा अल्लाह की बारगाह में तौबा करे कि तौबा पर अल्लाह सब गुनाह धो देता है और कहता है कि मुझे परवाह भी नहीं होती। अल्लाह से कोई पूछ सकता है कि तूने क्यों माफ़ कर दिया, सबसे तौबा करवाएं।

दोज़ख़ की आग का बिस्तर

فينبى به الى النار

जहन्नम के दहकते हुए अंगारे उसकी सीट बन जाएंगे।

لهم من جهنم مهاد

दोज़ख़ का बिस्तर दोज़ख़ की चारपाई।

و من فوقهم غواش

दोज़ख़ का बिस्तर आग के कमरे आग के बिस्तर

سموم و حميم खौलते हुए पानी

لا يسمن ولا يغني من جوع
कांटेदार खाने जो न चैन हो ने आराम हो।

सबसे बड़ा मुतकब्बिर! बेनमाज़ी

उलमा ने कहा है कि काफ़िर के बाद सबसे बड़ा मुतकब्बिर वो शख़्स है जो अल्लाह की आवाज़ सुने और उठ के नमाज़ पढ़ने न जाए कि उसने अल्लाह की आवाज़ को सुनकर ठुकरा दिया, मेरा नौकर यहां बैठा हुआ हो और फिर मैं दोबारा उसको बुलाऊँ वो फिर मुझे देखता रहे, मैं पांच दफ़ा बुलाने का ज़र्फ़ ही नहीं रखता कि पाँच दफ़ा में उसका इन्कार देखता रहूं, न हूं करे, न हां करे, दूसरी तीसरी दफ़ा ही जूता उतर जाएगा, उसके सर पर पड़ना शुरू हो जाएगा।

पचास साल से मेरा अल्लाह पुकार रहा है, आजा حی علی الصلوٰة नमाज़ पढ़ ले حی علی الصلوٰة दो है एक दफ़ा अल्लाह की तरफ़ से पुकार है एक दफ़ा उसके नबी सल्ल0 की तरफ़ से पुकार है, आ जाओ ना, तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल दोनों बुला रहे हैं और कोई उठ के हिल के न दे, तो ये कैसे ईमान वाले हैं, ये कैसे कलमा वाले हैं कि जिनको अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 की सदा ने तो कुर्सी से न उठाया, कोई इधर वज़ीरे आला आ गया तो सब धड़ धड़ शुरू हो गई, एक दूसरे पर गिरते चले जा रहे हैं, क़रीब खड़े हो कर फ़ोटो खिंचवाने के चक्कर में पड़े हुए हैं।

चख दोज़ख का अ़जाब!

बड़े मज़े किए थे दुनिया में

हज़रत सिद्दीक़े अकबर का इरशाद है, لا خيـــر فــى خيـــر تـــاتهـم الـنـار वो भलाई कोई भलाई नहीं, जिसको दोज़ख़ मिल जाए जब देखेंगे अ़ज़ाब ने घेरा डाल दिया है तो फिर कहेंगे मालिक (फरिश्ता दारोगा) से या मालिक अपने रब से कह दो हमें मौत दे दें वो कहेंगे انـكم ماكثون मौत नहीं आ सकती, अब तो यहीं रहना पड़ेगा, कहेंगे अच्छा يـخـفف عـنـا يوماً من العذاب ऐ फ़रिश्तो! अपने रब से कहो कि थोड़ा अ़ज़ाब तो कम करदे तो जवाब आएगा اولم تاتيكم رسلكم بالبينت तुम्हें किसी बताने वाले ने बताया नहीं था कि क्या होने वाला है? कहेगा बताया तो था फिर तुमने क्या किया था ما نزل الله من شئى ان انتم الا فـى ضلال كبيـر हमने कहा सब झूठ है कोई नहीं जो होगा देखा जाएगा।

उन्हों ने कहा अब चख़ो فـلـن نزيدكم الا عذابا कि अ़ज़ाब बढ़ता जाएगा ان جهـنـم كانت مرصادا जहन्नम जहन्नमी का इन्तिज़ार कर रही है للطغين सरकशों के लिए مابا वो ठिकाना है لبثين فيها احقابا उसमें रहना हमेशा है لا يـذوقـون فيهـا بردا ولا شرابا न पानी न ठण्डक الا حـمـيـمـاً و غـسـاقـا खौलता हुआ पानी, कांटेदार झाड़ियां جزاء وفاقا पूरा पूरा बदला انهم كانو لا يرجون حسابا

ये हिसाब का यक़ीन नहीं रखते थे وكذبوا بايتنا كذابا उन्हों ने मेरी निशानियों को झुठलाया وكل شئ احصينه كتابا मैं ने एक एक चीज़ को लिखा।

فذوقوا आज चखो فلن نزيدكم الا عذابا तुम्हारा अज़ाब बढ़ता जाएगा, बढ़ता जाएगा, जहन्नम न मुसलमानों के लिए है जो तौबा किए बग़ैर मर गए, गुनाह कबीरा करते हुए, तौबा किए बग़ैर मर गए, जहन्नम उनके लिए है, नसारा के लिए है, यहूदियों के लिए है سعير मजूसियों के लिए है سقر सितारों के पुजारियों के लिए है جحيم जहीम मुश्रिकीन के लिए है هاويه मुनाफ़िक़ीन के लिए है। और हर नीचे वाला दर्जा ऊपर वाले दर्जे से ज़्यादा शदीद है, ज़्यादा सख़्त है, ज़्यादा ख़ौफ़नाक है, ज़्यादा हैबतनाक है, ज़हन्नम में से किसी आदमी को निकाल कर एक लाख इन्सानों के दर्मियान बैठाया जाए और वो सांस ले तो उसकी सांस की हरारत से एक लाख आदमी जल कर ख़त्म हो जाएंगे।

तौबा करो, तौबा कराओ

मेरे भाइयो! इससे पहले कि चक्की चल जाए, कोड़े बरस जाएं, बिजली कूंद जाए, आसमान क़रीब आजाए, तारे टूट जाएं, ज़मीन फट जाए, पहाड़ कपकपा जाएं और थर थरा जाएं, क़ब्ल इसके कि ये सब हो अल्लाह का वास्ता दे कर हाथ जोड़ कर कहता हूं तौबा कर लो, तौबा कर लो, तौबा कर लो, अल्लाह के दामन के सिवा कोई जाए पनाह

नहीं, अल्लाह की रहमत के सिवा कोई जाए पनाह नहीं,

मैं उस अल्लाह के सदक़े जाऊँ जो कहता है कि अगर पूरी धरती गुनाहों से भर दो, फिर एक दफ़ा कह दो या अल्लाह मेरी तौबा, अल्लाह फ़रमाते हैं कि मैं सारे ही माफ़ कर दूंगा। सारी धरती गंदी कर दे फिर कह दे या अल्लाह मेरी तौबा, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं जाओ माफ़ कर दिया। पहाड़ दरख़्त, जंगल, दरया, समुन्दर, बहर व बर ये सब बहुत छोटे हैं अगर आसमान तक गुनाहों को पहुंचा दिया फिर एक दफ़ा कहा या अल्लाह ग़लती हो गई माफ़ कर दे। मेरा अल्लाह कहता है जाओ माफ़ कर दिया।

जुनैद जमशेद की तौबा

तो मेरे भाइयो! तौबा करो, और अल्लाह की राहों में निकलो, इससे पहले कि निकाल दिए जाएं, और ख़ुद भी तौबा करो, और लोगों से भी हाथ जोड़ कर तौबा कराओ, जुनैद जमशेद ख़ानेवाल में मेरे साथ था वो बयान में मेरे साथ बैठा था, तो मैं अकसर कहता हूं कि अल्लाह का फ़ज़ल है ये गाने वाला तौबा कर गया।

अब मेरे अज़ीज़ो! तुम सुनने वाले भी तौबा कर दो, गाना गाने वाले ने गिटार तोड़ दिया, अब तुम भी कैसिटें तोड़ दो, बस करो कब तक अल्लाह को नाराज़ करना चाहते हो, कब तक अपनी रूहों को मुज़तरब परेशान और उन्हें ज़ख़्मी करना चाहते हो। ये मौसीक़ी ज़िना का मन्तर है, जिस देश में मौसीक़ी होगी उस देश में ज़िना होगा।

मग़फ़िरत के ख़ज़ाने

मेरे भाइयो! अपने अल्लाह से अपना तअ़ल्लुक़ बनाना है, ये لا الـه الا الله का तक़ाज़ा है, वो ऐसा करीम है रब है, ऐसा मेहरबान रब है कि हज़ारों साल के गुनाह हों, उसके गुनाहों से समुन्दर जल जाए, उसके गुनाहों से पहाड़ राख हो जाए, आसमान की छत तक उसके गुनाह चले जाएं तो भी अल्लाह तआ़ला कहता है: डरना नहीं, बस इधर तौबा और उधर मेरी माफ़ी, ये क्यों है?

इसलिए कि अल्लाह तआ़ला لا تـضـره الذنوب، ولا تـنـفـعـه المغفرة वो वो ज़ात है माफ़ करने से घटता नहीं और गुनाह उसको नुक़सान नहीं पहुंचाते और वो मुन्फ़इल नहीं, असर पज़ीर नहीं, असर लेने वाली ज़ात नहीं है, असर से पाक ज़ात है, सारी ज़मीन गुनाहों से भर दी, फिर कहा, ऐ अल्लाह! माफ़ कर दे, उस मालिक पर कुर्बान जाएं कि वो पूछता भी नहीं दोबारा तो नहीं करोगे? कहता है: जाओ غـفـرت لك و لا ابـالـى जाओ माफ़ किया मुझे कोई परवाह नहीं। तौबा फिर टूट गई, अब क्या करें, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया फिर आजाओ, ان استـقـالنى اقلت لا अगर टूट जाए तो फिर डरना नहीं, नाउम्मीद न होना, फिर मेरे पास आजाना, मैं फिर तेरी तौबा को जोड़ दूंगा, माफ़ करके तअ़ल्लुक़ जोड़ दूंगा, और ऐसा जोड़ लगाऊंगा कि नज़र भी नहीं आएगा कि यहां जोड़ है, सौ दफ़ा टूटी तौबा ऐसे साफ़ करेगा कि यूं लगेगा पहली ही तौबा है, इसका

मतलब ये नहीं कि तौबा करता रहे, तोड़ता रहे, ये तो अल्लाह की वुस्अत बता रहा हूं, कि वो वसीअ़ कैसा है, वो करीम कैसा है।

ज़मीन गुनाहों से भरी, आसमान तक गुनाह चले गए, फिर ख़्याल आया बस करूं, ऐ मौला! माफ़ कर दे, अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, जाओ माफ़ किया, किसी से नहीं पूछता, बुढ़ापे में क्यों आए हो? दांत नहीं रहे, अब क्यों आए हो? नज़र नहीं आता अब क्यों आए हो? जिस उमर में आया कोई आया, जब आया, जिस वक़्त आया, जिस ज़माने में आया अल्लाह का दर उसने हमेशा खुला पाया, हम अल्लाह से मायूस न हों।

जब जहन्नमी को जहन्नम में डाला जाएगा!!

سارھقه صعودا फरिश्ते गर्दन में तौक़ डाल कर एक पहाड़ है उसपर चढ़ने को कहेंगे, वो पहाड़ इतना गरम है कि उसपर पांव रखेगा तो पांव पिघल जाएगा, फिर पांव हटा लेगा फिर हाथ रखेगा तो हाथ सारा पिघल जाएगा, फिर हाथ खींच लेगा, फिर कहेंगे कि चढ़ो, कहेगा चढ़ा नहीं जाता फिर उसकी गर्दन में तौक़ डालेंगे और घसीटेंगे वो ऊपर घिसटता हुआ जा रहा होगा और उसका पूरा जिस्म पिघल जाएगा, बनेगा, फिर पिघलेगा, फिर बनेगा, फिर पिघलेगा, जैसे लोहा पिघलता है आग की हरारत से फिर उसको सांचे में ढालेंगे तो फिर वो पिघलेगा फिर बनेगा, सत्तर साल तक उसको घसीटते हुए ऊपर ले जाएंगे सत्तर

बरस पहाड़ की चढ़ाई है उसको ऊपर ले जाकर यूं छोड़ देंगे, मर्द है या औरत, ये इसी तरह पिघलता हुआ, बनता हुआ, दोबारा नीचे आ कर गिरेगा।

अल्लाह से तौबा कर लो!

तो भाई हम अल्लाह की मानें, आज तक जो हुआ उससे तौबा कर लें। अल्लाह की ज़ात जैसा रहीम व करीम और उस जैसा मेहरबान और माफ़ करने वाला बह्रो बर में कोई नहीं, सारी ज़िन्दगी गुनाहों में गुज़र जाए तो सिर्फ़ एक दफ़ा कह दे या अल्लाह माफ़ कर दे, अल्लाह सारे ही माफ़ कर देते हैं, ताने भी नहीं देता।

आपकी और हमारी मां ख़ुदा नख़्वास्ता नाराज़ हो जाए, उसे राज़ी करना पड़ेगा, पहले ताने बोलियां देगी फिर माफ़ करेगी और अल्लाह तआला सुब्हानल्लाह, या अल्लाह मुझे माफ़ कर दे ग़लती हो गई, चल मेरा बन्दा सारे ही माफ़, तो भाई माफ़ी मांग लें, अल्लाह से सुलह हो जाएगी, वहीं सारा मसला हल हो जाएगा।

ज़मीन व आसमान जोश खाते हैं कि ऐ अल्लाह अगर इजाज़त हो तो तेरे नाफ़रमानों को निगल जाएं और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं मुझसे बड़ा कोई सख़ी हो सकता है? मैं तो अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता हूं الله اكبر، من اقبل الى आप इस कलाम में ग़ौर फ़रमाएं मैं अल्लाह या अल्लाह के हबीब का कलाम अर्ज़ कर रहा हूं कोशिश कर रहा हूं मेरी अपनी कोई बात न हो या अल्लाह की बात हो या अल्लाह के हबीब की बात हो।

रहमत व शफ़क़त के ख़ज़ाने

من اقبل الى जो मेरी तरफ़ चल पड़ता है चाहे सारा दामन उसका गुनाहों से आलूदा हो और रोवां रोवां उसका गुनाह में जकड़ा हुआ है मेरी तरफ़ चल पड़े تلقية من بعيد मैं आगे बढ़ कर उसका इस्तिक़बाल करुंगा, الله اكبر जिस से आपको तअ़ल्लुक़ होता है नां आप उसे देख कर उठ पड़ते हैं और आगे बढ़ कर उसको मिलते हैं नहीं मिलते? अल्लाह तआ़ला क्या कह रहे हैं? जो मेरी तरफ़ आ जाए मैं आगे पढ़ के उसको मिलुंगा। फिर यही नहीं हम से जो मुंह मोड़े हम दस दफ़ा मुंह मोड़ते हैं, अल्लाह क्या कह रहे हैं, و من اعرض عنى और जो मुझसे मुंह मोड़ लेता है ناديته من قريب मैं उसके क़रीब जा कर उसे कंधे से पकड़ कर यूं बुलाता हूं: ऐ मेरे बन्दे! कहां जा रहा है? मसला तो इधर हल होगा, मुझे छोड़ कर कहां चल दिया और इसको क़ुरआन में अल्लाह ने यूं बयान फ़रमाया है।

يا ايها الانسان ما غرك بربك الكريم ऐ मेरे प्यारे बन्दे तुझे किसने धोखा दे दिया। अपने रब की ज़ात के बारे में जो तू रब से जफ़ा कर बैठा और मख़लूक़ से वफ़ा कर बैठा है, ما غرك بربك الكريم क्या हुआ तुझे कि रब को भुला कर मख़लूक़ के पीछे भाग पड़ा? ये क़ुरआन के अलफ़ाज़ हैं।

जहन्नम के साँप और बिच्छू

और आगे जहन्नम के साँप हैं जो एक दम उसपर टूट

पड़ेंगे, एक एक बिच्छू का एक एक डंग, एक सांप का एक दफ़ा डसना, चालीस बरस तक उसको तड़पाता रहेगा और कोई उसको छुड़ाने वाला नहीं।

يوم يتذكر الانسان ما سعي و برزت الجحيم لمن يــرى और आज जहन्नम खिंची आ रही है, चीख़ती आ रही है, चिंघड़ती आ रही है, शोर मचाती आ रही है।

☆ تفور फट रही है ☆ تفور जोश मार रही है।

☆ تكاد تميز من الغيظ ☆ गुस्से से फट रही है।

बख़्तियार काकी का गोद में पन्द्रह पारे हिफ़्ज़ कर लेना

बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अ़लैहि को मां सबक़ पढ़ाने के लिए मदरसे में ले गई और जब उस्ताद ने पढ़ाया अलिफ़ बा, ता, सा, तो उन्होंने الٓمّٓ ذالك الكتاب لا ريب فيه पढ़ना शुरू कर दिया और पन्द्रह पारे सुना दिए।

उस्ताद ने कहा: बच्चा! तेरी अम्मां ने मुझसे मज़ाक़ किया है वो घर आ गए और कहने लगे माई! आपने क्या किया, आपके बच्चे ने तो पन्द्रह पारे कैसे हिफ़्ज़ कर लिए? हालांकि आप उसे अलिफ़ बा, पढ़ने के लिए भेज रही हैं।

मां ने फ़रमाया कि मैं जब दूध पिलाती रही तो क़ुरआन पढ़ पढ़कर पिलाती रही तो आपको पता है कि बच्चे का ज़ेहन बिलकुल साफ़ होता है इसलिए क़ुरआन उसके दिल में नक़्श होता गया और अगर बच्चा दूध पी रहा हो और कमरे में गाने लगे हुए हों तो बच्चे से क्या

तवक्क़ो रखी जा सकती है कि ये कल को फ़रमांबरदार बनेगा जबकि पहले दिन से ही उसके कानों में ज़हर घोल दिया गया لا تشرک باللہ मां ने बच्चे को जो पहला सबक़ सिखाना है वो لا الٰہ الا اللہ है कि अल्लाह एक है उसका कोई शरीक नहीं, वो कारसाज़ है उसके बग़ैर कोई कारसाज़ नहीं, वो ही काम बनाने वाला है, कोई उसके बग़ैर काम नहीं बना सकता, कोई किसी की बिगड़ी नहीं बनाता, सिवाए अल्लाह के, ये उनके दिल में नक़्श कर दिया जाए।

दोज़ख़ का कड़वा पानी

जहन्नम के पानी का एक क़तरा ज़मीन में डाल दें, सारा जहान कड़वा हो जाएगा, एक लोटा पानी समुन्दर में डाल दें सारे समुन्दर का पानी उबलने लग जाएगा, एक दोज़ख़ का पत्थर दुनिया के पहाड़ों पर रख दें सारे पहाड़ पिघल के स्याह पानी में तब्दील हो जाएंगे, एक ज़ंजीर का कड़ा (जो ज़ंजीर उनकी गर्दन में लिपटी जाएगी उनके जिस्म पे लपेटी जाएगी) उसका एक कड़ा निकाल के हिमालय पहाड़ पर रखें तो उसको टुकड़े टुकड़े करता हुआ सातों ज़मीनों को चीरता हुआ नीचे चला जाएगा। इतना वज़नी एक कड़ा होगा। सारी ज़ंजीर कितना वज़नी होगी वो कैसे तप रहा होगा।

जहन्नम की वो आग जिसमें आप अगर जहन्नमियों को निकाल कर दुनिया की आग में लिटा दिया जाए तो वो ऐसा सोएगा कि कई सौ साल करवट भी नहीं बदलेगा। ऐसी गहरी नींद दुनिया की आग में सोएगा।

نزاعة لشوا انها لظی फड़कती खाल उतार फेंके تدعوا من ادبر و تولی नाफ़रमानें को पुकारती, पकड़ती, जकड़ती, अज़ाब में बढ़ती हुई ये तो मुजरिमीन की तरफ़ पढ़ती चली जाएगी और इधर से जन्नत में लाई जाएगी।

पतलूनों को आग लगादो

अब भी पतलूनें पहनते हो?
अब भी टाइयां लटकाते हो?
अब भी दाढ़िया मुंडवाते हो?
अब भी शेव करवाते हो?
अब भी तुम्हें होश नहीं आया?
अब भी तुम्हारी आंख नहीं खुली?
तुम्हारे कानों के पर्दे नहीं खुले?
तुम्हें अब भी दोस्त और दुशमन की तमीज़ नहीं है?
अब भी औ़रतें पर्दा न करें?
और खुले बाल लेकर बाज़ार में आएं जाएं?

ये नसल अब भी दाढ़ियां मुंडाए, पतलूने पहने, और उन्ही की तह्ज़ीब में इज्ज़त समझे तो मैं किस पत्थर पर टक्कर मारूं? किस पत्थर को जा कर सुनाऊं?

अगर मैं ये दर्द भरी बात पत्थर को सुनाता तो उसकी भी चीख़ निकल जाती, ये मेरे सामने पता नहीं कौन से पत्थर बैठे हुए हैं, कि इतना कुछ उम्मत के साथ हो रहा है और होश नहीं आता, अब भी दुशमन की शक्ल से प्यार?, दुशमन के लिबास से प्यार?, अब भी स्कूलों के बच्चे टाइयां

और पतलूनें पहन कर जा रहे हैं, अब भी कितने नौजवानों को देखता हूं कि जुमा की नमाज़ में मेरे सामने नंगे सर बैठे होते हैं, अब भी तुम्हें समझ नहीं आया, कि तुम्हारा महबूब कौन है, तुम्हारा दुशमन कौन है? अब भी तुम्हें समझ नहीं आया?, तुम्हें होश नहीं आया? कब तुम्हें होश आएगा? कि मुझे किस सांचे में मरना है, जिन नाफ़रमानियों पर हमें सज़ाएं मिल रही हैं वो नाफ़रमानियां फैसलाबाद में भी हो रही हैं, लाहौर में भी हो रही हैं इस्लामा बाद में भी हो रही हैं, वो कराची में भी हो रही हैं, वो हर जगह हो रही हैं।

गाना गाने से तौबा पर अल्लाह का इनामे दोस्ती

हज़रत उमर रज़ि0 के ज़माने में एक गवैया था जो बरबत बजाया करता था, ये पुराने ज़माने का गाना बजाने वाला आला था, अब गाना बजाना तो इस्लाम में हराम है, उसे सुनना गुनाहे कबीरा है, वो छुप छुप कर ये काम किया करता था और अपनी रोटी चलाता था, बूढ़ा हो गया था, आवाज़ बैठ गई थी लोगों ने सुनना छोड़ दिया, अब कमाई ख़त्म हो गई और फ़ाक़े आने लगे तो जन्नतुल-बक़ी में गया और बैठ कर रोने लगा।

ऐ अल्लाह! जब तक मेरी आवाज़ थी लोग मेरी सुनते थें, अब मेरी आवाज़ ख़त्म हो गई अब मेरी कोई नहीं सुनता लेकिन मैं ने सुना है तू सबकी हर हाल में सुनता है, तू मेरी दुआ सुनकर मेरी मुसीबत दूर फ़रमा।

हज़रत उमर रज़ि0 मस्जिद में सोए हुए थे इल्क़ा हुआ कि मेरा एक बन्दा मुझे पुकार रहा है, उसकी मदद को पहुंचो वो मुसीबत ज़दा है, हज़रत उमर रज़ि0 उठे और दौड़ते हुए जन्नतुल बक़ी में गए देखा तो वो बूढ़ा एक झाड़ी के पीछे रो रहा है और अपने रब को मना रहा है।

उसने जब हज़रत उमर रज़ि0 को देखा तो वो भागने लगा, हज़रत उमर रज़ि0 ने कहाः ठहरो! मैं आया नहीं हूं भेजा गया हूं, मुझे हुकम मिला है कि तेरी मदद को पहुंचूं, तुझे क्या तक्लीफ़ है? मैं उसे दूर करूं, वो कहने लगा, किसने भेजा है? कहा अल्लाह ने भेजा है, वो रोने लगा, कहाः या अल्लाह सारी ज़िन्दगी मैं तेरा नाफ़रमान रहा, हर मजलिस और हर रात मेरी ग़फ़लत से गुज़ारी, हर दिन मेरा नादानी में गुज़रा, और जब मेरे सारे सहारे टूट गए और मैं ने बेबस व लाचार होकर तुझे पुकारा तो तूने फिर भी मेरी आवाज़ पर लब्बैक कहा, और मुझे न भुलाया, ऐसा दर्द आया कि एक चीख़ निकली और जान निकल गई।

आँसुओं की बरकत!

तो मेरे भइयो! ये बात नबियों को रुलाती है ये बात हमें भी रुलाए कि या अल्लाह! हमें तेरे बन्दों को दोज़ख़ से बचाना है हमारा रोना है कारोबार का, बीवी बच्चों का, सेहत का, बीमारी का, मुक़द्दमे का, हम एक रोना और सीख लें, हमारा रोना क्या रोना हो, ख़त्मे नुबुव्वत वाला रोना, नबियों वाला रोना क्या हो, या अल्लाह! तेरे बन्दे दोज़ख़ में

जा रहे हैं, मैं उनको कैसे दोज़ख़ से बचाऊँ, अल्लाह की क़सम ये आंसू आपके अल्लाह के नज़दीक बड़े भारी होंगे।

रब्बे करीम का गुनहगारों से प्यार

मेरी बहनो! समुन्दर, आसमान व ज़मीन के फ़रिश्ते पूछते हैं, जब वो हमें देखते हैं कि अल्लाह का खाते हैं और उसी की नाफ़रमानी करते हैं, वो इजाज़त मांगते हैं, ज़मीन पूछती है या अल्लाह करवट ले लूँ? समुन्दर कहते हैं या अल्लाह इजाज़त हो तो चढ़ कर गर्क़ कर दूँ? जो पानी की मौज जंगलात को ले जा सकती है, वही मौज सारे इन्सानों को भी ले के जा सकती है।

फ़रिश्ते पूछते हैं या अल्लाह इजाज़त दे हम उन्हें गर्क़ कर दें, उन्हें तबाह व बर्बाद कर दें, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि अगर तुमने पैदा किया है तो पकड़ लो, मोहलत न दो, और अगर मैं ने पैदा किया है तो मेरे और मेरे बन्दों के दर्मियान दख़ल अन्दाज़ी न करो, मैं अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता हूं, ان اتانا نهاراقبلته، ان اتانى ليلا قبلته शायद ये भटका हुआ आदमी दिन को तौबा करे शायद कभी रात को तौबा करे तो मैं उसकी तौबा क़बूल कर लूँगा। मेरी बहनो! अल्लाह इतना करीम है कि सारी ज़िन्दगी उसकी नाफ़रमानी करता है, आख़िरी वक़्त में भी उसका ख़्याल आजाए तो अल्लाह की रहमत उसे अपनी आग़ोश में ले लेती है, वो मां बाप से ज़्यादा रहीम है, ज़्यादा क़रीम है।

अल्लाह की चाहत को अपनी चाहत बनालो

हदीसे क़ुद्सी है :

عبدی انت ترید و انا ارید ولا یکون الا ما ارید

ऐ मेरे बन्दे! तेरा एरादा, एक तेरे रब का एरादा, जो तुम चाहते हो अल्लाह के बग़ैर नहीं हो सकता, जो अल्लाह चाहता है, वो तुम्हारे बग़ैर कर लेता है। فان سلمت لی فیما ارید کفیتک فیما ترید तू मेरे साथ साथ करो, दुनिया में जो मैं चाहता हूं वो तुम कर दो, फिर जो कुछ तुम कहोगे होता चला जाएगा।

کفیتک فیما ترید हर हर तमन्ना, तेरा रब खुद आकर तेरी तरफ़ से मददगार बन जाएगा, وان لم تسلم لی فیما ارید अगर तूने वो न किया जो मैं चाहता हूं اتعبعک فیما ترید ولا یکون الا ما ارید फिर अपनी चाहतों में धक्के खाएगा, होगा वही आख़िर जो तेरा रब चाहेगा, कुछ भी नहीं बन सकेगा, अल्लाह के ख़िलाफ़ बग़ावत कर के।

अनोखी दुआ!

या अल्लाह हम तेरे नाफ़रमान बन्दे, या अल्लाह तेरे हुक्मों को तोड़ते हुए, गुनाहों के बोझ उठाए हुए, या अल्लाह तेरे दरबार में जमा हैं, या अल्लाह तेरे सामने हाथ फैलाए हैं, या अल्लाह हम सबको माफ़ कर दे, हमने अभी तेरे दरपर तौबा की है, या अल्लाह आज का माहौल ऐसा संगीन है कि ये तौबा चन्द सिकन्ड भी बाक़ी नहीं रहती और टूट जाती है इस दफ़ा जो हमने की है इसे पक्का कर दे।

या अल्लाह इस तौबा को पक्का कर दे, या अल्लाह इस तौबा को पक्का कर दे, या अल्लाह जिन्हों ने हमें तुझसे दूर कर दिया है, या अल्लाह! ऐ मालिक! तुझसे बिछड़ कर हमने बड़ा दुख देखा है, या अल्लाह! ऐ मौला! ये दिल तेरी याद से ख़ाली हुआ, ये वजूद तेरे महबूब की याद से बाग़ी हुआ, हमने न चैन पाया न सुख पाया, हम तेरी तरफ़ लौटना चाहते हैं, तेरी मोहब्बत से सीने को रोशन करना चाहते हैं, तेरे महबूब की ज़िन्दगी में या अल्लाह ढलना चाहते हैं।

ऐ मेरे मौला! तू हमें तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा दे और ये माहौल, ये हालात ऐसे बन चुके हैं, या अल्लाह! ये हमें तेरी तरफ़ एक क़दम नहीं चलने देते, चलते हैं तो सौ क़दम पीछे जा गिरते हैं।

आप सल्ल0 की दिलनशीं आवाज़ का जादू

एक थे तुफ़ैल इब्न उमर दोसी, उनको काफ़िरों ने हमारे नबी करीम सल्ल0 से इतना डराया कि उन्होंने कान में रूई दे ली, उन्होंने कहा कि सुनुंगा ही नहीं, कहीं मेरे ऊपर असर न हो जाए तो कहने लगे......अब अल्लाह...... لا ليسمعنى लेकिन अल्लाह ने इरादा किया कि मुझे सुना कर ही छोड़ेगा, तो कहने लगेः

कि मैं बैतुल्लाह में गया, तो देखा कि आप स़ल्ल0 क़ुरआन पढ़ रहे हैं, नमाज़ में! तो मेरे जी में आया कि मैं आक़िल बालिग़ आदमी हूं, मैं समझदार आदमी हूं क्या मुझे

नहीं पता चलता कि ग़लत क्या है, सही क्या है? मैं सुनूं तो सही ये कहता क्या है?ये दिल में आया तो मैं ने कान से रूई निकाल ली, और आ कर आपके पास बैठ गया, तो तुफ़ैल इब्ने उमर दोसी आ़मिल भी बड़े थे, जादू बड़ा जानते थे कहने लगेः ऐ भतीजे! मैं ने बड़ों-बड़ों का जादू निकाला है...... और जिन भी भगाया हैं ......अगर तेरे ऊपर भी कोई जिन आ गया है, अगर जादू हो गया है...... तो मैं तेरा इलाज कर सकता हूँ तो आप ने जवाब में कहा......

ان الحمد لله احمده و استعينه و اومن به من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله فلا هادى له .

इन कलिमात में जो तासीर है, जो अरब हैं वो ही समझ सकते हैं, तो वे ऐसे फड़क गए, कहने लगे,

امتء آئت فقت بلغنا قاموس الجبير.

ये दोबारा कहो, दोबारा कहो तेरा कलाम तो समुन्दर की गहराइयों में पहुंच गया तो आपने दोबारा दोहराया......

ان الحمد لله احمده و استعينه و اومن به من يهده الله فلا مضل له ومن يضلله هادى.

कहने लगा, क्या मांगते हो, कहा कि मांगता हूँ कि अल्लाह को एक मानो और मुझे उसका रसूल मानो, कहा मान लिया।

दुनिया व आ़ख़िरत की परेशानियों का इलाज

मेरे नबी सल्ल0 ने फरमायाः

من كان همه طلب الدنيا فرق الله عليه شمله وجعل غنه فى قلبه، اتته الدنيا وهى راغمة.

जो दुनिया के पीछे पड़ जाता है, उसकी जेब व जीनत को मक़सद बनाता है, तो अल्लाह उसे दुनिया के बारे में परेशान कर देता है उसके रिज़्क़ को बिखेर देता है, उस दिल में दुनिया की परेशानियाँ डाल देता है, उसे दुनिया में थकाता है, और आख़िरत उससे दूर चली जाती है, और दुनिया में मूक्क़द्दर के अलावा कुछ नहीं मिलता।

من كا همه طلب الآ خرة...... जो आख़िरत के लिए रोता धोता है, जिसके आँसू दुनिया की चीजों के पीछे नहीं निकलते, वे अपनी आख़िरत को याद करता है, बेचैन हो कर बिस्तर से उठ जाता है, ऐश व आराम को भूल जाता है, क़ब्र की तारीक कोठरी उसे याद आती है, दुनिया के ऐश को वो भुला देता है, वो रातों को उठ-उठ कर क़ब्र की तन्हाइयों को, सोचता है, और अपनी हड्डियों के शिकस्ता होने को और अपने जिस्म में कीड़ों के चलने पर ग़ौर व फ़िक्र करता है, और हश्र के दिन अल्लाह के सामने खड़े होने को सोचता है, ये ग़म उसकी नींद को उड़ा देता है और उसके दिल को दुनिया से ग़ाफ़िल कर देता है। ये ग़म उसके मुक़द्दर की रोज़ी नहीं छीनता।

मुकद्दर जो मेरे नाम का है, उसे दुनिया की कोई ताक़त मुझसे नहीं ले सकती :

الا وان جبرائيل، نفث فى روعى، ان نفس لن

تموت حتی تستکمل رزقها

हुज़ूर सल्ल0 ने फ़रमाया कोई उस वक़्त तक मर नहीं सकता, जब तक कि अपनी रोज़ी न खा ले।

मैं अपने बन्दे की तौबा का इन्तिज़ार करता हूं

जब नाफ़रमानियां होती हैं तो समुन्दर पूछते हैं कि ऐ अल्लाह डुबो दें?

ما من يوم الا والبحر يستاذن ربه ان يغرق ابن آدم؟

हर रोज़ समुन्दर अल्लाह से इजाज़त मांगता है कि बनी आदम को डबो दूं?

और अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

انا الذی امرت البحار ففتحت قولی تاتی الامواج بامثال الجبال البستها لباس ما ذا الذی.

मैं ने समुन्दरों को हुक्म दिया और समुन्दरों ने मेरे हुक्म को माना! उसकी मौजें पहाड़ों की तरह आती हैं, मगर मैं ने उनकी एक हद मुक़र्रर कर दी है, इस मुक़र्ररा हद पर आकर मैं उनको लिबास पहनाता हूं, और वो वहीं टूट जाती हैं, लोगों को डुबोती नहीं, वर्ना एक समुन्दर सातों बर्रे आज़मों को निगल सकता है फिर......!

والارض تستاذن فی ان تبتلئه ज़मीन इजाज़त मांगती है कि हम उनको उलटा दें? फ़रिश्ते इजाज़त मांगते हैं कि या अल्लाह इजाज़त हो तो हलाक़ कर दें? तेरा खाकर तेरी नाफ़रमानी कर रहे हैं!

आपने पंन्द्रह सौ का मुलाज़िम रखा अगर डयूटी नहीं देता तो पिटाई शुरू कर देते हैं, और इतने बड़े वजूद को अ़ता कर के ज़मीन व आसमान को मुसख़्ख़र कर के वो इतना भी नहीं कह सकता कि मेरी बात मानो, फिर भी इतना बड़ा ज़र्फ़ है कि ज़मीन पानी फ़रिश्ते जब बोलते हैं तो अल्लाह फ़रमाता है, ادعوا عبدی فانا اعلم بعبدی اذانشاته بیدی मेरे बन्दे को छोड़ दो तुम मेरे बन्दे को नहीं जानते मैं ने उसे अपने हाथों से पैदा किया है।

ان کان عبدکم فشانکم به و ان کان عبدی فمنی و بین عبدی अगर ये तुम्हारा बन्दा है तो मार दो, और अगर मेरा बन्दा है तो ये मेरा और उस बन्दे का मामला है, और मैं उसकी तौबा का इन्तिज़ार कर रहा हूं, ان اتانی نهارا قبلته وان اتانی لیلا قبلته जब कभी तौबा करेगा दिन में या रात में तो मैं उसकी तौबा क़बूल करूंगा।

और अल्लाह भी कैसा सख़ी बादशाह है? तौबा करने वाले को कहा فاولئک یبدل الله سیاتهم حسنات इस अल्लाह को साथ ले लें, इस अल्लाह को अपना लें, और वो सबका बनने को तय्यार है वो अल्लाह काला, गोरा, मर्द औरत सबसे मोहब्बत का एलान कर चुका है।

یا داؤد لو یعلمون المدبرون عنی ما عندی من الاشواقا الله لتقطعت اوسانهم ऐ दाऊद! अगर मेरे नाफ़रमानों को पता चल जाए कि मैं उनसे कितनी मोहब्बत

करता हूं तो उनके जोड़ जुदा हो जाएं इस बात को सुनकर ऐसा वज्द तारी हो कि उनके जोड़ जोड़ जुदा हो जाएं, ऐ दाऊद! जब नाफ़रमानों का ये हाल है तो तू बता फ़रमांबरदारों से मेरी मोहब्बत कैसी होगी?

ये अलग बात है कि कभी आज़माने के हालात लाता हूं, लेकिन फिर भी मैं अपने बन्दे से मोहब्बत करता हूं।

लोगों के दिलों में अल्लाह की मोहब्बत उतारें, अल्लाह की रहमत बता कर, करम बता कर, फ़ज़ल बता कर, उसकी बख़्शिश बता कर يا داؤد بشر المذنبين ऐ दाऊद जा! मेरे नाफ़रमानों को बशारतें सुना, मैं नाफ़रमानों को कौन सी बशारतें सुनाऊँ ?

या अल्लाह नाफ़रमानों को क्या बताऊँ? कहाः जा उनको बता : لا يتعازم على ذنب ان اغفره

तुम्हारा बड़े से बड़ा गुनाह मेरे नज़दीक कोई हैसियत नहीं रखता तुम तौबा करो मैं सारे गुनाह माफ़ कर दूंगा।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

تصافيني اصافيك मुझसे तअल्लुक़ साफ़ रख, देख मैं कैसा साफ़ तअल्लुक़ रखता हूं, تعرض عني وانا مقبل عليك तू मुंह मोड़ जा मैं फिर भी तुझे बुलाता रहूंगा, आजा! आजा!

من تقرب الى تلقيته من بعيد जो मेरी तरफ़ चलता है मैं आगे बढ़ कर उसका इस्तिक़बाल करता हूं।

سمعه التي يسمع بها ऐ मेरे बन्दे! जब तू मेरे ज़्यादा क़रीब होता हैं मैं तेरा कान बन जाता जूं जिससे तू सुनता है।

وعينه التي يبصر بها मैं तेरी आंख बन जाता हूं जिस से तू देखता है, ويده التي يبطش بها मैं तेरे हाथ बन जाता हूं, ज़िससे तू पकड़ता है, ورجله التي يمشي بها मैं तेरे पांव बन जाता हूं जिससे तू चलता है, इतना ऊँचा मक़ाम ये अल्लाह की बारगाह में ले लेता है कि जिब्राईल भी उसकी गर्द को देखता रह जाता है ये لا اله الا الله में सब कुछ छुपा हुआ है।

जन्नत के नज़ारे

मूसा अ़लैहिस्सलाम ने पूछा या अल्लाह انك تقطر على المومن आप मुसलमान को बड़ी तंगी देते हैं, तो अल्लाह तआ़ला ने जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया, जब जन्नत को देखा, تجرى من تحتها الانهار बहती हुई नहरें हैं, एक ईंट मोती की है, एक ईंट याक़ूत की है, एक ईंट ज़मर्रुद की, मुश्क का गारा, ज़ाफ़रान की घास, और अल्लाह का अर्श उसकी छत है,

ये जन्नत का मटेरियल है और फिर दिन में पाँच दफ़ा अल्लाह तआ़ला जन्नत को मुज़य्यन करता है, उसका हुस्न व जमाल कैसा होगा, زوجنهم بحور عين हमने जन्नत की ख़ूबसूरत औरतों से उनका निकाह कर दिया।

जो थूक सात समुन्दर में डाल दें तो सातों समुन्दर

शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएं, हालांकि उसमें थूक नहीं है, थूक तो एक ऐब है, लेकिन अगर वो ऐसा करे तो सातों समुन्दर शहद से ज़्यादा मीठे हो जाएंगे, तो उसके बोल में क्या मिठास होगी?

अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे कहां हैं वो बन्दे जिन्हों ने दुनिया में गाना नहीं सुना, शैतानी नग़में नहीं सुने, शैतानी मौसीक़ी नहीं सुनी, आज वो जन्नत का राग सुनें, जन्नत का नग़मा सुनें, अल्लाह जन्नत की हूरों से फ़रमाएगा, सुनाओ!

ज़ालिम और मज़लूम कौन

मेरे भाइयो! मुझे कितने साल हो गए हैं हाथ जोड़े हुए, मिन्नत करते हुए, अरे तौबा करो, अरे तौबा करो, मज़लूम बनो, ज़ालिम न बनो, हुसैन रज़ि० के साथ उठाए जाओगे, अल्लाह का नबी तुम्हारा मुद्दई बन कर हाज़िर होगा, ज़ालिम बन गए, ज़ल्लाम के साथी बन गए, ज़ालिम सिर्फ़ उसी को नहीं कहते जो क़त्ल के बाज़ार गर्म करे।

वो भी ज़ालिम है जो तराज़ू पर ग़लत तोल कर बेचेगा,
वो भी ज़ालिम है जो मीटर के बजाए गज़ से नापेगा।
वो भी ज़ालिम है जो तेल में मिलावट कर के दे।
वो भी ज़ालिम है जो चीज़ों में खोट मिला कर दे।
वो भी ज़ालिम है जो रिशवत के बाज़ार गरम करे।
वो भी ज़ालिम है जो बैंकों में पैसे रख कर सूद लेगा।

वो भी ज़ालिम है जो सूद के पैसे दे रहा हो।

वो भी ज़ालिम है जो नाफ़रमानी के नक़्शे क़ायम कर रहा है।

वो भी ज़ालिम है जिसके घर शराब पी-पिलाई जाती है।

घरों में नाच गाने के निज़ाम बनाए जा रहे हैं, देखे जा रहे हैं, नौजवान गाड़ी चला रहे हैं और गाने सुन रहे हैं, अगर कहीं टक्कर हो के मौत आ गई तो अल्लाह को जवाब देंगे? कि क्या सुनता हूआ आया हूं तेरे पास, मैं एक फ़र्द की बात नहीं कर रहा, एक गिरोह की बात नहीं कर रहा, मैं भी मुजरिम हूं आप भी मुजरिम हैं, इस तालाब में सारे नंगे हैं, हम सबने बग़ावत की है, हमने अपने मौला को नाराज़ किया है।

तूने मुझे पा लिया तो सब कुछ तुझे मिल गया।

ये हुज़ूर सल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ फरमा रहे हैं, يا ابن آدم اطلبنی تجدنی ان وجدتنی وجدت كل شئي وان فاتی فاتک کل شئی وانا خير لك من كل شــئـی، मेरे बन्दे! मेरी तलब में निकल! अगर मेरी तलब करेगा, तो मेरा वादा है मैं तुझे मिलूंगा, और मैं तुझे मिला तो तुझे सब कुछ मिला और तुझे मैं न मिला तो तुझे कुछ न मिला।

फिर याद रखो! तेरे दिल के ज़ख़्मों का मरहम नहीं बन सकता, तेरे दर्द का मदावा नहीं बन सकता, तेरे ज़ख़्मों को वो ठीक नहीं कर सकता, तेरे अन्दर की वीरानियों को वो कभी भी आबादी में बदल नहीं सकता। जब तक

अल्लाह न मिले!!

हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम की क़ौम की तौबा

यूनुस अ़लैहिस्सलाम को मछली ने निगल लिया और जब बाहर निकले तो अल्लाह तआ़ला ने कहा तेरी क़ौम ने तौबा कर ली है, जा उनके पास वो वापस जा रहे थे तो रास्ते में देखा कुम्हार घड़े बना रहा था, कच्चे घड़े भट्टी में पकाने के लिए तो यूनुस अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह ने कहा इस कुम्हार से कहो कि एक घड़ा तोड़ दे।

युनुस अ़लैहिस्सलासम उसके पास गए और उससे कहा भाई एक घड़ा तू तोड़ दे, वो कहने लगा, क्यों? अपने हाथों से बनाया खुद ही क्यों तोड़ दूं? यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने कहा या अल्लाह! वो कहता है मैं नहीं तोड़ता तो अल्लाह ने फ़रमायाः ये मिट्टी का घड़ा तोड़ने को तैय्यार नहीं और तू मुझसे मेरे बन्दे जिन्हें मैं ने अपने हाथों से बनाया उन्हें मुझसे मरवा रहा था। उन्हों ने तौबा कर ली है, वो मेरे बन गए हैं, मुझसे सुलह कर ली है।

दिल को अल्लाह की मोहब्बत से भर दो

अल्लाह कि क़सम अर्श भी उस दिल के सामने छोटा पड़ जाता है जिसमें अल्लाह की मोहब्बत उतर जाती है, अर्श भी छोटा है, जिसमें अल्लाह आ गया, जबकि सूई के नाके से तंग है वो दिल जिस से अल्लाह निकल गया, जिस से अल्लाह का तअ़ल्लुक़, मोहब्बत, मारिफ़त निकल गई, सूई

के नाके से भी तंग है।

तो मरने से पहले अपने अन्दर से जी लगा लें, अल्लाह की क़सम! कोई कायनात की शक्ल कोई नग़मा, कोई नेमत, कोई मशरूब, कोई ग़िज़ा, कोई तख़्त कोई जलवा, कोई नज़ारा, दिल की दुनिया को आबाद नहीं कर सकता।

ये आबाद सिर्फ़ अल्लाह से होता है! अगर अल्लाह होगा, तो ये आबाद होगा, अगर अल्लाह न हो तो कायनात का हसीन से हसीन मन्ज़र भी उसकी दुनिया को वीरान रखेगा! उसके दिल का दिया न जल सका, न कोई जला सकता है, न कभी जलेगा, उसका दिल अल्लाह से हट गया, उसके दिल की शमा बुझी है, ये कभी न जलेगी, न राग व रंग में, न जलवों में, न नज़ारों में, न कायनात की दौलत में न अर्श व फ़र्श में! इसको जलाना है, इस दीप को रोशन करना है, तो इसमें अल्लाह को ले लें, अल्लाह को जो तय्यार बैठा है कि तू मुझे बुला कि मैं आजाऊँ।

तब्लीग़ के समरात, जुनैद जमशेद का पैदल हज

तब्लीग़ वो मेहनत है भाइयो! जो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 की गुलामी की राह दिखा रही है, गाने वाले तौबा कर गए अब सुनने वाले भी तौबा कर जाएं। अभी जुनैद जमशेद हज में मेरे साथ था। हमने तो बस में बैठ के हज किया और उसने सारा हज पैदल किया। पैदल हज आदमी को तोड़ फोड़ के रख देता है। पांव इतने ज़्यादा सूज जाते हैं, चल के आदमी की बुनियादें हिल जाती हैं, हम

सवारियों में और वो पैदल जा रहा था।

कहने लगा मैं पैदल हज करुंगा क्योंकि पिछली क़ज़ाएं देनी हैं, इतना अर्सा दुनिया को गुमराह किया है अब अल्लाह को मनाना चाहता हूं, जिसके इशारों पर लड़के लड़कियां नाचते थे आज उसका हाल देखने वाला था, जो पैदल हज के लिए निकल रहा था, तो तब्लीग़ वो मेहनत है भाइयो! जो ऐसे लोगों को ये राहें दिखा देती हैं। अगर उनको कहें कि ये गुस्ताख़े रसूल हैं तो इससे बड़ा ज़ुल्म और क्या होगा।

ये रसूले अकरम को नहीं मानते और किसको मानते हैं। सईद अन्वर, इन्ज़िमामुल हक़ और जुनैद जमशेद हम सारे हज में इकट्ठे थे। कितने लोगों को पीछे फिर फिर के मिन्नतें कर कर के अल्लाह की तरफ़ लाए। ये लोग तो दरवाज़ों पर ख़ड़े नहीं होने देते थे और अब बिस्तर उठाए धक्के खा रहे हैं।

मेरा जीना मेरा मरना अल्लाह के लिए हो

मेरे भाइयो! हम अल्लाह की मानने के जज़्बे के साथ ज़िन्दा रहें, हमारा कोई और जज़्बा न हो! ان صلاتی و نسکی و محیای و مماتی لله رب العالمین मेरी नमाज़, मेरा जीना, मेरा मरना, मेरी जान, मेरा माल, मेरी ज़िन्दगी, मेरा सब कुछ तेरे लिए है। मैं तेरा हो गया मेरे भाइयो! अल्लाह का बन कर रहना ही ज़िन्दगी है। वर्ना कोई ज़िन्दगी नहीं देखो ना कितना करीम है।

हमारे गुनाह बढ़ते हैं……उसका रहम बढ़ता है।

हमारी दिलेरी बढ़ती है, उसकी चश्म पोशी बढ़ती है।

हमारी बेहयाई बढ़ती है……उसकी हया बढ़ती है।

हम दिलेर होते हैं……वो पर्दे डालता है।

हम गुनाह करते हैं……वो छुपाता फिरता है कि तेरे गुनाह का किसी को पता न चले जाए, और उसकी उम्मत के साथ तो ख़ास मामला है क्यामत के दिन अल्लाह का हबीब कहेगा…… या अल्लाह मेरी उम्मत का हिसाब मेरे हवाले कर दे……अल्लाह तआला फ़रमाएंगेः क्यों? कहेंगे! उनको किसी के सामने शर्मिन्दा न होना पड़े अल्लाह तआला फ़रमाएंगेः जब आप हिसाब लेंगे तो आपके सामने तो शर्मिन्दा होंगे कि नहीं होंगे, मैं तुझे भी हिसाब लेने नहीं दूंगा मैं खुद ही उनका अकेले पर्दे में हिसाब ले के फ़ारिग़ कर दूंगा।

अल्लाह से दोस्ती का इनाम

राबिआ़ बसरी रह० का इन्तिक़ाल हो गया, तो ख़्वाब में अपनी ख़ादिमा को मिलीं, उन्होंने पूछा कि अम्मा आपके साथ क्या हुआ? कहा कि मेरे पास मुनूकर नकीर आए, मुझसे कहने लगे مــن ربک तेरा रब कौन है? तो मैं ने उनसे कहा कि सारी ज़िन्दगी रब को न भूली, चार हाथ नीचे ज़मीन पर आख़िर उसको भूल जाउंगी? ये नहीं कहा कि ربی اللــه कहा कि जिस रब को सारी ज़िन्दगी नहीं भूली उसको चार हाथ ज़मीन के नीचे आकर भूल सकती

हूं? उन्हों ने कहा कि छोड़ो इसका हिसाब क्या लेना। पूछाः वो पुरानी लम्बी चादर जिसे ओढ़ कर आप नमाज़ पढ़ती थीं वो कहां गई? यानी एक लम्बा सा जुब्बा, जो अ़रब पहनते हैं, हमारे यहां उसका कोई दुस्तूर नहीं, तो हज़रत राबिआ़ रह० ने कहा था कि मुझको कफ़न मेरी गुदरी में ही दे देना, मेरे लिए नया कपड़ा न लाना लेकिन जब उनकी ख़ादिमा ने देखा कि बहुत आ़लीशान सब्ज़ पोशाक पहनी हुई कहने लगी कि वो गुदरी कहां गई? कहा कि अल्लाह ने संभाल कर रख दी है कि क्यामत के दिन मेरी नेकियों में उसको भी तोलेगा।

वफ़ा का बदला वफ़ा से न कि जफ़ा से

अल्लाह तआ़ला हदीसे क़ुदसी में फ़रमाते हैं कि मैं तेरे मां-बाप को तेरे लिए बेक़रार कर देता हूं, तू खाए नहीं वो खा नहीं सकते, तू सोए नहीं वो सो नहीं सकते, इसी तरह मैं ने तुझे परवान चढ़ाया, फिर जब तुझमें ऐसी जवानीं की लहरें आईं यानी कि झूम झूम के चलना, जब तुझ में जवानी झूमने लगी, बल खाने लगी, अदाएं दिखाने लगी, और तू क़द आवर हुआ फिर तेरे बाज़ू मज़बूत हो गए। तब मैं ने कहा आ जा मेरे सामने सर झुका दे।

तो तू मेरे सामने सर झुकाने के बजाए नाचने लग गया, गाने लग गया; ढोल बजाने लग गया, गिटार बजाने लग गया, गाने सुनने लग गया, हराम खाने लग गया, क्या एहसान करने वाले को यही बदला दिया जाता है जो तू मुझे

दे रहा है। पता है इन दो आंखों में छब्बीस करोड़ बल्ब लगे हुए हैं, छब्बीस करोड़ बल्ब का जो बिल बन्ता तो कौन अदा करता? छब्बीस करोड़ आई रिसेप्टर उनको मैं बल्ब कह देता हूं, छब्बीस करोड़ बल्ब लगा कर एक बिल मांगा कि किसी की बेटी न देखना, किसी कि बहन बीवी न देखना, नज़रें झुका लेना, कोई है जो ये बिल अदा करता हो, लाखों में से कोई एक भी नज़र नहीं आता, अल्लाह तो उन बलबों के तार नहीं काटता कि काटो इन बदमाशों की आँखें कि ये हराम देखती हैं।

अल्लाह ने एक लाख टेलीफ़ोन एक कान में लगाए, एक लाख दूसरे कान में लगाए। एक बिल मांगा गाने न सुनना, गाने न सुनना, मौसीक़ी सुनना हराम है न सुनना, कोई है जो ये बिल देता हो, हम मस्जिद में बैठे होते हैं बाहर से गानों की आवाज़ें आ रही होती हैं, वो तो एक दौर था कि हिन्दू भी मस्जिद के पास आकर बैण्ड बाजे बन्द कर देता था कि मस्जिद आ गई है। यहां मुसलमान माओं के लाल हैं मस्जिद के क़रीब भी ऐसे गानों की सुर ताल होती है कि नमाज़ पढ़ने वालों को मुफ़्त में गाने सुनने को मिलते हैं। जिस क़ौम में मौसीक़ी फैलेगी उस क़ौम में ज़िना फैलेगा, जिस क़ौम में ज़िना फ़ैलता है वो अल्लाह की नज़रों से गिर कर ज़लील व ख़्वार हो जाती है।

रातों को रोने की लज़्ज़त

मेरे भाइयो! रातों को रोने की लज़्ज़त भी सीख लो,

मख़्लूक़ से मोहब्बत को सीखा और रण्डी बाज़ारी औरतों की मोहब्बत को सीखा, अपने मालिक से भी मोहब्बत करना सीखो, ये दिल अल्लाह के लिए है, इसमें चाहे सारा जहां बिठा दो, मेरे रब की क़सम! वो सुन रहा है, वो गवाह है, कि सारी कायनात की दौलत और हुस्न व जमाल आप के क़दमों में ढेर कर दिया जाएगा।

तू मेरा बन कर तो देख

अल्लाह तआ़रा पुकार रहा है يا ابن آدم ऐ मेरे बन्दे मैं तेरे इन्तिज़ार में हूं من تقرب الى تلقيته من بعيد तू मेरी तरफ़ आ, मैं आगे बढ़ कर तेरा इस्तिक़बाल करुंगा, आजा, आजा इस कायनात के रंग व बू से धोखा न खा, मैं तेरे इन्तिज़ार में हूं, من اعرض عنى فناديته عن قريب फिर सिर्फ़ ये नहीं कि जो मेरी तरफ़ आएगा मैं उसी का हूं, जो मुझसे रूठ के मुंह मोड़ जाए, उसे भी नहीं छोड़ता हूं उसके भी पीछे जा के बुलाता हूं कि आजा आजा, हम तेरे लिए राहें बिछाए बैठे हैं, हम तेरे लिए दरवाज़े खोले बैठे हैं।

तू जब भी आएगा तेरी तौबा क़बूल है, अपने गुनाहों से न डरना, नाउम्मीद न हो, सारी ज़मीन गुनाहों से भर दे, कोई भर सकता है? सारे पहाड़ों को तेरे गुनाह दबा दें, सूरज चाँद की रोशनी को तेरे गुनाह छीन लें और उसे काला कर दें, सितारों की झिलमिलाहट छिन जाए और तेरे गुनाहों की गन्दगी आसमान की छत के साथ लग जाए कि फ़रिश्ते भी गुनाहों की बदबू से परेशान हो जाएं फिर भी मैं वो रब

हूं कि तेरे एक बोल पर कि "या अल्लाह माफ़ कर दे" मैं तेरे सारे गुनाह माफ़ कर दूंगा मुझे कोई परवाह न होगी।

रिज़्क़ देने वाले से तअ़ल्लुक़ बढ़ा लो

ऐ मेरे बन्दे! मैं ने सात आसमान बनाए, मैं न थका, मैं ने सात ज़मीनें बनाईं मैं न थका, मुझे बता तो सही : افیعینی رغیف عیش اسوقه الیک

तुझे रोटी खिला के मैं थक जाउंगा? तो तू क्यों सूद की तरफ़ चल पड़ा? तूने क्यों कहना शुरू किया कि सूद के बग़ैर कैसे मईशत चलेगी? तू क्यों रिश्वत पर आ गया? तू क्यों झूठ पे आ गया? तूने क्यों किसी का माल लूटा?

अरे मैं ने तो फिरऔन को 400 साल खिलाया, नमरूद को सैंकड़ों साल खिलाया, आ़द व समूद को खिलाया, आज के काफ़िरों को खिलाया, चलो वो तो इन्सान हैं, बिल में पड़े हुए साँप को खिलाया, झपटते उक़ाब को न भूला, शेर जैसे मूज़ी को न भूला, चीते जैसे चालाक और अय्यार और ज़ालिम और ख़ूंख़्वार को न भूला, न भेड़िए को भूला, न उक़ाब को भूला, न लोमड़ी को भूला, वो करोड़ों अरबों, खरबों, लातादाद चींटियों में से एक चींटी को न भूला।

चींटी को पहचाना, परवाने को पहचाना, मच्छर को खिलाया, पतिंगे को खिलाया, उक़ाब को खिलाया, साँप को खिलाया, समुन्दरों में मछलियों को खिलाया, पानी की तह में जहां पानी काला है, कोई रोशनी नहीं, वहां की एक एक मछली को खिलाया।

व्हील की क्या ज़रूरत है?……वहीं पहुंच रहा है
शार्क की क्या ज़रूरत है?…… वहीं पहुंच रहा है
साँप की क्या ज़रूरत है?…… वहीं पहुंच रहा है

चार बेटों की परवरिश की और वो सब दो मां बाप नहीं कर सकते।

उस रब को देखो जो खरबहा खरब मच्छरों को खरबहा खरब पतिंगों को, परवानों को, इन्सानों को, जिन्नात को, फ़रिश्तों को, कायनात के ज़र्रे ज़र्रे को, जो पाल रहा है, खिला रहा है, पिला रहा है, उठा रहा है, उन सबको दे कर न वो भूला, न वो थका, न वो भटका, न वो घबराया, न वो चूका, कि मेरा मुकद्दर किसी और को जाए, किसी का मुक़द्दर किसी और को जाए, नहीं नहीं ये मुमकिन नहीं, न फ़ैसले बदले, न भूला, न चूका, न भटका, न थका, न मांगने से घबराया, चारों बच्चे मां से मांगना शुरू कर दें, तो मां कहती है दफ़ा हो जाओ, मेरा सर न खाओ।

बेचैन दिल का मरहम अल्लाह

यहां अगर अल्लाह नहीं है तो ये रूह बेक़रार रहेगी, ये जिस्म बेक़रार रहेगा, उसे दुनिया की कोई रौनक़ कोई महफ़िल, कोई क़ुमक़ुमों में कोई होटलों की महफ़िलों में लाखों हसीन चेहरे उसके दिल की आग को ठंढक नहीं पहुंचा सकते……!

ये आग भड़कती रहेगी, ये तिश्ना रहेगा, इसकी प्यास बढ़ती रहेगी, इसका ग़म बढ़ता रहेगा, इसका सिर्फ़ एक

इलाज है उससे मोहब्बत करे जो उससे मोहब्बत किए बैठा है, कैसी अ़जीब बात है माँ-बाप की नाफ़रमानी करो घर से निकाल देते हैं, अख़्बार में छाप देते हैं फ़लां मेरा नाफ़रमान है मैं उसे अपनी सारी जायदाद से महरूम करता हूं!

इन्सान की पैदाइश का मक़सद

हमारा दुनिया में आने का और कोई मक़सद नहीं सिवाए इसके कि अल्लाह की मान कर ज़िन्दगी गुज़ार दें और उसकी रहमत के घर में पहुंच जाएं। يٰعبادى! انى لم اخلقكم لا ستكثر بكم من قلة ऐ मेरे बन्दो! तुम्हें इस लिए नहीं बनाया कि ख़ज़ाने कम पड़ गए थे, तो पैदा कर के कमी पूरी करूं, و لا لاستأنس بكم من وحشة इस लिए पैदा नहीं किया कि अकेले में जी घबराता था तो तुम्हें पैदा कर के दिल लगाऊँ, و لا لاستعين بكم على امر قد عجزت عنه इस लिए नहीं पैदा किया कि मेरा कोई काम अटक गया था, तुम्हारे बग़ैर होता नहीं था, तो तुम्हें पैदा करके अपना काम निकालूं।

तो क्यों पैदा किया है? انما خلقنكم لتعبدونى طويلا तुम्हें इस लिए पैदा किया कि सारी ज़िन्दगी मेरे बन कर रहो, وتذكرونى كثيرا हमेशा कसरत से मुझे याद रखो, وتسبحونى بكرة و اصيلا सुब्ह व शाम अपने मालिक की तस्बीह पढ़ो, यही इस दुनिया में आने का मक़सद हे, यही इन्सानियत की मेराज और इम्तियाज़ है कि ये अपने ख़ालिक़ को राज़ी करने में सब कुछ लगा देता है।

सुकून की तलाश!!

ओ मेरे भाइयो! कहां धक्के खा रहे हो? कभी किसी ने मौसीक़ी की सुर ताल में भी चैन पाया? कभी किसी ने शराब की तल्ख़ घूंटों में भी चैन पाया? कभी किसी ने हसीनों के जलवों से भी चैन पाया? कभी किसी ने रक़्स व सुरूर की महफ़िलों में भी सुकून पाया? कभी किसी ने तख़्ते शाही पर बैठ कर इतमीनान की दौलत को पाया? कभी किसी ने संगे मरमर के घर बना कर चैन पाया? कभी किसी ने मख़मल के बिस्तरों पर चैन पाया? कभी किसी ने हीरे से अपने आपको सजा कर चैन पाया हो तो मुझे उलटा लटका दो।

अल्लाह का क़ुरआन न बदल जाए? अगर किसी को मूरत और सूरत में चैन मिले, किसी को साग़र और मीना में चैन मिले, किसी को रक़्स व सुरूर में चैन मिले, कसी को तख़ते शाही पर चैन मिले, तो मेरे रब की किताब न बदल जाए, मेरे रब का फ़रमान, एलान, चैलेंज ۲۸। ख़बरदार अल्लाह कया कहना चाह रहे हैं? शोर मच गया, या अल्लाह ये क्या हुआ? मॉडल टाउन वालों को बता दो कि सिर्फ़ मेरी याद से चैन मिलता है।

जाओ फ़ाइव स्टार होटलों के धक्के खा लो, जाओ फ़ाइव स्टार होटलों की गिलाज़त को चाटो, जाओ! मग़रिब की गन्दी तहज़ीब के गुलाम बनो, जाओ उनकी बेटियों की तरह कपड़े उतार दो, जाओ उनके जवानों की तरह जानवर

बन जाओ, जाओ! उनकी तरह मौसीक़ी में डूब जाओ, जाओ! उनकी तरह जानवरों की तरह ज़िना करते फिरो, कहीं तुम्हें चैन मिले तो मुझे फिर रब ही न समझना, सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की याद ही से दिलों को चैन है बाक़ी सब धोखा, फ़राड, फ़रेब है।

अ़ब्दुलक़ादिर जीलानी रह0 का अनोखा वाक़ेआ़

शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह, के पास एक औ़रत आई कहा ऐ शैख! अगर अल्लाह ने पर्दे का हुक्म न दिया होता तो मैं अपने चेहरे से निक़ाब उठा के तुझे दिखाती कि अल्लाह ने मुझे क्या जमाल बख़्शा है लेकिन इसके बावजूद मेरा ख़ाविन्द दूसरी शादी करना चाहता है ये सुनकर अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 पर ग़शी तारी हो गई लोग बड़े हैरान हुए कि ये किस बात पर ग़शी है? जब होश में आए तो फ़रमाया! ये एक मख़्लूक़ है जो अपनी मोहब्बत में शरीक बर्दाश्त नहीं कर रही है वो दो जहां का बादशा अपनी मोहब्बत में शरीक कैसे बर्दाश्त करेगा।

हज़रत अनस रज़ि0 का अल्लाह से तअ़ल्लुक़

हज़र अनस रज़ि0 का नौकर आया, कहा जी बाग़ सूख रहा है अगर पानी न मिला तो सूख जाएगा। तो उस वक़्त नहरें तो थी नहीं, टयूब वेल भी नहीं थे, कहने लगे अच्छा मुसल्ला लाओ, बिछाया, अल्लाहु अकबर, दो नफ़्ल पढ़े, सलाम फेरा, बोल भाई कुछ नज़र आया, कहने लगा कि कुछ भी नहीं, फिर अल्लाहु अकबर, फिर नफ़ल शुरू कर

दिया, लम्बी रकअ़तें पढ़ीं, फिर सलाम फेरा, देखो भाई कुछ नज़र आया, कहा जी अब भी नहीं।

कहा अच्छा फिर اللہ اکبر। फिर नफ़्ल शुरू कर दिया, दो नफ़्ल पढ़े, बोल भाई कुछ नज़र आया, कहा वो दूर से एक पर्दे से पर के बराबर बादल नज़र आया है, अच्छा :اللہ اکبر। फिर नफ़ल शुरू कर दिया, सलाम फेरने से पहले बारिश छमा छम, बादल आया और बाग़ के ऊपर छा गया, जब सलाम फेरा, बारिश हो गई, पानी भर गया, नोकर से कहा कि जाओ देखो कि बारिश कहां कहां हुई है। जब जाकर देखा तो बाग़ की चारदीवारी के अन्दर थी, बाहर एक क़तरा भी न था।

सिर्फ़ नमाज़ सिन्ध में ज़िन्दा हो जाए, कोई बेनमाज़ी न हो, और अन्दर के ज़ौक़ से भागें, इसलिए नहीं कि हमें दुनिया में मिले इसलिए कि मेरा अल्लाह मुझे मिल जाए, अल्लाह मिलेगा तो दुनिया भी देगा आख़िरत भी दे देगा।

एक वक़्त था जब मुसलमान उठता था तो सारी कायनात के बातिल पर लरज़ा तारी हो जाता था, और वो अपने ऐवानों में थर थर कांपते थे। वो वक़्त था जब मुसलमान ने कलिमा सीखा हुआ था, आज मुसलमान ने कलिमा नहीं सीखा, इसलिए दुनिया की कोई ताक़त उसे अल्लाह के यहां सुरख़रू नहीं कर सकती।

ला इलाह इल्लल्लाहु की हक़ीक़ी ताक़त

हज़रत शुरहबील रज़ि० बिन हसन पतले से सहाबी हैं,

वह्य के कातिब थे वह्य लिखते थे। किताबते वह्य, वह्य के कातिब, मिस्र में एक क़िला नहीं फ़तह हो रहा था, दिन (भी) बहुत ज़्यादा गुज़र गए, जब मुहासरा शुरू हुआ, रोज़ाना मुहासरा करते थे एक दिन जो हज़रत शुरह्बील रज़ि0 को बहुत जोश अया, घोड़े को एड़ लगा के आगे हुए और फ़सील के क़रीब जा कर फ़रमाया। ऐ क़िब्तियो सुनो! हम एक ऐसे अल्लाह की तरफ़ तुम्हें बुला रहे हैं अगर अल्लाह का इरादा हो जाए तुम्हारे इस क़िले को तोड़ने का तो आन की आन में तोड़ सकता है और لا الٰہ الا اللہ، اللہ اکبر कह कर जो शहादत की उंगली उठाई सारा क़िला ज़मीन पर आ गिरा। उन्हों ने ये कलिमा सीखा था, "لا الٰہ الا اللہ، اللہ اکبر" यूँ जो कहा, सारा क़िला ज़मीन पर आ के गिरा।

कितनी नाफ़रमानी मगर......
करीम आक़ा ढील देता रहा

इन आँखों ने कितना ग़लत देखा है किसी की अल्लाह ने आँखें लीं हैं वापस, कि आँखों से महरूम कर दो।

इन कानों ने कितना ग़लत सुना है, कभी अल्लाह ने किसी के पर्दे फाड़े हैं?

ये शहवत कितनी ग़लत इस्तेमाल हुई है,

कभी अल्लाह ने अज़ाब का कोड़ा बरसाया है?

इन हाथों ने कितना ग़लत लिया और दिया कितना ग़लत लिखा है, कभी अल्लाह ने हाथ तोड़ा है?

ये पांव कितनी ग़लत महफ़िलों में उठे हैं, कभी अल्लाह ने पांव काटा है?

इस दिमाग़ ने कितना ग़लत सोचा है, कभी अल्लाह ने दिमाग़ को ख़राब किया है?

इस दिल ने कितना ग़ैर को चाहा, कितनी मख़्लूक़ की मोहब्बत इस दिल में आई है? कभी अल्लाह पाक ने इस दिल को अंधा किया है?

इमाम अहमद बिन हंबल का अल्लाह की मोहब्बत में कोड़े खाना

दो शख़्स हैं जिनके बारे में तारीख़ ने गवाही दी, ये न होते तो इस्लाम न होता, لولا ابوبكر لما عبدالله अबूबक्र न होते तो इस्लाम न होता, لولا احمد لما عبدالله अहमद बिन हंबल न होते तो इस्लाम न होता।

क़ुरआन के बारे में एक बहुत बड़ा फितना था, सारे उलमा चुप हो गए, अपनी जानें बचा गए, कई भाग गए, कई जिला वतन हो गए, अहमद बिन हंबल डट गए, कहा मुझे मार दो, मेरी ज़बान से हक़ के सिवा नहीं निकलेगा।

आख़िर ये पकड़े गए और तीन दिन मुनाज़रा होता रहा, मुनाज़रों में तीनों दफ़ा मुअ़तज़िली (एक फ़िरक़ा था) हारते रहे, चौथा दिन था, आज अहमद बिन हंबल को पता है कि या तो मेरी जान जाएगी या मार मार के मुझे तबाह कर देंगे, जेल से निकल कर आ रहे और दिल में ख़्याल आ रहा कि मैं बूढ़ा हूं और बनूअब्बास के कोड़े बदाशत नहीं

कर सकता तो अपनी जान बचाने के लिए अगर मैं ने कलिम-ए-कुफ़्र कह भी दिया तो अल्लाह ने इजाज़त दी है तो मैं अपनी जान बचाऊँ।

ये ख़याल आ रहा था कि अचानक एक शख़्स मजमे को हटाता हुआ तेज़ी से आया और क़रीब आ गया, कहा अहमद, कहा क्या है? कहा मुझे पहचानते हो? कहा मेरा नाम अबुलहैसम है, मैं बुग़दाद का नामी गिरामी चोर हूँ, देखो मैं ने बनूअब्बास के कोड़े खाए मैं ने चोरी नहीं छोड़ी, कहीं तुम बनूअब्बास के कोड़ों के डर से हक न छोड़ देना अगर तुमने हक़ छोड़ दिया तो सारी उम्मत भटक जाएगी।

तो इमाम अहमद बिन हंबल जब कभी याद करते कहते رحم الله ابو الهيثم ऐ अल्लाह अबुलहैसम पर रहम कर दे कि उस चोर की नसीहत ने मुझे जमा दिया। मैं ने कहा मेरे टुकड़े टुकड़े कर दे अब मैं हक़ को नहीं छोडुंगा, और साठ कोड़े पड़े, महल में बोटियां उतर के गिरने लगीं और ख़ून से तर बतर हो गए और उधर जो बातिल का मुनाज़िर था उसका नाम भी अहमद था।

जब ये ख़ून ब ख़ून हो गए तो नीचे आया और उनके क़रीब जाकर कहने लगा, अहमद अब भी अगर मान जाए कि क़ुरआन मख़्लूक़ है तो मैं ख़लीफ़ा के अज़ाब से तुझे बचा लूंगा। उन्हों ने इसी बेहोशी में कहा अहमद अब भी अगर तू मान जाए कि कुरआन अल्लाह का कलाम है और मख़्लूक़ नहीं है तो मैं तुझे अल्लाह के अज़ाब से बचा लूंगा।

हलक़ में तराज़ू का कांटा अटक गया! मगर कैसे?

अल्लामा कुर्तबी रहमतुल्लाहि अ़लैह ने अपनी किताब "अत्तज़किरह" में एक वाकि़आ़ लिखा है :

एक आदमी सुबह अपनी दुकान पर आया, और अपने तराजू को तोड़ने बैठ गया, बराब़र के पड़ोसी ने पूछा कि तराज़ू क्यो तोड़ रहे हो? उसने कहा मेरा पड़ोसी मर रहा था, हमने उसे कहा कलिमा पढ़ो, वो कहता कि पढ़ा नहीं जाता, हमने कहा क्यों नहीं पढ़ा जाता? कहने लगा :

मैं दुकान में जिस तराज़ू से तोलता था, उस तराज़ू का कांटा मेरे हलक़ में चुभा हुआ है, वो मुझे कलिमा पढ़ने नहीं दे रहा है।

उसने डण्डी मार के कितने पैसे बचाए होंगे, मैं अगर डण्डी मार कर दुनिया पूरी ही नहीं सारी दुनिया को भी ले लूं, और दुनिया से जाते हुए ईमान चला गया तो मैं क्या ले कर गया? और पता नहीं मेरे बच्चों के मुक़द्दर में है कि नहीं है हराम की रोटी कभी जमा नहीं होती, हमारा एक अ़ज़ीज़ था उसने 1962 की दहाई में करोड़ो रूपये जमा किए बहुत बड़ा अफ़सर था, कहता था:

मैं आज मर जाऊँ तो मेरी बच्चियों को किसी की परवाह नहीं, मैं ने इन कानों से सुना वो कह रहा था कि आज मर जाऊँ तो मेरी बेटी को किसी की परवाह नहीं,

फिर वो बैठा बैठा मर गया।

उसका बड़ा बेटा एक दिन कह रहा था : काश! हमारा बाप हराम न जोड़ता तो हम भी कोई सुख़ का दिन देख लेते। सुनो!!! उसका बेटा क्या कह रहा है कि काश हमारा बाप हराम न जोड़ता तो हम भी कोई सुख का दिन देख लेते, अगर ये कायनात अल्लाह के हाथ में है तो कभी हराम का पैसा हरा न होगा, किसी और के हाथ में चली गई है, तो कमाओ चाहे हराम खाओ।

अगर ये कायनात अल्लाह के हाथ में है तो हलाल का पैसा कभी खुश्क न होगा, कभी इसपर ख़ज़ाँ न आएगी, वो थोड़ा हो कर भी बहार दिखाएगा, जैसे कांटा हलक़ के अन्दर चला जाए, तो चुभता है है कि नहीं? अल्लाह की क़सम हराम लुक़्मा, रूह पे इस कांटे से ज़्यादा तेज़ जा कर चुभता है, और हराम सिर्फ़ सूद और रिश्वत ही नहीं है बल्कि ये डण्डी मार के बेचना, ये कच्चे रंग का पक्का रंग कह कर बेचना, गज़ को मीटर बना के बेचना, मिलावट कर के बेचना, झूठ बोल के बेचना, और झूठी क़समें खा कर बेचना, ये सब वो हराम लुक़मे हैं जो पेट में जा रहे हैं।

अल्लाह के नबी सल्ल0 का फ़रमान है कि जो सुबह से शाम तक बच्चों के लिए हलाल रोज़ी कमाने में थक जाए, तो उसके उस दिन के सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं। ये दुनियापूर के बैंक किसने भरे हुए हैं? इसमें सेविंग एकाउंट किसने खोले हुए हैं? अमेरिका ने आ के खोले हुए हैं?

बर्तानिया ने खोले हैं? नहीं ये दुनिया भर के लोगों ने ही सेविंग अकाउंट खोला है, बैंक वालों के चक्कर मे आ गए कि तुम्हारा पैसा बढ़ रहा है, बढ़ नहीं रहा घट रहा है, इसपर हलाकत के फैसले हो जाएंगे, बैंक में पैसे रखने हैं तो ज़रूर रखो लेकिन करंट एकाउंट में रखो और कम से कम सेविंग से तो निकाल लो।

हमारा जीना मरना ख़ालिस अल्लाह के लिए हो

मेरे भाइयो!!! दुनिया में आने का मक़सद ही अपने अल्लाह को राज़ी करना है, खाना, पीना, शादी, कपड़ा, लिबास, ज़राअ़त, तिजारत, हुकूमत, सियासत, अ़दालत, ये सब हमारी ज़रूरतें हैं, हम इसके लिए पैदा नहीं हुए هو الذی خلقکم ما فی الارض جمیعا ये सब कुछ हमारे लिए बना और हम अल्लाह के लिए बने, हमारी ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह के लिए जीना, अल्लाह के लिए मरना और अल्लाह के लिए ज़िन्दा रहना है, हमारा हर क़दम अल्लाह के लिए है।

ان صلاتی इबादात ونسکی क़ुर्बानियां ومحیای जीना ومماتی मरना للہ رب العالمین वो मेरे रब के लिए है। हम अपने लिए नहीं जीते, हम अल्लाह के लिए जीते हैं, और जो अल्लाह के लिए जीते हैं, वो मर के भी ज़िन्दा रहते हैं, और जो अपने आपके लिए जीते हैं वो ज़िन्दा रह कर भी मुर्दा हैं और मर के भी मर गए, ज़माने ने उन्हें भुला दिया तारीख़ ने उन्हें भुला दिया इन्सानों ने

उन्हें भुला दिया, यहां अपने पेट का पुजारी बन कर ज़िन्दा रहने वालों को न तारीख़ माफ़ करती है और न अल्लाह माफ़ करता है और अल्लाह पर मर मिटने वालों को और अल्लाह के लिए ज़िंदा रहने वालों को न तारीख़ भुलाती है और अल्लाह तो है ही सबसे बड़ा क़दरदान وكان الله شاكرا عليما अल्लाह से बढ़कर कोई क़दरदान हो सकता है, अल्लाह ही है जो बन्दे की मेहनत की क़दर करता है।

दुआ की बरकत से गधा ज़िन्दा हो गया

नबाता बिन यज़ीद नख़ई रह0 अल्लाह के रास्ते में निकले, गधा मर गया, साथियों ने कहा, सामान हमें दे दो, कहा नहीं तुम चलो मैं आ रहा हूं, एक तरफ़ हुए, अल्लाहु अकबर नमाज़ की नियत बांधी, दो रकअत पढ़ी, सलाम फेरा, ऐ अल्लाह عبدك فى سبيلك ऐ मौला! तेरा बन्दा, तेरे रास्ते में है يحى العظام ऐ वो ज़ात जो हड्डियों को ज़िन्दा कर देता है।

मुझे इस सवारी की ज़रूरत है, तू ग़नी है और मैं मोहताज हूं, तो मैं सवारी के बग़ैर सफ़र कैसे करूं? उठा दे इस गधे को, फिर उठे और छड़ी ली, और मुर्दा गधे को एक मारी, कहा उठ और वो कान हिलाता हुआ खड़ा हो गया, एक छड़ी से जो नमाज़ मर्दों में रूह फूंक दे वो दुनिया के मसले हल नहीं करवा सकती? मगर नमाज़ तो हो।

सुकून अख़लाक़ में है

मेरे भाइयो और बहनो घर बेटी को सोने चाँदी से लाद

कर रवाना करने से नहीं चलता और डॉकटर या इंजीनियर या फैकट्री का मालिक बनाने से घर नहीं चलता। मियाँ-बिवी का घर अच्छे अख़्लाक़ से चलता है। अख़्लाक़ अच्छे हों तो घर आबाद होते हैं। चाहे झोपड़ी में हों और अगर अख़्लाक़ बिगड़ जाएं तो घर बर्बाद हो जाते हैं चाहे संगे मरमर के घर बने हों।

अख़्लाक़ अच्छे हों तो घर में रोशनियाँ हैं चाहे चराग भी न जलता हो। अख़्लाक़ बुरे हों तो घर में अंधेरा है चाहे दिन रात में बिज़लियाँ चमक रही हों, और क़ुमक़ुमें जल रहे हों। अगर अख़्लाक़ अच्छे हों तो काँटों की सेज भी फूल बन जाती है और अख़्लाक़ बिगड़े हों तो नरम व नाज़ुक गद्दे भी कांटेदार झाड़ियां बन जाते हैं।

अख़लाक़ की दुरुस्तगी पर रुखी रोटी भी पराठा बन जाती है और बदअख़लाक़ के लिए अगर दुनिया की सारी लज़्ज़तों को भी चुन कर दस्तरख़्वान पर रख दिया जाए तो भी वो अंगारे बन जाते हैं, ज़िन्दगी का वजूद अख़लाक़ पर है। ज़िन्दगी का वजूद चीज़ों पर नहीं, कपड़ों पर नहीं ज़ेवर पर नहीं, डिग्रियों पर नहीं, ओहदों पर नहीं, बड़े बड़े घरों पर नहीं बल्कि ज़िन्दगी का बसेरा अच्छे अखलाक़ से होता है।

होश में आजाओ ऐसा न हो कि......

वो दिल जो अल्लाह की मोहब्बत से ख़ाली हो चुका है
वो दिल जो गुनाहों की लज़्ज़त का आदी हो चुका है,
और वो आंख जो गुनाहों की लज़्ज़त से आशना हो

चुकी है, वो कान जो गुनाहों की लज़्ज़त सुनने के आदी हो चुके हैं, वो वजूद जिसका एक एक बाल गुनाहों में जकड़ा हुआ हो, उसे ये होश नहीं है कि मैं ने कल अल्लाह के सामने हाज़िर होना है एक झटका दिल का लगे तो सारे कारोबार छूट जाते हैं, यहां सारे वजूद को झटका लग चुका है कि......

नाख़ुन तक अल्लाह की नाफ़रमानी में जकड़ा हुआ है
बाल बाल अल्लाह की नाफ़रमानी में जकड़ा हुआ है
इस ज़बान ने कितने ग़लत बोल बोले हैं......?
इन आँखों ने कितना ग़लत देखा है......?
इन कानों ने कितना गलत सुना है......?
इन हाथों ने कितने ज़ुल्म किए हैं......?
ये पांव कैसी कैसी ग़लत महफ़िलों की तरफ़ उठे हैं?
और इसी वजूद के साथ अल्लाह के सामने जाना है।

मेरे भाइयो! हम थोड़ी देर के लिए तो होश में आने की कोशिश करें, शराब में गर्क़ होने वाले को भी होश आ जाता है ये कैसा नशा चढ़ा हुआ है, कि पचास साल गुज़र चुके हैं, कोई होश में ही नहीं आ रहा है कि हम किस तरफ़ जा रहे हैं, और किस के साथ हमारा मामला पेश आने वाला है, जहां खरे खोटे को अलग किया जाएगा।

सदक़ा करने का इनाम

हबीब अ़जमी रह0 की बीवी आटा गूंध कर पड़ोसन के पास गई आग लेने के लिए, पीछे एक फ़क़ीर आ गया,

उन्होंने सारी परात उठा कर उसको देदी और घर में कुछ था ही नहीं, सिर्फ़ आटा ही था, वापस आईं तो आटा गायब, बीवी ने कहा कि आटा कहां गया? कहा एक दोस्त आया था उसको पकाने के लिए दे दिया है, थोड़ी देर गुज़र गई, कोई भी नहीं आया, कहने लगी कि मालूम होता है कि तूने सदक़ा कर दिया है, कहने लगे हां।

कहने लगी अल्लाह के बन्दे एक रोटी जितना तो रख लेते, रोटी मैं पका देती, आधी तू खा लेता, आधी मैं खा लेती, कहने लगे कि फ़िक्र न कर बहुत अच्छे दोस्त को दिया है, थोड़ी देर गुज़री तो दरवाज़े पर दस्तक हुई, तो उनके दोस्त आए, उनके हाथ में गोश्त का प्याला भरा हुआ और रोटियों की परात भरी हुई, तो हंसते हुए अन्दर आए कहने लगे कि मैं तो दोस्त को सिर्फ़ आटा भेजा था, वो ऐसा मेहरबान निकला कि उसने रोटियां पका कर साथ गोश्त भी भेजा है, हम अपने बच्चों को भी अल्लाह के नाम पर ख़र्च करना सिखाएं कहते हैं बच्चा जमा कर, बचा कर रख, कल तेरे काम आएगा।

पैसे जोड़ो नहीं अल्लाह की राह में लगाओ, अल्लाह की क़सम अल्लाह वापस करता है, औरतें ज़कात नहीं देतीं, ज़ेवर है उसकी ज़कात नहीं देतीं, तो यही ज़ेवर उनके लिए आग बन जाएगा, कितने मर्द हैं पैसा है, ज़कात नहीं देते, तो ज़कात तो फ़र्ज़े ऐन है, फ़र्ज़ ज़कात से ज़्यादा अदा करो, फिर देखो अल्लाह कैसे वापस करता है।

जो अल्लाह का हो गया तो सारी दुनिया उसकी गुलाम बन गई

अल्लाह ने उनकी ज़रूरतों का ऐसा इन्तिज़ाम बनाया है कि इब्न अबिद्दुनिया रह० जैसे मुहद्दिस ने उनका वाक़ेआ नक़ल किया है कि: खाना पकाने के लिए उठीं तो देखा कि प्याज़ नहीं है, अब बैठी हैं कि प्याज़ कहां से लाऊँ, न कोई नोकर, न कोई ख़ादिम, न कोई ख़ादिमा, न शौहर, न कोई औलाद, अभी ख़्याल ही आया था कि ऊपर से एक चील उड़ती जा रही थी जिसके पंजों में प्याज़ था उसके पंजे ढीले हुए और प्याज़ सीधा उनकी झोली में आ गिरा, फरमाया :

"राबिआ जो मेरे बन जाते हैं मैं मख़्लूक़ को उनका ताबे बना देता हूं"

फ़क़ीर वो है जिसे अल्लाह न मिले

क्या हमारी बदक़िस्मती है कि चालीस साल में कोई एक रकअत भी ऐसी नसीब नहीं हुई जिसमें मैं अल्लाह के साथ प्यार व मोहब्बत से बात की हो, और मैं अपने अल्लाह को याद करके अल्लाहु अकबर से शुरू हुआ और सजदे तक अल्लाह के इश्क़ में चला गया, ये कैसा फ़क़ीरों का देस है, ये कैसी फ़क़ीरों की दुनिया है लोग फ़क़ीर कहते हैं उनको जो ये झुग्गियों में रहते हैं।

फ़क़ीर वो है जिसे अल्लाह न मिला......

फ़क़ीर वो है...... जो अल्लाह के घर में आकर भी अल्लाह को न पा सका......जिसे अल्लाह के नाम की

मोहब्बत का ज़ायक़ा न मिला......जो अल्लाह के नाम की हलावत न देख सका......जो तन्हाइयों में अल्लाह के सामने बैठ के रो न सका......जो अल्लाह को दुखड़े न सुना सका......जो अल्लाह की मोहब्बत में न तड़पा, न रोया और न मचला......ये है फ़क़ीर मेरे भाईयो!

वो फ़क़ीर नहीं जो इस्लामाबाद की गलियों में मांगता फिर रहा है।

दुनिया में ज़िन्दगिया गुज़ारने के दो रास्ते

हज़रत उमर रज़ि0 बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के बारह बेटे थे। जब उनका इन्तिक़ाल होने लगा तो उनके साले मुसैलमा बिन अ़ब्दुल मलिक कहने लगे अमीरुल मूमिनीन! आपने बच्चों पर बड़ा ज़ुल्म किया है। कहने लगे क्या ज़ुल्म किया है? कहा उनके लिए जो कुछ छोड़ कर जा रहे हो वो दो रुपये फ़ी कस है, तेरे बच्चों को तर्के में दो रूपये यानी दो दिरहम मिलेंगे तो ये क्या करेंगे आगे? उनका तो कुछ न बनाया, तो ज़हर ने असर कर लिया था, कहने लगे मुझे बिठा दो, तो उन्हें बिठा दिया, कहने लगे बात सुनो! मैं ने उनको हराम कोई नहीं खिलाया और हलाल मेरे पास था ही नहीं।

लिहाज़ा मैं इसका मुकल्लफ़ ही नहीं हूं कि उनके लिए जमा करूं। वो कहने लगेः एक लाख रूपये मैं देता हूं, मेरी तरफ़ से बच्चों को हदिया कर दो, कहने लगे, वादा करते हो? कहने लगा हां वादा करता हूं। कहने लगे अच्छा ऐसा

करो, जहां जहां से तुमने ज़ुल्म और रिश्वत से ये पैसा इकट्ठा किया है ना, उन लोगों को वापस कर दो, मेरे बच्चों को तुम्हारे पैसों की कोई ज़रूरत नहीं। फिर कहा मेरे बच्चों को बुलाओ, सबको बुला लिया।

तो उसके बाद इरशाद फ़रमायाः ऐ मेरे बेटो! मेरे सामने दो रास्ते थे, एक ये था कि मैं तुम्हारे लिए दौलत जमा करता, चाहे हलाल होती चाहे हराम होती, लेकिन उसके बदले में दोज़ख़ में जाता, दूसरा रास्ता ये था कि मैं तुम्हें तक़्वा सिखाता, अल्लाह से लेना सिखाता और खुद जन्नत में जाता, मेरे बच्चो! मैं तुम्हारा बाप दोज़ख़ की आग बर्दाश्त नहीं कर सकता।

लिहाज़ा मैं ने तुम्हें हराम नहीं खिलाया, न हराम जमा किया, मैं ने तुम्हें दूसरा रास्ता सिखा दिया है तक़्वा वाला, जब कभी ज़रूरत हो मेरे अल्लाह से मांगना, मेरे अल्लाह का वादा है وهو يتولى الصالحين कि मैं नेकों का दोस्त हूं, नेकों का वाली हूं, फिर अपने साले से कहा। मुसैलमा! अगर ये मेरे बेटे नेक रहे तो अल्लाह इन्हें ज़ाय नहीं करेगा और अगर ये नाफ़रमान हुए तो मुझे इनकी हलाकत का कोई ग़म नहीं है।

फिर इस ज़मीन व आसमान ने वो दिन देखा कि उमवी शहज़ादे, मुसैलमा की औलादें और सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक की औलादें, जो एक एक बच्चे के लिए उस ज़माने में दस दस लाख दिरहम छोड़ कर मरे, उनकी औलाद मस्जिद की सीढ़ियों पर भीख मांगा करती थी, जैसे अभी

जुमा के बाद भिखारी यहां भीख मांगेंगे और हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रह0 की औलाद एक एक मजलिस में सौ सौ घोड़े अल्लाह के नाम पर ख़ैरात किया करते थे।

अल्लाह को राज़ी करने का इनाम

मेरे भाइयो! अल्लाह ज़ल्ल शानहू ने नबियों के क़िस्से सुना कर अपने नबियों के वाक़िआ़त बतला कर पूरी उम्मते मुस्लिमा को ये बताया कि मैं जब किसी को पकड़ता हूं तो मेरे पकड़ने की बुनियाद उनके अस्बाब की कमी नहीं होती, बल्कि मेरे पकड़ने की बुनियाद उनके अन्दर में वो सिफ़ात की कमी होती है, जो सिफ़ात मेरी रहमत को खींचती है।

انی اذا اطعت رضیت जब तुम मेरे बन्दे बनते हो तो मैं राज़ी हो जाता हूं, واذا رضیت بارکت और जब मैं राज़ी होता हूं तो बरकतें उतारता हूं। ولیس لبرکتی نهایة मेरी बरकत की कोई इन्तिहा नहीं, واذا عصیت غضبت और जब तुम मेरे नाफ़रमान बनते हो तो मेरा गुस्सा वजूद में आता है। واذا غضبت لعنت और जब मैं गुस्से में आता हूं तो मेरी लानत बरस्ती है। وان اللعنة منی تبلغ السابع من الولد और मेरी लानत तुम्हारी सात पुश्तों तक भी फैलती चली जाती है। अ़ब कौन सी ताक़त है जो इस क़ौम को बचा सकती है?

मेरे भाइयो! कौन सी क़ुव्वत है जो उस कौम को बचा सकती है जिस पर अल्लाह की लानत पड़ रही हो और ये लानत इस लिए पड़ रही है कि ये अल्लाह के अम्र से बाग़ी

हैं और ये अल्लाह के नबी सल्ल० के तरीके के बाग़ी हैं अल्लाह ने क़ौमों को हलाक किया, बर्बाद किया, मेरे भाइयो! उनकी बद-आमाली की बुनियाद पर किया।

क़ारून से अल्लाह की मोहब्बत

जिस से अल्लाह का तअ़ल्लुक़, मोहब्बत, मारिफ़त निकल गई वो من سم الخياط सूई के नाके से भी तंग है, तो मरने से पहले अपने अल्लाह से जी लगा लें।

क़ारून ने मूसा अ़लैहिस्सलाम पर तोहमत लगाई, तो मूसा अ़लैहिस्सलाम रो पड़े सजदे में गिर गए, अल्लाह ने फ़रमाया ज़मीन तेरे ताबे है जो कहेगा वो करेगी।

तो मूसा अ़लैहिस्सलाम खड़े हुए ज़मीन से फ़रमाया! क़ारून को पकड़ लो......

ज़मीन ने पकड़ा तो अन्दर चला गया...... कहने लगा हाय मूसा! माफ़ कर दे, आपने फ़रमाया और पकड़ो तो और अन्दर गया, ऐ मूसा माफ़ कर दे, आपने कहा और पकड़ो वो कहता रहा, ऐ मूसा! माफ़ कर दे वो कहते रहे और पकड़ो यहां तक कि वो पूरा अन्दर गर्क़ हो गया।

अब अल्लाह की भी सुनो! अल्लाह ने फ़रमाया......!

ऐ मूसा! वो तुझसे ही माफ़ियां मांगता रहा मुझसे एक दफा ही मांगता तो मैं माफ़ कर देता!

आप अन्दाज़ा फ़रमाएं, ऐसे रहीम अल्लाह की हम नाफ़रमानी करें, कि जो क़ारून जैसे को माफ़ करने के लिए तय्यार बैठा है कि तौबा तो करे, जब फ़िरऔन गर्क़ हुआ,

तो उसने कलिमा पढ़ा जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम ने आगे बढ़ कर मिट्टी उसके मुंह में डाल दी कि कहीं अल्लाह उसकी तौबा क़ुबूल न करे।

जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम ने खुद हुज़ूर सल्ल0 की ख़िद्मत में अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब फ़िरऔन ने कलिमा पढ़ा तो मुझे डर लगा कि उसकी रहमत इतनी वसीअ़ है कि कहीं उसकी तौबा क़ुबूल न हो जाए, और उसके ज़ुल्म को देख कर दिल में ये था कि ये ख़बीस कहीं तौबा करके न मर जाए। मैं ने मुंह बन्द कर दिया कि तौबा न कर सके।

जिस रब की रहमत इतनी वसीअ़ हो उसके सामने झुकना ही तो इन्सानियत की मेराज है, न ये कि उलटा फलसफ़ा चूंकि मेहरबान है लिहाज़ा जो मर्ज़ी करते फिरो, ये भी कोई फ़लसफ़ा है कुत्ता आपकी रोटी खाए तो गर्दन झुका दे, और मैं रब का रिज़्क़ खाऊँ तो गर्दन उठाऊँ, तो क्या मेरा अख़्लाक़ कुत्ते से भी नीचे चला जाए, घोड़े को चारा डालो तो वो सर झुका के सारी मंज़िलें तय करने को तय्यार हो जाए, और अल्लाह मुझे दे और मैं गर्दन अकड़ा लूं ये भी कोई तरीक़ा है।

दाढ़ी नहीं कट सकती, धोबी का वाक़िआ़

साहनेवाल में एक धोबी के बेटे ने चिल्ला लगाया उसकी मंगनी हुई थी। गांव में शादी की तारीख़ तय होने के बाद वो चिल्ले के लिए चला गया, जब चिल्ले से वापस

आया तो दाढ़ी रखी हुई थी। बारात दुल्हन के घर पहुंच गई, हमारे यहां दस्तूर है कि शादी में ज़मीनदार भी शरीक होते हैं। तो वहां इस गांव का ज़मीनदार भी शादी पर मौजूद था, धोबियों के घर में बेटी की शादी में शरीक था।

जब बारात पहुंची तो हंगामा खड़ा हो गया कि जब हमने दुल्हा को देखा था तो उस वक़्त तो उसकी दाढ़ी नहीं थी, अब उसकी दाढ़ी है दाढ़ी मुंडाओ तो निकाह कर देंगे। तो सब बारात वाले मां क्या, भाई क्या, बाप क्या, चचा क्या, सब कहने लगे :

बेटा इनकी बात मान ले कोई बात नहीं, बाद में रख लेना, हमारी इज्ज़त का सवाल है।

और वो कहने लगा :

एक पा से थाडी इज्ज़त है और एक पा से रसूल दी इज्ज़त ऐ हं तुसां आपे दसो में की करां। (एक आप की इज्ज़त है और एक हमारे रसूल सल्ल0 की इज्ज़त है)।

लेकिन जब आँखों पर पर्दे पड़ जाते हैं तो दिल पत्थर हो जाते हैं, क्या करूं? कैसे समझाऊँ कहां से अल्फ़ाज़ लाऊँ जो दिल में उतर जाएं ये धोखा है जिस पे आप चल रहे हैं। तबाही की ज़िन्दगी है जिसको आपने इख़्तियार किया हुआ है, इसका अंजाम हलाकत है।

तो सब कहने लगे कोई बात नहीं पुत्तर अल्लाह बड़ा ग़फ़ूरुर्रहीम है, अल्लाह बड़ा मेहरबान है, कोई बात नहीं मना दे, अब सब उस पर चढ़ गए। उसने कहा गर्दन उतार दो

गर्दन कट सकती है, लेकिन दाढ़ी नहीं कट सकती। लड़की वालों ने कहा हम लड़की नहीं देते। उसने कहा न दो, मैं अल्लाह के रसूल को नाराज़ नहीं कर सकता, सारे जहान को आग लगा सकता हूं।

हंगामा बरपा हो गया और ये सारा मन्ज़र देखने के बाद अचानक ज़मीनदार खड़ा हुआ और कहा कि सारी बारात लें के मेरे बोहे ते आजाओ। मैं खुद ज़मीनदार का बेटा हूं धोबी दे पुत्तर नू धी देवना सूखा कम इं ऐ। सारी बारात उसने अपने डेरे पर बुलाई और अपनी बच्ची का नक़द निकाह कर के साथ भेज दिया।

कोई है ऐसा मेहरबाना! ज़रा दिखाओ तो सही

हश्र के मैदान में दो आदमियों को अल्लाह दोज़ख़ से निकालेगा, फिर फ़रमाएगा। चले जाओ वापस, एक भागेगा, और जाकर छलांग लगा देगा, दूसरा चलेगा, पीछे मुड़ मुड़ कर देखेगा, अल्लाह दोनों को बुलालेगा!

अरे भाई तूने क्यों आग में छलांग लगाई......? कहेगाः या अल्लाह! सारी ज़िन्दगी तेरी नाफ़रमानी की, जिसकी वजह से आग देखी, मैं ने सोचा ये एक हुक्म मान लूं, शायद इसी पे मेरा कम्म बन जाए।

दूसरे से पूछा, अरे तू क्यों पेछे मुड़ के देखता था? वो कहेगाः या अल्लाह! जब एक दफ़ा तूने निकाल लिया, तो फिर तेरी सख़ावत की कहानियां आसमानों में मश्हूर हैं, अब मैं इन्तिज़ार में था कि कब तेरी सख़ावत मुतवज्जेह हो और

मेरी बख़्शिश का फ़ैसला हो।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे! चलो तुम दोनों जन्नत में चले जाओ।

मेरे भाइयो! इतना बड़ा ख़ालिक़ व मालिक कहे मुझसे अपना तअ़ल्लुक़ जोड़ो, हम अपनी औक़ात तो देखें, शीशे के सामने अपने आपको न तोला करें, शीशा बड़ा धोखा देता है, बैतुलख़ला में बैठ कर अपनी औक़ात को तोला करें कि मेरी क्या औक़ात है?

शीशा धोखा देता है...... दफ़्तर धोखा देता है
गाड़ी धोखा देती है...... ज़ेवर धोखा देता है
माथे का झूमर धोखा देता है......
पचास पचास हज़ार के जोड़े धोखा देते हैं।

बैतुल ख़ला में बैठ कर अपनी हक़ीक़त पर ग़ौर करें कि मैं क्या हूं? फिर इतना बड़ा बादशाह कहे कि मुझसे यारी लगा, अगर दुनिया के गन्दे बादशाहों से दोस्ती लगाना पड़े तो हज़ारों पापड़ बेलने पड़ते हैं, और वो ऐसा मेहरबान है कि एक पल में यारी लगाने को तय्यार है सारे गुनाह माफ़ करने को तय्यार है।

नमाज़ियों की पाँच क़िस्में

इब्ने क़य्यिम रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने इरशाद फ़रमाया अपनी किताब मदारिजुस् सालिकीन में लिखा है कि नमाज़ी पाँच तरह के हैं।

एक नमाज़ी वो है जो नमाज़ में सुस्ती करता है,

बेनमाज़ी की बात नहीं हो रही है, जो सुस्ती करने वाला है, कभी पढ़ता है, कभी छोड़ता है, ये है معاقب जहन्नम में जाएगा, ये जहन्नम में जाएगा। नमाज़ में सुस्ती करने वाला जहन्नमी है :

فويل للمصلين वैल है नमाज़ियों के लिए,

बेनमाज़ी की बात नहीं हुई, वैल है नमाज़ी, कौनसा नमाज़ी? الذين هم عن صلاتهم ساهون जो नमाज़ों में ग़ाफ़िल हैं।

बेनमाज़ी पता नहीं कहां जा के मरेगा।, गिरेगा, जो नमाज़ में ग़ाफ़िल हैं, उनके लिए वैल है, और वैल की एक तफ़सीर ये है कि ये जहन्नम की एक वादी है, जिसका एक एक बिच्छू ख़च्चर के बराबर बड़ा है। जब वो एक दफ़ा डस्ता है तो चालीस साल वो आदमी तड़पता है, तड़पता है, तो जो बेनमाज़ी है वो कहां जाएगा, तो वो नमाज़ी जो नमाज़ में कभी हाज़िर, कभी ग़ायब, कभी हाज़िर कभी ग़ायब, ये दोज़ख़ी हैं मुअज़्ज़ब, मुअक़्क़ब।

दूसरे दरजे के नमाज़ी, मुहासिब, ये कौनसा है जो पाँच वक़्त बाक़ायदा पढ़ता है, पाँच वक़्त बाक़ायदा जमाअ़त, ये हमारी सफ़ है लेकिन किसी एक नमाज़ में भी उसे अल्लाह का ध्यान नहीं आता, किसी नमाज़ में भी उसे नहीं पता कि मैं कहां खड़ा हूं? ये कौनसा है? ये है मुहासिब, मुहासिब।

उसकी कान खिंचाई होगी, उसकी डाँट डपट होगी, क्यों? आप मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हैं, तो मैं आपके सामने बात कर रहा हूं, अगर आप ऊपर देखना शुरू कर देंगे, तो

मेरा बयान फ़ौरन ख़त्म हो जाएगा, मैं आपकी तरफ़ मुतवज्जेह हो जाऊँ आप खिड़कियां देखना शुरू कर दें तो मुझे तकलीफ़ होगी, तवज्जोह हट गई, बेअदबी है।

तीसरे दरजे का नमाज़ी, जो कोशिश करता है, अल्लाहु अकबर, कभी दर के सामने कभी घर के सामने, कभी अल्लाह के सामने, कभी ख़ल्क़ के सामने, तो उसको अल्लाह 33 नम्बर पर पास रक देगा।

अच्छा चलो! छोड़ दो, कोशिश तो की, जाने दो रिआयती पास, जेसे हम अपने मदरसों में किसी को फ़ेल नहीं करते, रिआयती पास, चलो बाई पास, पन्द्रह नम्बर पर पास, 33 नम्बर पर स्कूल व कालेज वाला पास, ये 33 नम्बर वाले नमाज़ी हैं।

चौथे दरजे का नमाज़ी वो है जब अल्लाहु अकबर कहता है तो फिर अल्लाह के सिवा सबसे कट जाता है, बस अल्लाह तआला में खो जाता है, अल्लाह का हो जाता है, अल्लाह में खो जाता है, ये है जिसको कहते हैं, माजूर, माजूर, जिसे नमाज़ का अज्र मिलेगा, जिसकी नमाज़ पर वादे पूरे होंगे, जिसकी नमाज़ पर फ़ैसले बदलेंगे ये चौथे दरजे की नमाज़ है, चौथे दरजे की।

पाँचवें दरजे का नमाज़ी, जब वो कहता है अल्लाहु अकबर, तो नमाज़ उसकी आँखों की ठंडक बन जाती है।

جعلت قرة عينى فى الصلوٰة

मेरी आँखों की ठंडक नमाज़।

पाँचवीं की हम निय्यत करेंगे तो तब शायद तीसरे दरजे पर पहुंच पाएं।

क़यामत की हौलनाकियां

ان یوم الفصل کان میقاتا वो मुतअय्यन दिन आ गया। یوم ینفخ فی الصورا एक आवाज़ पड़ेगी।

فتاتون افواجا तुम फ़ौज दर फ़ौज आओगे।

وفتحت السماء आसमान के दरवाज़े खुलेंगे।

فکانت ابوابا वो दरवाज़े बन जाएंगे।

وسیرت الجبال فکانت سرابا

पहाड़ फट कर रेत बन जाएंगे।

ان جهنم کانت مرصادا जहन्नम भी आ जाएगी।

وازلفت الجنة للمتقين जन्नत भी आ जाएगी।

نضع الموازين القسط तराज़ू भी आ जाएगा।

وان منکم الا واردها पुल सरात भी आ जाएगा।

وجاء ربک والملک صفا صفا अल्लाह का अर्श भी आ गया। ويحمل عرش ربک فوقهم يومئذ ثمانيه अब अर्श को आठ फ़रिश्तों ने थामा हुआ है और सबके सरों पर अल्लाह का अर्श छा जाएगा। जब अल्लाह का अर्श छा जाएगा तो फिर सारी कायनात बेहोश हो कर गिर जाएगी।

क़यामत के झटके

क़यामत के दिन एक बेहोशी क्यामत की होगी, जब इस्राफ़ील सूर फूंकेंगे और सब मर जाएंगे, इन्सान ख़त्म हो

जाएगा और रूहें बेहोश हो जाएंगी, जज़ा, सज़ा का निज़ाम मुअत्तल हो जाएगा। अंबिया, सिद्दीक़ीन, काफ़िर, मुनाफ़िक़ीन, सब बेहोश हो जाएंगे। يخرجون من الاجداث क़ब्रों से निकलेंगे, फिर जब अल्लाह का अर्श आएगा तो फिर बेहोश हो जाएंगे और चालीस साल के बाद सबसे पहले हज़रत मोहम्मद सल्ल० को होश आएगा। फिर बाक़ी लोगों को होश आएगा।

फिर अल्लाह तआला फ़रमाएंगे। یا عبادی ऐ मेरे बन्दो! انی انصت لکم منذ ان خلقتم الی یوم احیینکم मैं ख़ामोश रहा, मैं तुम्हारी सुनता रहा और तुम्हें देखता रहा, कुछ नहीं बोला, अब ख़ामोश रहो और देखते रहो क्या होने वाला है هٰذه اعمالکم ये देखो ये तुम्हारे किए हुए आमाल हैं। इसमे सच और झूठ, ज़ालिम और मज़लूम हर बात मौजूद है, किसकी हिमायत की, क्या जुर्म किया, وکل انسان الزمنه طائره فی عنقه अल्लाह पाक उनकी गर्दन में डाल देगा, देखो इसे اقرا کتابک अपनी किताब पढ़ लो کفیٰ بنفسک الیوم علیک حسیبا अल्लाह पाक खुद गवाह है, तो ये जज़ा सज़ा का दिन है।

जब आप अज़ान देंगे, जहां जहां तक आपकी अज़ान की सदा जाएगी क्यामत के दिन वहां का हर हर पत्थर आपकी गवाही देगा, हर दरख़्त और पत्ता गवाही देगा, हर ईंट और रोड़ा गवाही देगा। जहां सजदे के लिए सर रखा जाता है तो वहां ज़मीन तहतस्सरा तक पाक हो जाती है।

सजदा करने का इनाम

हदीस में आता है कि जब बन्दा ज़मीन पर सर रखता है तो अल्लाह तआला के क़दमों में सर रखता है, जब अल्लाहु अकबर कहता है तो ज़मीन व आसमान का सारा ख़ला नूर से भर जाता है और अर्श के पर्दे उठ जाते हैं, जन्नत के दरवाज़े खुल जाते हैं, और जन्नत की हूरें दरवाज़े खोल कर नमाज़ी को देखती हैं।

और इधर जहन्नम पुकार रही है، اللهم بعد قعرى، وعظم جمرى، واشتد حرى ऐ अल्लाह मेरे अंगारे बड़े मोटे हो गए, मेरी ग़ारें बड़ी गहरी हो गईं, मेरी आग बड़ी तेज़ हो गई, سلاسلى मेरी ज़ंजीरें, واغلالى मेरे तौक़ وحميمى मेरे खौलते पानी وغساقى मेरी कांटेदार झाड़ियां, وغسلينى ।

बदकार मर्द और औरतें, फ़ाहिशा मर्द और फ़ाहिशा औरतों के ज़ख़्मों से जो गन्दगी इकट्ठी होगी वो अल्लाह खौलाएगा, फिर वो शराबियों को पिलाएगा और फ़ाहिशाओं को पिलाएगा और फ़ाहिशों को पिलाएगा, ये غسلين है ये वो गंदगी है जो जिस्म से निकलेगी, पीप, ख़ून और पसीना और लोथड़े और बोटियां और गन्द ये सब एक हौज़ मे जमा कर के फिर उसे खौलाया जाएगा फिर उसे प्यालों में भरा जाएगा।

कहा पिलाओ सबसे पहले शराबियों को पिलाया जाएगा, फिर नाफ़रमानों को पिलाया जाएगा, वो कहेगी या

अल्लाह عجل الی باهلی ऐ अल्लाह जल्दी भेज दे, अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, لكليهما ملاكما ठहरो ठहरो तुम दोनों को मैं ने अभी भरना है, तू भी ऐ दोज़ख़ भरेगी, तू भी ऐ जन्नत भरेगी।

तुर्की में ज़लज़ला आया, चालीस हज़ार आदमी ज़मीन के अन्दर चले गए, ज़लज़ला तो फ़रानसिस्को में आना चाहिए जो सबसे बड़ा बेहयाई का अडडा है और जहां दुनिया का सबसे ज़्यादा हराम काम हो रहा है, ये छोटा मुजरिम है इसलिए दुनिया में ही ज़लज़ला आ गया वो बड़ा मुजरिम है इसलिए ढील दे दी और इकट्ठी सफ़ाई होगी। ईरान में ज़लज़ला अया, मुसलमानों पर आफ़त आ गई, इसलिए कि छोटा मुजरिम है।

मिसाली लड़की

मोहम्मद बिन हसन बुग़दादी रह0 बाज़ार में गए एक कनीज़, लौंडी फ़रोख़्त हो रही थी उसको ख़रीद कर ले आए। लोगों ने कहा पागल सी है उन्हों ने कहा कोई बात नहीं, रात को आधी रात के बाद आँख खुली तो देखा, वो लौंडी मुसल्ले पे बैठी थी और अल्लाह से लौ लगा रही थी, आँसू बह रहे, सीना घुट रहा और अल्लाह को कह रही है।

ऐ अल्लाह वो मोहब्बत जो तुझे मुझसे है

उलट कह रही है, कहना तो ये चाहिए था कि वो मोहब्बत तो मुझे तुझसे है, उलट कह रही थी वो मोहब्बत जो तुझे मुझसे है, मैं उसके वास्ते से तुझसे सवाल करती हूं,

तो उन्हों ने टोका कि ऐ लड़की क्या कहती है, यूं कह वो मोहब्बत जो मुझे तुझसे है, कहने लगीः

चुप करो! अगर उसे मुझसे मोहब्बत न होती तो मुझे यहां न बैठाता, तुझे वहां न सुलाता, मुझसे मोहब्बत है तो मेरी नींद से मुझे उठा कर मुसल्ले पर खड़ा कर दिया। फिर कहने लगी :

ऐ अल्लाह! अब तो तेरी मेरी मोहब्बत का राज़ फ़ाश हो गया, लोगों को पता हो गया, लोगों को पता चल गया कि हम मुहिब्ब और महबूब हैं, ऐ अल्लाह! अब मुझे अपना विसाल दे दे, मुझे अपना मिलाप दे दे, मुझे अपने पास बुला ले! ये कह कर चीख़ मारी और जान निकल गई, फरमाते हैं, मुझे बड़ा ग़म हुआ मैं सुबह उठा उसका कफ़न लेने गया कफ़न ले कर आया तो देखा कि सफ़ेद कफन चढ़ा हुआ है और उसपर नूरानी सतर से लिखा हुआ।

الا ان اولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون

सुन लो! अल्लाह के दोस्तों को न दुनिया में ग़म है न आख़िरत मे ख़ौफ़ है।

नमाज़ की अजीब बरकात

जितना लम्बा कोई क़्याम करेगा उसकी मौत की सख़्ती उतनी आसान होती चली जाएगी। लम्बी नमाज़ मौत की सख़्ती को धो देती है, और रुकूअ़ करेगा तो जितना उसका वज़न है उतना सोना सदक़ा करने का सवाब मिलेगा और जब रुकूअ़ से खड़ा होता है तो अल्लाह मोहब्बत की निगाह से उसे देखता है।

जब सजदे में जाता है तो सारे गुनाह उसके धुल जाते हैं, जब अत्तहिय्यात पढ़ता है तो साबरीन का अज्र मिलता है, जब नमाज़ में दरूद पढ़ता है दस दफ़ा अल्लाह दरूर भेजता है, जब सलाम फेरता है तो गुनाहों से पाक हो जाता है हमे इतनी बड़ी दौलत मिली, जब कोई तकलीफ़ आए तो नमाज़ पढ़ो।

दुआ की बरकत

हुज़ूर सल्ल0 ने लशकर रवाना किया क़हत का ज़माना सबको थोड़ा थोड़ा तोशा खुद दिया, हदीर रज़ि0 एक सहाबी हैं उनको देना भूल गए, उन्हों ने आके कहा नहीं! कि मुझे तो दिया नहीं मुझे भी तो दें, चुप कर के चल पड़े। जब जरफ़ पार कर गए तो कहने लगे :

ऐ मेरे मौला! तेरे नबी ने दिया नही, मैं नें मांगा नहीं, तू तो जानता है, न मेरे पास खाना है, न दाना है, अब मेरा तू ही काम करेगा, मेरी भूख का तू सामान बन, سبحان الله، الحمد لله، الله اكبر، لا اله الا الله यही मेरा खाना है, यही मेरा तोशा हैय यही मेरा ज़ादे राह है।

ये कहते जा रहे, और चले जा रहे कहते जा रहे, और चलते जा रहे, जिसके लिए किया है वो तो देख रहा है कि ये हदीर रज़ि0 क्या कह रहा है? अर्शो पर हरकत हुई जिब्राईल अलैहिस्सलाम भागे आए।

या रसूलुल्लाह सल्ल0 वो हदीर रज़ि0 तो अल्लाह को पुकार रहा है, उसकी पुकार ने तो अर्श हिला दिया है, उसको आप सल्ल0 ने तोशा नहीं दिया आदमी पीछे भगाएं,

तो आप सल्ल0 ने एक आदमी पीछे दौड़ाया, कहा भागो, और ये उसको दो और माज़रत भी करो क्या कहता है?

सुनना! अल्लाह के रसूल सल्ल0 भूल गए थे अब आपको पेश किया है। फिर मुझे बताना क्या कहता है, वो गए ऊँटनी को दौड़ाया, उनको जा मिले, भाई अल्लाह के रसूल सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम0 भूल गए थे, अब आपको पेश किया है, और आसमान की तरफ़ निगाह उठाई।

الحمدلله الذی ذکرنی من فوق عرش و من فوق سبع سمٰوات

ऐ मेरे मौला! तेरे क़ुर्बान जाऊँ, तूने मुझे अर्श पे याद रखा, तूने मुझे अर्शों पे याद रखा, رحـم بـی وجـوعی तूने मेरी भूख पे रहम खाया, तूने मेरे ज़ोअ़फ़ पे रहम खाया।

اللهم كمالم تنس هدير ليجعل هديرلا ينساك

ऐ मेरे मौला! जैसे तू हदीर रज़ि0 को नहीं भूला हदीर को भी तौफ़ीक़ दे कि तुझे न भूले यूं तब्लीग़ चली है यूं जिहाद का झण्डा उठा है।

जान पे गुज़र गई, माल लुट गए, घर छूट गए, आरों से चीरे गए, सूलियों पर चढ़ गए। बोटी-बोटी हो गई तब जाके अल्लाह का कलिमा दुनिया में गूंजा है।

नमाज़ों को सीखें

मेरे भाइयो! ये सीखना पड़ेगा, नमाज़ पढ़िएं, ये नमाज़ ऐसे नहीं आएगी मेहनत करने से ये नमाज़ पैदा होगी, इतनी जाज़बियत है नमाज़ में, कि एक शख़्स कहता है कि में हरम शरीफ़ में बैठा हुआ था, हज़रत अ़ली रज़ि0 आए जूता हाथ में, दाढ़ी से वज़ू का पानी टपक रहा है, जूते को रखा,

नमाज़ की निय्यत बांधी, कहता है मैं देखता रहा कि ये कहां रुकूअ करते हैं, जो गाड़ी चली चलती रही हत्ता कि والناس पे जा कर रुकूअ़ किया एक रकअ़त में पूरा कुरआन, हमें तो قل هو الله احد भी लम्बी नज़र आती है।

तो नमाज़ सीखो भाइयो! लोग चारों रकअ़तों में قل هو الله احد पढ़ रहे हैं, चार सूरतें तो याद कर लें ताकि हर रकअ़त में अलग अलग सूरत पढ़ ली जाए एक ही सूरत को चार रकअ़त मे पढ़ना मकरूह है, नमाज़ तो हो जाएगी लेकिन कम अज़ कम चार सूरतें याद कर लें।

बेनिशान मंज़िल के मुसाफ़िर

मेरे भाइयो! आज के मर्दों का ये सबसे बड़ा मसला है कि हम अल्लाह की ज़ात को मक़सूद बना कर ज़िन्दगी नहीं गुज़ार रहे हैं, हम तब्लीग़ की मेहनत में यही अ़र्ज़ कर रहे हैं, सिर्फ़ ब्यान सुनाने के लिए इकट्ठा नहीं करते, ब़ल्कि मक़सद बदलवाने के लिए इकट्ठा करते हैं, कि हम अपने मक़सद से भटकें नहीं, बल्कि बड़े दूर चले गए हैं, राह ऐसा भटके कि न राह न राही रहा, रहबर रहा न मंज़िल रही, सामान भी लुटा क़ाफ़ले से भी बिछड़े, न आगे का पता न पीछे का पता, हम उस मुसाफ़िर की तरह हैं जो माल व मता, भी गुम कर चुका, और क़ाफ़ले से भी बिछड़ चुका है।

आगे रात तारीक है, सफ़र बड़ा लम्बा है, मंज़िल का पता नहीं, कटी पतंग की तरह, उसे नहीं पता कि किस तार मे फंसना है, किस झाड़ी में उलझना है किस दरख़्त में अटकना है कौन से कांटे ने मेरे सीने को चीरना है, इस

अंधी इंसानियत को अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जेह करना, ये तब्लीग़ की मेहनत का मक़सद है।

हमारे मर्दों और औरतों का नशा उतरे, और वो अल्लाह की ज़ात को मक़सद बना कर ज़िन्दगी गुज़ारना सीखें, अल्लाह पर मरना सीखें, अल्लाह पर मिटना सीखें अल्लाह के लिए जीना सीखें, ख़ुशी वो हो जो अल्लाह को पसन्द हो, ग़म वो हो जो अल्लाह को पसन्द हो, इज़हार भी हो वो जो अल्लाह को पसन्द हो, इख़्फ़ा भी वो हो जो अल्लाह को पसन्द हो, हम लोगों की नज़र में जंच जाएं, इससे हमारा मसला हल नहीं होगा, याद रखना अल्लाह की नज़र में जचेंगे, तब मसला हल होगा।

दुलहन और सहेलियों की गुफ़्तगू

हम लोगों की नज़र में जच जाएं इससे हमारा मसला हल नहीं होगा, याद रखना अल्लाह की नज़र में जचेंगे तब मसला हल होगा। एक लड़की दुल्हन बनाई जा रही, सजाई जा रही है, उसकी सहेलियां कहने लगीं कि बहुत ख़ूबसूरत लग रही हो, वो रोने लगी, उसने कहा तुम्हारी नज़रों में जचने से मेरा काम नहीं बनेगा, मैं जिसके यहां जा रही हूं जब तक उसकी नज़रों में न जच जाऊँ उस वक़्त तक मेरा मसला हल नहीं होगा।

कामयाबी का मेयार

मेरे भाइयो और बहनो! ये अंधी दुनिया है, ये दीवानों की दुनिया है, ये अहमक़ों की दुनिया है, ये जाहिलों की दुनिया है, उनकी नज़रों में जंच जाने से न किसी मर्द का

काम बनेगा, न किसी औ़रत का काम बनेगा, बस अल्लाह की नज़र में जच जाने से हमारे काम बनेंगे, फिर चाहे,

☆ कोई हमें जाने या न जाने......
☆ कोई हमें माने या न माने......
☆ कोई हमें देखे ये न देखे......
☆ कोई हमें पूछे या न पूछे......
☆ कोई हमें चाहे या न चाहे......
☆ कोई हमें क़रीब करे या दूर करे......
☆ कोई मोहब्बत करे या नफ़रत करे......
☆ कोई सलाम करे या ठुकरा दे......

हमारा मसला ऊपर से हल हो चुका हमारा काम बन गया है, हम अल्लाह को राज़ी कर चुके ये मक़सूद है, ये मतलूब है, हर फैक्ट्री वाले को हर मिल वाले को, हर रेढ़ी वाले को, हर ग़रीब को, हर अ़मीर को, हर बूढ़े को, हर जवान को, हर मर्द को, हर औ़रत को ये जान लेना चाहिए कि ज़िन्दगी का मक़सूद ये है कि उसके दिल व दिमाग़ में अल्लाह और उसका रसूल रच जाए।

अल्लाह की मोहब्बत में रोने की लज़्ज़त

मेरे भाईयो! अल्लाह की क़सम हम लुटे हुए मुसाफ़िर हैं हम लुटे हुए राही हैं हमें पता नहीं कि लज़्ज़त किसे कहते हैं जिन्दगी किसे कहते हैं जो रोटी ख़ाने की लज़्ज़त उठाता हो तो उसे क्या ख़बर कि जिक्र की लज़्ज़त क्या है, जो नज़र उठाने की लज़्ज़त जानता हो तो उसे क्या ख़बर कि नज़र झुकाने की लज़्ज़त क्या है? जिस शख़्स को नमाज़ की

लज़्ज़त महसूस नहीं? उससे भी बड़ा कोई महरूम होगा? हाए हाए करोड़ों की आबादी में कोई ऐसा नज़र आए जिसको नमाज़ की लज़्ज़त नसीब हो।

ये तो हम नमाज़ पढ़ने वालों पर रोते हैं जो नमाज़ नहीं पढ़ते हैं उनपर ख़ून के आँसू रोएं तो भी कम है, जो नमाज़ पढ़ते हैं उनहोंने कभी बैठ कर सोचा है कि ऐ मौला तेरी मोहब्बत का सज्दा तुझे नहीं दे सका तेरे तअ़ल्लुक़ की एक रकअ़त भी नहीं पढ़ सका ऐ अल्लाह अब तू आ जा।

हर तमन्ना दिल से रुख़सत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़लवत हो गई

शेख़ अ़ब्दुलक़ादिर जीलानी रह० और डाकू की तौबा

शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह० की तलाश में निकले ग्यारह बारह वर्ष की उम्र है, क़ाफ़ले पर डाका पड़ता है, और उन सबके माल लूट लिए जाते हैं, और एक डाकू सरे राह उनसे कहता है, अरे बच्चे! तेरे पास भी कुछ है? उसके दिल में आया कि इस मासूम के पास क्या होगा, और वो बच्चा बड़े आराम से कहता है :

मेरे पास चालीस दीनार हैं और चालीस दीनार के आज के ज़माने में लाखों रूपये बनते हैं,

कहने लगा कहां हैं? कहा ये देखो अन्दर सिले हुए हैं, उस ज़माने में कुरते के आस्तीन चौड़े चौड़े और खुले होते थे, कहने लगाः बेटा! अगर तू न बताता तो कोई यकीन न

आता और मुझे कोई पता न चलता।

कहा मेरी मां ने कहा था, हमेशा सच बोलना, और कभी झूठ नहीं बोलना, कहने लगा अच्छा ये बात है, और आपको पकड़ कर सीधा सरदार के पास ले गया, और कहने लगा इस बच्चे की बात सुनें।

डाकू ने सारा किस्सा सुनाया तो सरदार कहने लगा।

अरे बेटा! तूने पैसे क्यों न बचा लिए तू देखता नहीं कि हम तो लूटने वाले डाकू हैं और अगर तू न बताता तो तेरी शक्ल ऐसी मासूम व ख़ूबसूरत है कि हम तेरी तलाशी भी न लेते। फ़रमायाः

मेरी मां ने कहा था बेटा हमेशा सच बोलना।

तो डाकुओं के सरदार की चीख़ निकली और कहने लगाः ऐ मेरे मौला! ये मासूम हो कर मां का ऐसा फ़रमांबरदार, और मैं आ़क़िल व बालिग़ हो कर तेरा नाफ़रमान, या अल्लाह मुझे माफ़ कर दे।

मां बैठी है जीलान में और तौबा का ज़रिआ़ बन रही है, बुग़दाद के क़रीब डाकुओं के इतने बड़े सरदार और उनके पूरे गिरोह की, ये है तर्बियत कि बेटा हिसाब होना है ज़बान सीधी रखना, बच्चों को क्यामत का यक़ीन दिलाओ, उनके दिल में हिसाब व किताब का डर पैदा करो।

हज़रत सुफ़्यान सौरी की तर्बियत और वालिदा

हज़रत सुफ़्यान सौरी रह0 अपनी वालिदा से कहने लगे मुझे अल्लाह के नाम पे वक़्फ़ कर दो और वक़्फ़ का

मसला और हुक्म ये है कि जो चीज़ एक दफ़ा वक़्फ़ कर दी जाए उसे वापस नहीं किया जा सकता। मां ने कहा चलो जाओ तुझे मैं ने वक़्फ़ कर दिया। हज़रत सुफ़यान सौरी रह० घर से जो निकले तो उन्नीस साल के बाद वापस आए, उन्नीस साल के बाद, भाई हम तो उन्नीस साल के लिए तश्कील ही नहीं करते हमारी तो लम्बी तश्कील एक साल की होती है। पहले डेढ़ साल थी फिर हमारे हज़रात ने एक साल कर दी। सात महीने, चार महीने, चालीस दिन। तो वो वापस आए उन्नीस साल के बाद रात को घर पहुंचे, दरवाज़े पर दस्तक दी तो अन्दर से मां ने पूछा कौन हो? उन्हों ने जवाब दिया आपका बेटा सुफ़यान हूं, जिस मां को उन्नीस साल के बाद बच्चे की आवाज़ सुनाई दे उस मां की ख़ुशी का क्या हाल होगा, कैसी बेक़रारी होगी। कैसी तड़प होगी बच्चे को मिलने और देखने की।

लेकिन उस मां ने अन्दर से जवाब दिया बेटा मैं तुझे अल्लाह के नाम पर वक़्फ़ कर चुकी हूं और जो चीज़ वक़्फ़ कर दी जाए उसे वापस लेना बड़ी बेग़ैरती है तू यहीं से वापस चला जा और मैं क़्यामत के दिन तुझसे मुलाक़ात करुंगी, इससे पहले नहीं मिलुंगी। अल्लाहु अकबर! क्या मांए थीं कितनी अज़ीम माएं थीं। तो सुफ़यान सौरी के लिए मां ने दरवाज़ा नहीं खोला और कहा मैं वक़्फ़ कर चुकी हूं अब वापस नहीं होंगी बल्कि क़्यामत के दिन वापस लूंगी।

गुनहगार बन्दा! मेहरबान आक़ा!

एक बद्दू आया, या रसूलुल्लाह सल्लाहु अ़लैहि

वसल्लम बूढ़ा हो गया गुनाह करते करते, कोई गुनाह नहीं छोड़ा जो न किया हो, कोई नाफ़रमानी ऐसी नहीं जो छोड़ी हो, कोई कालक ऐसी नहीं जिसे मुंह पे न मला हो, अब बूढ़ा हो गया हूं क्या इस हाल में भी मेरी तौबा है? तो आप सल्ल० ने फ़रमाया : तेरा एक बोल तेरी ज़िन्दगियों की स्याही को धो देगा।

अल्लाह तुझे ताना नहीं देगा, बूढ़े अब क्यों आया है, जवानी में क्यों नहीं आया था, दाँत टूट गए, नज़र नहीं आता, चश्मे चढ़ गए, कानों में आले लग गए, लाठियां हाथ में आ गईं, अब आए हो तौबा करने कोई तौबा नहीं, नहीं नहीं मेरे नबी सल्ल० ने फ़रमाया :

ओ मियां! तू एक दफ़ा कहेगा या अल्लाह मेरी तौबा तो तेरा अल्लाह हर हाजत, हर उज्र, हर फ़ज्र जो कुछ तूने किया है अल्लाह ऐसे मिटा देगा कि तेरी दास्ताने हयात में एक गुनाह भी बाक़ी न छोड़ेगा।

भुलाता हूं फिर भी वो याद आते हैं

अबू रैहाना रज़ि० जेहाद के सफ़र में आए, घर में पहुंचे तो रात को इशा की नमाज़ के बाद बीवी से कहने लगे, दो नफ़ल पढ़ लूं, फिर बैठ के बातें करते हैं, दो नफ़ल الله اكبر अब वो बैठी हुई कि قل هو الله से रुकूअ़ कर देगा, लम्बे सफ़र से आया है, तो कोई बैठ के बात-चीत होगी। वो قل هو الله क्या वो तो الٓمٓ शुरू हो गया, चलते चलते चलते फजर की अज़ान हुई और अबू रैहाना ने सलाम

फेरा, तो बीवी गुस्से से बफर गई, مالنا منک نصیب मेरा हक़ कहां गया? تبعت واتعبتنی मुझे भी थकाया खुद भी थका, एक जुदाई का सदमा, एक क़रीब आके तड़पाया, मेरा हक़ कहां है।

कहने लगे माफ़ करना मैं भूल गया, कहा तेरा अल्लाह भला करे तू कैसे भूल गया? यहां तो चिल्ले मैं दो सौ मील दूर भी नहीं भूलती, ये एक कमरे में भूल गया, कैसे भूल गया? कहा! जब अल्लाहु अकबर कहा तो जन्नत सामने आ गई, तो सब भूल गया।

फ़िरऔ़न की बांदी का वाक़िआ़

फ़िरऔ़न जैसा मुतकब्बिर बादशाह हो, जो दुनिया का ऐसा हुक्मरां हो और कहे मैं ही रब हूं और कोई उसकी बात को चैलेंज न कर पाया हो, ऐसा बादशाह हो, उसके घर की दो कहानियां आपको सुनाता हूं, उसकी बांदी मुसलमान हो गई, उसकी दो बेटियां थीं।

फ़िरऔ़न ने उनको पकड़वा लिया, पहले आग जलाई ऊपर कढ़ाहा रखा, उसमें तेल डाल कर उसे खौलाया, कहा बोल अब क्या करेगी, मुझे रब मानती है कि मूसा के रब को रब मानती है। एक चीज़ मान ले, मुझे रब माने तो मुबारक, हर चीज़ दूंगा, नहीं तो तैय्यार हो जा, पहले तेरी बेटियां फिर तू, उसने कहा, दो हैं और होतीं तो वो भी कुर्बान कर देती, जो मर्ज़ी कर लो।

हमारी बहन पर्दा करने को तैयार नहीं, ये मां बच्चियां जलाने को तय्यार है, नौजवानों को भी औ़रतें बनने का

शौक़ है, सोने की जंजीरें गले में डाले हुए हैं, सोने की अंगूठिया, सजाए हुए हैं, भाई ये औरतों के लिए है मर्दों के लिए नहीं है, ये शौक़ आगे पूरे होने वाले वाले हैं।

कितनी माएं इस मजमे में बैठी हैं, आप तसव्वुर करें कि एक मां सामने बैठी है, दहकती हुई आग है और उसकी बच्ची को पकड़ा जाता है और वो कहती है अम्मां! मगर उसके बावज़ूद मां के अज़्म और इरादे में कोई तज़लज़ुल नहीं आता उसका एक बोल अपनी बच्ची की ज़िन्दगी बचा सकता है। यहां कुफ़्र का बोल बोल के आगे जाके तौबा कर ले उसके लिए जायज़ है, नहीं नहीं, एक मक़ाम आता है। ज़िन्दा रहने से मरना महबूब हो जाता है।

उन्हों ने उसके सामने टांगों से बच्ची को पकड़ा है, और वो तड़प रही है, मछली की तरह, और अम्मां अम्मां पुकार रही है, सारे दरबार पे सन्नाटा और मां एक सब्र की तस्वीर है, उसके सामने उसके सर को तेल में डाला जाता है और ऐसे वो तल जाती है जैसे मछली तली जाती है, और मां के पाय-ए से सबात में कोई लग़ज़िश नहीं आती।

जब उस मां के अन्दर से हाए निकली अल्लाह ने आँखों से पर्दा हटाया, उसने देखा मेरी बच्ची की रूह जा रही है और कह रही है अम्मां ठहरो, ठहरो, अभी जन्नत में इकटठे होने वाले हैं, बे-सब्री न करो, फिर छोटे बच्चे को पकड़ा, जो दूध पीता था, दूध पीता तो पराया बच्चा भी बहुत प्यारा लगता है, अपना बच्चा कैसे प्यारा नहीं होगा।

खींचा उसको गोद से, इस बेचारी को तो पता भी नहीं था, मेरे साथ क्या होनै वाला है? अगली को तो पता चल

गया था, वो तो अम्मां अम्मां पुकारी, ये तो ख़ाली रोने के सिवा कुछ नहीं कर सकी? और मां ने अपनी आंखों से मासूम जिगर को तलते हुए देखा।

फिर अल्लाह ने आँखों से पर्दा हटाया और फिर बच्ची की रूह को निकलते देखा और फिर वो बोली सब्र सब्र, जन्नत में इकट्ठे हो जाएंगे, जब उस मां को पकड़ने लगे तो उसने कहा मुझे पकड़ने की ज़रूरत नहीं मैं खुद ही कूद जाऊंगी, पर मेरी एक दरख़्वास्त है, फिरऔन ने कहा, क्या? कहा जब मैं भी जल जाऊँ तो हम मां बेटियों को जुदा न करना, उनकी हड्डियां झाड़ के ज़मीन में दबी दी गई।

जन्नत की ख़ूशबू

इस कहानी पर दो हज़ार वर्ष बीत गए, सुब्हें आई, शामें आई, मौसम बदले, रुत बदली, तूफ़ान उठे, आंधियां, बगोले आए, चालीस वर्ष और गुज़र गए, दस दस वर्ष और गुज़रे दो हज़ार पचास वर्ष गुज़रने के बाद हमारा नबी बैतुल मक़दिस से आसमान को चला, अल्लाह की मुलाक़ात को, तो नीचे से जन्नत की ख़ुश्बू उठी।

आपने पूछा जिब्राईल ये जन्नत की ख़ूशबू कहां से आ रही है? उन्हों ने अर्ज़ की या रसूलुल्लाह सल्ल0 फिरऔन की बांदी और उसकी बच्चियों की जहां हड्डियां दफ़न हैं ये वहां से आ रही है।

फ़िरऔन की बीवी का क़बूले इस्लाम

ये मन्ज़र देख कर फ़िरऔन की बीवी मुसलमान हो

गई कि कोई मां ऐसी ज़ालिम नहीं हो सकती, ये हक़ है जिसने ये सब कुछ करवा दिया, फिरऔ़न जो औरों को इब्रत दिला रहा था, उसके घर में कलिमा दाख़िल हो गया।

सबसे महबूब बीवी मुसलमान हो गई, امنا برب هارون و موسیٰ उन्हों ने कहा ये तो लेने के देने पड़ गए, तू क्या कर बैठी? उसने कहा बस मुझे समझ में आ गया, सच्चा दीन, वर्ना कोई मां ऐसा नहीं कर सकती और फिरऔ़न उससे मोहब्ब्त करता था।

उसकी वजह से मूसा अ़लैहिस्सलाम को छोड़ दिया था, बड़ा समझाया, न मानी, जेल में डाल दो, चली गई, फ़ाक़े दो, बर्दाश्त किए, दरबार में लाया गया, कौनसा दरबार? जहां आ़सिया का हुक्म चलता था, आज वो महरम से मुजरिम बन के खड़ी है, हाथ पांव बंधे हुए हैं उसने कहा मारो कोड़े उसका दिमाग़ ठिकाने आए।

और एक ज़न्नाटेदार आवाज़ से कोड़े उसकी कमर को सेंक रहे हैं, और अल्लाह की मोहब्बत में ख़ून की नदियां बह रही हैं, पांव तक ख़ून जा रहा है, वो कह रही हैं, فاقض ما انت قاض जो करना है कर ले अब हुकम नहीं टूटेगा, हम मेंहदी न छोड़ें वो जान छोड़ दें, हम बेपर्दगी न छोड़े वो ज़िन्दगी छोड़ दें।

हज़रत आसिया की आज़माइश व इनाम का वसीला

जब फिरऔ़न ने देखा हर हर्बा बेकार है, उसने कहा

सूली पे लटका दो, सूली क्या थी? हाथ में कील गाड़ कर लकड़ी के साथ जोड़ते थे, इस तरह पांव से कील लगा कर लकड़ी के साथ जोड़ते थे, और छोड़ देते थे, जब उसके हाथों में कील गाड़े गए, जिन हाथों ने कभी तिंका न टेढ़ा किया हो, उन हाथों में कील गड़ गए।

फिरऔ़न ने कहा : इस लकड़ी को नीचे लटका दो, और इसपर पत्थर रख दो, जिसके नीचे ये सिसक सिसक कर मरे, तो उस वक़्त ये औ़रत पुकार उठी, और ऐसा दुखड़ा सुनाया कि अल्लाह पाक ने उस दुखड़े को क़्यामत तक तारीख़ में भी रखा, हदीस में भी, क़ुरआन का हिस्सा बना दिया, क्यामत तक आसिया की कहानी सुनाई जाएगी।

رب ابن لی عندک بیتا فی الجنة و نجنی من فرعون و عمله و نجنی من القوم الظالمین.

मेरे मौला! अपने पड़ोस में घर दे, फिरऔ़न और उसकी ज़ालिम क़ौम से मुझे बचा ले।

इस दर्द से उन्हों ने ये दुआ़ मांगी कि अल्लाह ने क़बूल कर ली और अपने पड़ोस में घर भी दे दिया, हमारे नबी के लिए जन्नत में एक मुक़ाम है जिसका नाम वसीला है, ये अल्लाह के अर्श के बिल्कुल साथ है, जो यहां गया वो अल्लाह के सबसे क़रीब हो गया, जब हज़रत ख़दीजा रज़ि0 का इन्तिक़ाल हुआ, तो आपने कहा :

ऐ ख़दीजा! जब तू जन्नत में जाए तो अपनी सौकनों को मेरा सलाम कहना उन्हों ने कहाः मेरी सौकन? मैं तो पहली बीवी हूं, कहा :

नहीं नहीं, जन्नत में फ़िरऔन की बीवी आसिया से अल्लाह ने मेरा निकाह पढ़ दिया है और हज़रत ईसा अ़लैहि0 की वालिदा मरयम अ़लैहिस्सलाम से अल्लाह ने मेरा निकाह पढ़ दिया है।

मेरी बहनो! उन औ़रतों से हश्र के शौक़ रखो, ऐ मेरे भाइयो उन लोगों के साथ हश्र के शौक़ रखो, हम उनके पीछे जा रहे हैं जिनकी मंज़िल कोई नहीं गाना, बजाना, नाचना, पहनना इसी का नाम ज़िन्दगी है।

तो तब्लीग़ एक तर्बियती मेहनत है, जिसमें से गुज़र कर आख़िरत का एहसास पैदा होता है, कुछ अपने आ़माल की फ़िक्र पैदा होती है, अल्लाह के सामने खड़े होने का एहसास पैदा होता है, जिस मुसलमान को अल्लाह ने चुना है इस उम्मत में बनाया है, वो मुसलमान ज़ालिम नज़र आए, फ़ासिक़ नज़र आए, शराबी नज़र आए, जुवारी नज़र आए, ज़ानी नज़र आए, और बददियानत, ख़ाइन और राशी नज़र आए, कहीं न कहीं उसके अन्दर ईमान की रत्ती मौजूद है।

जिस दिन उसको कोई पानी लग गया, वो ऐसा हरा होगा कि बहार की बारिश भी ऐसी हरयाली नहीं लाती, जितनी तेज़ी से ईमान का दरख़्त बाहर निकलता है और सारे वजूद को सरशार कर देता है, इसलिए अल्लाह के नबी सल्ल0 का ये फ़रमान भी हैः

किसी मुसलमान को हक़ीर न समझो! चाहे कितना ही गिरा पड़ा क्यों न हो, चाहे वो अ़मल के लिहाज़ से, माल के लिहाज़ से कितना ही गया गुज़रा क्यों न हो, हक़ीर न

समझो, पता नहीं कब तौबा करके अल्लाह को मना ले, पता नहीं कब तौबा करके अल्लाह का कुर्ब हासिल कर ले। तो इसी लिए भाइयो! कुछ वक्त तब्लीग़ में दो, जिस से कि ये अन्दर का ईमान रोशन होगा, उसको जिला मिलेगा।

मेरे बन्दो! मैं तुमसे ग़ाफ़िल नहीं

मेरे भाइयो! अल्लाह तबारक व तआ़ला अपनी किताब में फरमाता है ولا تحسبن الله غافلا ऐ मेरे बन्दो! मुझे ग़ाफ़िल न समझो, मैं देख रहा हूं,

शराब पी रहे हो ...... ये भी देख रहा हूँ,
दूध पी रहे हो...... ये भी देख रहा हूँ,
नाच रहे हो...... ये भी देख रहा हूँ,
सजदा कर रहे हो...... ये भी देख रहा हूँ,
हलाल कमा रहे हो...... ये भी देख रहा हूँ,
हराम कमा रहे हो...... ये भी देख रहा हूँ,
शराब बेच कर पैसा कमा रहे हो ये भी देख रहा हूँ,

لا تاخذه سنة ولا نوم तेरा रब ऊँघता नहीं, सोता नहीं, لا يؤده حفظهما थकता नहीं, ولا تحسبن الله غافلا ग़ाफ़िल नहीं होता, وما كان ربك نسيا वो भूलता नहीं وما هم بمعجزين وما كان الله ليعجزه من شئ कायनात में कोई चीज़ तुम्हारे रब को आ़जिज़ नहीं कर सकती, उसकी ताक़त को रोक नहीं सकती, किसी चीज़ को छुपा नहीं सकती।

हिक़ारत से देखने पर अबू अ़ब्दुल्लाह की गिरफ़्त

अबू अ़ब्दुल्लाह जैसों को उठा के पटख़ दिया, मैं और आप क्या हैं, तीस हज़ार हदीसों के हाफ़िज़, लाखों इन्सानों का शैख़, शिब्ली और जुनैद जैसे जिसके सामने अत्तहिय्यात की शक्ल में बैठे हों अपनों को नहीं हिक़ारत से देखा, ईसाइयों को हिक़ारत से देखा, ईसाइयों को अल्लाह के वास्ते हिक़ारत से देखने से बचना किसी को हक़ीर न समझना।

किसी पे तब्सरे न करना कि उसका दिल दुखे, किसी की पगड़ी न उछालना, ईसाइयों को देखा, ये पत्थरों को पूज रहे हैं, उन्हें ख़बर नहीं कि एक अल्लाह है, पत्थरों को पूज रहे हैं, आवाज़ आई, तू क्या समझता है तेरी तौहीद तेरी ज़ाती ताक़त से है, एक लड़की को दिल दे दिया वहीं कुंवे पे खड़े खड़े लड़की आई दिल दे दिया, हार गए बाज़ी।

وفی الامیر حوی العیون فانه مال یزول بباسه و سحائه یستاثر بطل الکمی بنبرس ویحول بین فواده وعذائه.

मुतनब्बी पुकार गया कि नज़र के फ़रेब से बचना, बड़ी ख़तरनाक चीज़ है। अबू अ़ब्दुल्लाह वो गए, पीछे नज़र नहीं थी, पीछे तो वो हिक़ारत थी, क़ाफ़िला हज को जा रहा, मुरीद साथ हैं, शैख चल नहीं रहे, हज़रत चलें, कहा जाओ! मैं नहीं जाऊँगा,। कहा क्या हुआ? मेरा दिल हार गया, मैं लड़की को दिल दे बैठा।

क़ाफ़ला बजाए हज के वापस चला गया, रोते धोते, बुग़दाद चिराग़ बुझ गए, महफ़िलें सुनसान हो गईं, सफ़े मातम बिछ गई, अबू अ़ब्दुल्लाह मुरतद् हो गए, मुहद्दिसे वक़्त, मुफ़स्सिरे वक़्त, शैख़े कामिल, हक़ीर मुसलमान को नहीं, ईसाइयों को समझा, लड़की के घर पहुंच गए, मेरी शादी, मैं शादी का तलबगार हूं, उन्होंने कहा ईसाई हो जा और हमारे सुवरों को एक साल चरा फिर शादी होगी, कहा मैं तय्यार हूं, ज़नार पहन ली ईसाइयों वाली, सुवर चराने शुरू किए, जिस अ़सा पे टेक लगाके ख़ुतबा देने जाते थे आज उससे सुवर हांके जा रहे हैं।

अबूबक्र शिब्ली रह0 को ख़्याल आया कि पता तो करूं क्या बना शैख़ का? पहुंचे साल ख़त्म होने को है, पता किया तो कहा जंगल में हैं, जंगल में जाके देखा तो यूं टेक लगाए खड़े हुए, सामने सुवर चर रहे हैं, उन्हों ने कहा अबू अ़ब्दुल्लाह! क्या हाल है? कहा जो देख रहे हो। कहा तू तो हाफ़िज़े हदीस था, कोई हदीस याद है? कहा सब भूल गई, एक याद है।

कौनसी? फ़रमाया من بدل دينه فاقتلوه जो इस्लाम से मुसलमान हो कर निकल जाए उसे क़त्ल करो। कहा तुझे क़ुरआन याद था, कुछ याद है? कहा नहीं सब भूल गया। एक आयत बाक़ी है। कहा कौनसी? कहा ومن يتبدل الكفر بالايمان فقد ضل سوآء السبيل जो ईमान के बाद ईमान छोड़ कर कुफ़्र में चला गया वो हलाकतों के रास्ते पर चला गया।

कहने लगेः अबू अ़ब्दुल्लाह तुझे क्या हुआ? कुछ न पूछो, हिक़ारत की नज़र पड़ी दिल दे बैठा, अबूबक्र को जो देखा तो एक दम अल्लाह की तरफ़ से भी कोई रहमत का झोंका आया। इतने लोग जो मांग रहे तो एक दम फूट फूट के रोए और ऐसा रोए, ऐसा रोए कि सुवर भी क़रीब हो कर चीख़ने लगे। फिर कहने लगेः अरे मेरे मौला! मुझे तुझ पे ये गुमान नहीं था कहा इतना क़रीब करके तू मुझे इतना दूर कर देगा।

अल्लाह ग़नी है, किसी का मोहताज़ नहीं है, बस वो ऐसा रोए कि अल्लाह पाक ने फिर सीना खोल दिया, अबूबक्र रह0 वापस लौटे, उनसे पहले बुग़दाद में पहुंचे दर्याए दजला में नहा रहे और कलिमा पढ़ रहे, अबूबक्र! मेरा ईमान मुझे वापस मिल गया। अबूबक्र! मेरा ईमान मुझे वापस मिल गया। शैखे वक़्त को काफ़िर को हक़ीर समझने पर ये सज़ा मिली। आप अपनों को हक़ीर समझ रहे हैं।

हज़रत राबिआ़ बसरिया का वाक़िआ़

राबिआ़ बसरिया रह0 में औ़रत होने के लिहाज़ से कोई ख़ूबी नहीं थी, औ़रत में कशिश के लिए ज़रूरी है कि ख़ानदानी हो, ख़बसूरत हो, मालदार हो और बांझ न हो, साहबे औलाद हो, इन चारों में से कोई चीज़ भी राबिआ़ में न थी ख़ानदान में ग़ुलाम हैं, शक्ल व सूरत में काली हैं और माल ग़ुलाम को कहां से मिलेगा और बांझ भी हैं, साहबे औलाद भी नहीं है।

मैं क्यों तेरह सौ साल बाद उसका नाम यहां ज़िन्दा

कर रहा हूं? उसका नाम क्यों बलन्द हो रहा है, औ़रत होने के लिहाज़ से एक ख़ूबी भी कोई नहीं, नाम क्यों ज़िन्दा है? उस ज़माने की बड़ी बड़ी बेग़मात, बड़ी बड़ी हसीन, बड़ी बड़ी नाज़नीन, हीरों में तुलने वाली, सोने चांदी में सजी हुईं, आज उनका नाम कोई नहीं है, बनू उमय्या का दौर है, जिनके हरम में दुनिया की हसीन तरीन औ़रतें दाख़िल थीं, आज उनका नाम कोई नहीं, राबिआ़ राबिआ़ हो रही है, हालांकि ख़ानदान की गुलाम, शक्ल की काली, गुलाम के पास पैसा कहां से आए? और बांझ थीं, रात को नहा कर कपड़े बदल कर अपने ख़ाविन्द से पूछतीं मेरी ज़रूरत है वो कहते कोई नहीं है, फिर पूछतीं मुझे इजाज़त है, वो कहते इजाज़त है, मुसल्ला और राबिआ़ एक साथ रात गुज़ारते थे।

हज़रत हसन बसरी की चाहत

उनके ख़ाविन्द जवानी में फ़ौत हो गए, तो हसन बसरी जैसी अ़ज़ीम शख़्सियत, ख़ुद चल के आए, निकाह का पैग़ाम लेकर हसन बसरी रह0 अपने वक़्त के सबसे बड़े इमाम थे जिनको लोग बेटियां देने के लिए मारे मारे फिरते थे कि हमारी बेटी क़बूल कर लें, ये खुद चल के गए, कि मैं आपसे निकाह करना चाहता हूं, पर्दे में बात हो रही है, वो कहने लगीं, मेरे चार सवालों का जवाब दे दो, मैं निकाह कर लेती हूं, कहने लगे फ़रमाइए।

कहा : ये बताओ मैं जन्नती हूं कि दोज़ख़ी?

हसन बसरी : चुप हो गए

कहा : ये बताओ जब आ़माल अल्लाह तआ़ला

क़यामत के दिन बिखेरेगा तो किसी के सीधे हाथ में आएगा, किसी के उलटे हाथ में आएगा, मेरे किस हाथ में आएगा? सीधे या उलटे हाथ में?

हसन बसरी : चुप हो गए।

कहा : ये बताओ जब आमाल तोले जाएंगे किसी के नेकियां घटेंगी किसी की बढ़ेंगी, मेरी नेकियां बढ़ जाएंगी कि घट जाएंगी?

फिर चुप रहे।

कहा : अच्छा ये बताओ जब पुल सरात से गुज़रा जाएगा कुछ गिर जाएंगे कुछ पार लग जाएंगे, मैं पार लगने वालों में हूं कि गिरने वालों में हूं? तो हसर बसरी रह0 फ़रमाने लगेः राबिआ तेरे किसी सवाल का जवाब मेरे पास नहीं, फ़रमाने लगीं, हसन जाओ मुझे तय्यारी करने दो मैं फ़ारिग़ नहीं हूं, मेरे सामने बहुत बड़ी घाटी आ रही है, मुझे तय्यारी करने दो मैं फ़ारिग़ नहीं हूं।

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का क़िस्सा बीमारी

मूसा अ़लैहिस्सलाम के पेट में दर्द हुआ। कहने लगेः या अल्लाह! पेट में दर्द है। अल्लाह ने कहा रैहान के पत्ते उबाल कर पी लो, रैहान एक छोटा सा पौदा होता है। उन्होंने उसको रगड़ कर पी लिया। ठीक हो गए।

कुछ दिनों बाद फिर दर्द हुआ। अल्लाह तआ़ला से नहीं पूछा खुद ही गए, रगड़ कर पी लिया, तो दर्द और तेज़ हो गया, एक दम शूटअप या अल्लाह ये क्या हो गया? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया तूने क्या समझा इसमें शिफ़ा

है। मुझसे क्यों नहीं पूछा? मुझसे क्यों नहीं पूछा? واذا مرضت فهو يشفين तेरा रब शाफ़ी है। रैहान नहीं। स्प्रीन नहीं, डिस्प्रीन नहीं, तेरा रब शाफ़ी है।

वालिदा की ख़िद्मत का अनोखा वाक़िआ

एहसान दानिश मरहूम था! उसकी किताब है जहाने दानिश, और नहीं तो वो हिस्सा पढ़ लो जो उसने अपनी मां के बारे में लिखा है, उसने कहा जब मेरी माँ बीमार हुई तो मैं ने अपनी बीवी से कहा ये मेरा वो साया है जिसमें किसी की शराकत बर्दाश्त नहीं कर सकता, मैं उसे तुझे उंगली भी नहीं लगाने दूंगा उसकी सारी ख़िद्मत मैं खुद करूंगा।

वो ग़रीब आदमी था, ग़ुरबत में ज़िन्दगी गुज़र गई, धोने का घर में इन्तिज़ाम नहीं था, लिखता है मैं अम्मां का बिस्तर उठाता, रोज़ाना दो मील दूर नहर पर जा कर धोता, और हवा में ऐसे सुखाता हुआ लेके आता था, जब तक मां ज़िन्दा रही, मैं उसकी चारपाई से लग के खड़ा हो गया।

जिनको माओं का एहसास होता है, वो खुद ज़लील व ख़्वार होते हैं कोई रोज़ रोज़ मिलती हैं? या माँ कोई ऐसी चीज़ है जिसका बदल लाओगे, बाप कोई ऐसी चीज़ है, जिसका बदल लाओगे, भाई कोई ऐसे हैं जिसका बदल लाओगे? ये ख़ून के वो रिश्ते हैं एक दफ़ा हाथ से चले गए तो चले गए।

दिल अल्लाह का अ़र्श है

हम अपने लिए साफ़ कपड़े इस्तेमाल करते हैं, मैले हो

जाएं तो उतार देते हैं, अल्लाह तआ़ला भी फ़रमाते हैं :

मैं ज़मीन व आसमान में तो आता नहीं, ये तो बहुत छोटे हैं, मुझे सहारा नहीं दे सकते, लेकिन ऐ मेरे बन्दे! मैं ने तेरा दिल ऐसा बनाया है कि उसमें मैं आ सकता हूं, तू उसे साफ़ कर दे कि मैं उसमें आऊँ।

एक मेरा अर्श ऊपर है, एक मेरा अर्श नीचे है, और ऊपर तो अर्श वो है, जिसपर मैं ने अपने तख़्त को बिछाया, और नीचे अर्श वो है जो तेरे सीने में धड़कता है, انا عند منكسرة قلوبهم और ये जितना टूटा होता है, जितना शिकस्ता होता है, जितना ये ख़्वाहिशात से पाक होता है, उतना ही ये मेरा महबूब होता है, उतना ही मैं उसमें आता हूं, और उतरता हूं।

फिर एक वक़्त ऐसा आता है, كنت سمعه الذى يسمع بها मैं उसके कान बनता हूं, بصره الذى يبصر بها मैं उसकी आँख बन जाता हूं, يده التى يبطش بها मैं उसके हाथ बन जाता हूं, رجلة التى يمشى بها मैं उसका पांव बन जाता हूं,

मैं उसके दिल व दिमाग़ में रग व रेशे में और ख़ून में, खाल और बाल में, हड्डियों में, उसके जिस्म के एक एक ज़र्रे में अपनी मोहब्बत के दरया बहा देता हूं, और उसके अन्दर को नूर ही नूर बना देता हूं, उसके अन्दर और बाहर की ज़िन्दगी ऐसी बना देता हूं, कि जो उसके पास बैठा है, उसे भी अल्लाह की मोहब्बत की हरारत महसूस होती है, जैसे आदमी बड़े घर के सामने से गुज़रे तो पता चलता है

यहां कोई पैसे वाला शख़्स रहता है, किसी झोंपड़े से गुज़रे, तो पता चलता है, यहां फ़क़ीर रहता है, जिसके दिल में अल्लाह आता है, उससे बड़ा तो दुनिया में बादशाह ही कोई नहीं, चाहे वो मर्द है चाहे औरत है।

क़ुरआन ने मेरे दिल के टुकड़े कर दिए

जुबैर बिन मुतइम रज़ि0 फ़रमाते हैं, मैं मदीने पहुंचा और मस्जिद में दाख़िल हुआ तो आप सल्ल0 ये आयत पढ़ रहे थे, मग़रिब की नमाज़ में ام خلقوا من غير شي ام هم الخلقون ام خلقوا السموٰت والارض بل لا يوقنون، ام عندهم خزائن ربک ام هم المصيطرون. तो हज़रत जुबैर रज़ि0 फ़रमाते हैं, कलाम की ताक़त से क़रीब था कि मेरे दिल के टुकड़े टुकड़े हो जाते वहीं, कलिमा पढ़ लिया, आजिज़ कर दिया, क़ुरआन ने घुटने टेक दिए।

उमय्या बिन असल्लत एक बहुत बड़ा शायर गुज़रा है, हुज़ूर सल्ल0 को उसके अश्आर इतने पसन्द थे, आहा, आहा! आप सल्ल0 फ़रमाया करते थे, امن لسانه وكفر قلبه उसकी ज़बान ईमान लाई और दिल काफ़िर रहा, कलाम उसका ऐसा था और आप सल्ल0 उसके अशआर सुना करते थे और एक दफ़ा आप सल्ल0 ने एक मजलिस में उसके सौ शेर सुने, और सुनाओ, और सुनाओ, ये कहते रहे, ये कहते कहते सौ अशआर सुने।

एक दिन वो मक्के में कहने लगा, क्या तूने अपनी नबुव्वत का ढोंग रचाया है? आओ! मेरे साथ मुक़ाबला

करो, मैं भी कलाम कहता हूं तू भी कलाम पेश कर, कहा आओ, हरम शरीफ़ में इकट्ठे हो गए।

इधर अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद और बिलाल रज़ि0। बस! दो आदमी और उधर सारे कुरैशे मक्का, तो उसने पहले आ के नज़्म, नस्र, शेर में उसने कमाल दिखाया, जब वो सारे जौहर दिखा चुका तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया, अब मेरा भी सुनो। بسم الله الرحمن الرحيم. يٰس والقرآن الحكيم، انك لمن المرسلين علىٰ صراط مستقيم تنزيل العزيز الرحيم. चल भाई! सूरे यासीन शुरू हो गई और मजमा को जैसे साँप सूंघ गया। अरब सुन रहे थे नां!

फ़रज़क़ एक शायर गुज़रा है, शायर आज़ाद ही होते हैं आ़म तौर पर लेकिन उसकी ज़िन्दगी में तहज्जुद कभी क़ज़ा नहीं हुई और हफ़ते में एक कुरआन उसका ख़त्म होता था हफ़्ते में क़ुरआन ख़त्म करता था तीन दिन में चार दिन में पांच दिन में कुरआन ख़त्म करता था।

क़भी ज़िन्दगी में झूठ नहीं बोला मरते दम तक, औ यक़ीन ऐसा कामिल था कि उसकी बीवी पर कुछ असरात हुए उसने किसी आ़मिल को बुलवाया उन्हों ने दम कर के एक लोहे का गेंद रख दिया, कहा इसे दफ़न करदो उन्हों ने कहा तु अपने हबशी गुलाम को बुलाओ, वो हबशी गलाम बुलाए, उसमें लकड़ी डाल कर कहा इसको उठाओ, वो दो गुलाम ज़ोर लगा रहे हैं उठा रहे हैं वो छोटा सा गेंद नहीं उठा पर दो और लगाए चार हो गए और फिर दो और लगाए छ हो गए और दो और लगाए आठ हो गए दो और

लगाए दस बारह गुलाम, छ इस तरफ़ छ उस तरफ़, छोटे से गेंद को उठा रहे हैं, उठता ही नहीं, उन्हों ने कहा देखो इसकी ताक़त ये है।

उन्हों ने कहा पीछे हट जाओ अपनी छड़ी उठाई ये आयत पढ़कर जो छड़ी लगाई और यूं किया और हवा में उड़ता हुआ वो गया उन्हों ने कहा भागो मैं तुम्हारे अ़मलों को मोहताज नहीं हूं मैं नहीं चाहता कि लोग कहें कि हज्जाज अपने काम आमिलों से निकलवाया करता था, यक़ीन की ताक़त ने उसके शर को तोड़ दिया, फ़र्ज़क़ बीवी के ज़नाज़े में शरीक है हसन बसरी रह0 भी आए हुए हैं।

पहलों की औलाद तो दुनिया मे वफ़ादार होती थी, हमारी औलाद तो दुनिया ही में बेवफ़ा हो रही है, और इस वज़ारत की ख़ातिर अल्लाह के हुक्म को तोड़ रहे हैं और चन्द टकों की ख़ातिर अल्लाह के अम्र मोड़ रहे हैं, मेरे भाइयो! ऐसी करीम ज़ात कहां मिलेगी हमें जो इंतिज़ार में बैठा हुआ हो कि मैं अपने बन्दे की तौबा का इंतिज़ार कर रहा हूं।

ये किसी इन्सान का कलाम नहीं हो सकता

एक ईरानी आ़लिम गुज़रा है, उसको ईसाइयों ने बहुत पैसे दिए कि तुम क़ुरआन के मुक़ाबले में एक किताब लिखो उसने कहा तुम एक साल की रोज़ी मेरे बच्चों को दो फिर मैं लिखता हूं, एक साल की ख़ूराक उन्हों ने वाफ़िर मिक़दार में दे दी। घर भी दे दिया और किताबों के ढेर लगा दिए, और छ महीने के बाद उससे जा कर पूछा तो उसने एक

सतर भी नहीं लिखी।

जब सूरे कौसर नाज़िल हुई तो अ़रब में एक बड़ा शायर था उसके मुंह से बेसाख़्ता निकला कि ما هذا قول البشر ये किसी इन्सान का कलाम नहीं, ऐसा अ़ज़ीमुश्शान क़ुरआन अल्लाह ने उतारा है, हमारे अपने घरों के अन्दर दौलत पड़ी हुई है। فاصدع بما تؤمر و اعرض عن المشركين ان كفينك المستهزئين.

इस आयत को एक बद्दू ने सुना तो सजदे मे गिर गए, तो कहा किसको सजदा कर रहे हो? कहने लगा, इस कलाम को सजदा कर रहा हूं, क्या ख़ूबसूरत कलाम है, मुसलमान नहीं है लेकिन कलाम की ताक़त ने सजदे में गिरा दिया, और हमारी बदक़िस्मती है कि हम कुरआन का नग़मा नहीं समझते, कि ये कैसे रूह के तार हिला देता है, और दिल की गहराइयों मे उतर जाता है।

अल्लाह की बन्दों से मोहब्बत

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है, من اقبل الى تلقية من بعيد जो मेरी तरफ़ को आया, चाहे सारा दामन दागदार कर के आया, पर चल पड़ा, आने लगा, तो मैं आगे बढ़ कर उसका इस्तिक़बाल करता हूं, लोग ताने देंगे, नौ सौ चूहे खा के बिल्ली हज को चली, अल्लाह कहता है नौ करोड़ खा ले पर तौबा कर ले क़बूल है।

मैं आगे बढ़ कर उसका इस्तिक़बाल करता हूं, फिर हम से कोई रूठ जाए तो हम कहते हैं हमारी बला से, सलाम करेगा तो करेंगे नहीं करेगा तो नहीं करेंगे, लेकिन

अल्लाह ऐसा नहीं करता, अल्लाह क्या कहता है :

ومن اعرض عنی نادیته عن قریب और जो मुझसे रूठ जाता है तो मैं उसके पीछे जाता हूं जैसे मां शफ़्क़त से बच्चे को पकड़ती है, इधर आ जा मेरा बच्चा, इसी तरह अल्लाह तआला अपने बन्दे और बन्दी के कन्धे पे हाथ रखता है, इधर आ जा, इधर तेरे लिए हलाकत के सिवा कुछ न होगा, मैं तेरा इन्तिज़ार कर रहा हूं।

ان ذکرتنی ذکرتک तू मुझे याद करता है मैं तुझे याद करता हूं ان نسیتی ذکرتک तू मुझे भूल जाता है मैं फिर भी तुझे याद रखता हूं, طوالینی واوالیق तू मुझसे दोस्ती लगाता है मैं तुझसे बढ़ कर दोस्ती लगाता हूं, تصافینی اصافیک तू मुझसे खरा मामला करता है मैं तुझसे बढ़ कर खरा मामला करता हूं, تعرض عنی وانا مقبل الیک तू मुझसे रूठ जाता है, मैं फिर भी तेरा पीछा करता हूं कि मेरी तरफ़ आ जा।

काफ़िर से अल्लाह की मोहब्बत

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का मेहमान आया, काफ़िर उन्हों ने पूछा मुसलमान हो, कहा नहीं, कहा मैं नहीं काफ़िर को रोटी खिलाता, वो उठ के चला गया, अल्लाह तआला ने जिब्राइल को भेजा, किसके लिए? काफ़िर के लिए, फ़रमाया : ऐ इब्राहीम अलैहि० नाफ़रमान तो मेरा था, सत्तर साल से मैं ने तो रोटी नहीं बन्द की, एक वक़्त की तुझे खिलानी पड़ी तो तूने क्यों बन्द कर दी, जाओ उसको

वापस बुलाओ औ उसको रोटी खिलाओ, जो रब काफ़िर पे ऐसा मेहरबान हो, तो हुज़ूर सल्ल० की उम्मत पर कैसे मेहरबान न होगा, मगर हम तौबा तो करें।

मुसलमान औ़रत और पर्दा

अल्लाह ने एक जुमला क़ुरआन में लिख दिया जो क़्यामत तक इस बात की दलालत करता रहेगा कि अगर मुसलमान औ़रत को बाहर निकलना हो तो उसका तरीक़ा क्या है? शुऐब अ़लैहिस्सलाम की बेटियां पानी पिला कर जल्दी वापस चली गईं।

शुऐब अ़लैहि० ने पूछा कि तुम जल्दी क्यों आ गईं? तो उन्हों ने कहा एक नौजवान था उसने हमारी बकरियों को पानी पिला दिया इसलिए हम जल्दी वापस आ गईं, एक बेटी ने कहा उसे उसकी जज़ा मिलनी चाहिए, मुसाफ़िर परदेसी लगता था।

शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने कहा जाओ और उसे बुला कर लाओ। अब ये लड़की हज़रत मूसा अलैहि० को बुलाने आई उसको बयान करने के लिए इतना जुमला काफ़ी था कि فجاءته احداهما فقالت ان ابی یدعوک لیجزیک اجرما سقیت لنا उनमें से एक आई और उसने मूसा अ़लैहिस्सलाम से कहा मेरे बाप आपको बुलाते हैं आपको मुआ़वज़ा देने के लिए।

हया की तारीफ़

लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उसके चलने के अन्दाज़ को

बयान करने के लिए तीन अलफ़ाज़ बढ़ाए और ये सारा क़िस्सा उन तीन लफ़्ज़ों ही की वजह से ब्यान हुआ है, वो लफ़्ज़ क्या हैं? تمشی علی استحیاء، فجاءته احداهما उनमें से एक लड़की आई और जब वो मूसा अ़लैहिस्सलाम को बुलाने आई तो वो किस तरह चल कर आ रही थी।

अल्लाह तआ़ला को उस लड़की का चलना ऐसा पसन्द आया और अच्छा लगा कि आज भी इतने हज़ारों साल के बाद उसको चकरकूट में बयान किया जा रहा है, और उसकी चाल को क़ुरआन का हिस्सा बना दिया, कि उनमें से एक लड़की आई मूसा अलैहि0 को बुलाने के लिए और वो इस तरह चल कर आ रही थी कि जैसे ख़ुद हया चल कर आरही हो।

हया किसे कहते हैं? उस लड़की की चाल को देख लो ये होती है हया, जैसे किसी ने पूछा कि क़ुरआन कौन सा है? सामने अबुद्दरदा रज़ि0 जा रहे थे तो जवाब देने वाले ने किताब उठा कर नहीं बताया बल्कि हज़रत अबुद्दरदा रज़ि0 की तरफ़ इशारा कर के कहा कि ये हमारा क़ुरआन जा रहा है। कोई अगर हया को देखना चाहे या जानना चाहे कि हया किसे कहते हैं तो वो शुऐब अ़लैहिस्सलाम की बेटी की चाल को देख ले, उसको हया कहते हैं।

ख़यानत करने का अन्जाम

मेरे भाइयो! अपने अल्लाह को राज़ी करें जिन दुकानों के पीछे नमाज़ें छूट गईं, जिन दुकानों के पीछे सच को तलाक़ हुई, जिन दुकानों के पीछे दयानत चली गई, ख़यानत

आ गई, बद दियानती आ गई।

अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन बद्दियानत से कहेगा, वो तूने जो अमानत खाई ले के आ, कहेगा, या अल्लाह! कहां से लाऊँ, वो तो दुनिया में रह गई अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा, जहन्नम में पड़ी हुई है।

अब वो जहन्नम में कैसे जाए? तो फ़रिश्ते मारेंगे चल, और वो उसको ले चलेंगे, और चलते चलते दोज़ख़ का सबसे बड़ा ख़तरनाक हिस्सा هــاويــه वहां उसको ले के जाएंगे, जहां मुनाफ़िक़ रहते हैं, ईमान होने के बावजूद अमानत को खाने वाले लोग هـاويـه में जलाए जाएंगे, जो मुनाफ़िक़ीन की आग है।

वहां देखेगा कि वो जिसका माल दुनिया में दबाया था वो वहा, पड़ा होगा, अच्छा यहां पड़ा है, इतने में वो तबाह हो जाएगा, उसको उठाएगा, कन्धे पर रखेगा, फिर ऊपर चढ़ना शुरू करेगा, जब दोज़ख के किनारे पर आजाएगा तो वो उसके हाथ से छूट जाएगा और फिर हाविया में जा कर गिरेगा, उसको फ़रिशते मार कर फिर कहेंगे, जाओ वापस ले के आओ, अब ये कभी उसमें से नहीं निकल सकता जब तक अल्लाह न चाहें, इस कमाई से तौबा करें ये कमाना जहन्नम में ले जाएगा।

एक अ़क्ल के भी ख़िलाफ़ है कि अल्लाह तआ़ला कहें कि बददियानती और ख़ियानत हराम है, और फिर ख़ुद फ़ैसला करें, उसके मुक़द्दर में बददियानती का रिज़क़ लिख दो, ये नामुमकिन हैं, ख़ुद अल्लाह तआला कहें रिश्वत हराम है और फिर ख़ुद उसके मुक़द्दर में रिशवत लिख दें, तो ये

नहीं हो सकता,ये नामुमकिन है।

ये तो दुनिया का कोई आदिल बादशाह भी नहीं कर सकता कि एक चीज़ से लोगों को रोक दे फिर ख़ुद ही लोगों को सपलाई करदे, फिर उसकी पिटाई भी करे, तो ज़मीन व आसमान का बादशाह कैसे कर सकता है, रिज़्क़ सब हलाल लिखा जाता है, ये हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की रिवायत है।

अल्लाह किसी के लिए सूदी रिज़्क़ नहीं लिखता, किसी के लिए रिशवत का रिज़्क़ नहीं लिखता, किसी के ज़िना का रिज़्क़ नहीं लिखता, ये फ़ैसला अल्लाह नहीं करता, वो खुद कहता है कि मैं ज़ालिम नहीं, मैं आदिल नहीं हूं, मैं रहीम हूं, लेकिन बन्दा बेसबरा हो कर उनको इख़्तियार कर लेता है।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहि० और आग की पसपाई

मेरे भाइयो! इस कायानात में हुकूमत अल्लाह तआ़ला की है, यहां वो होगा, जो अल्लाह चाहता है, सारी की सारी नमरूद की ताक़त इस्तेमाल हुई कि इब्राहीम को आग में जला दो, और उसे डाल दो और लकड़ियां इकट्ठी हुई, ढेर लगाया गया और ऐसी आग दहकी कि ऊपर से उड़ने वाला परिन्दा भी उसमें जा के गिर के राख हो जाए।

अब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को फेंकने का वक़्त आया, तो आग के क़रीब जाएगा कौन? रास्ता ही कोई नहीं, इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम कहने लगे तू ख़ुद चला जा, वो कहने लगे मैं क्यों जाऊँ? तुमने जलाना है, फेंको मुझे, अब फेंकने

का तरीक़ा कोई नहीं, क़रीब जाएं तो ख़ुद जलते हैं।

शैतान ने एक हथियार बनाके दिया, गुलेल की तरह, उसमें उतार के फेंका, कपड़े उतारे, रस्सियों से बांधा, जब हवा में उड़े तो जिब्राईल दाएं तरफ़ आ गए और पानी का फ़रिशता बाएं तरफ़ आ गया, दर्मियान में इबराहीम, इधर जिबरईल, उधर पानी का फ़रिश्ता और इबराहीम अ़लैहिस्सलाम ख़ामोश हैं बस इतना कह रहे हैः

حسبی اللہ ونعم الوکیل

इससे आगे कुछ नहीं बोल रहे और इधर पानी का फ़रिशता इस इन्तिज़ार में है कि अभी अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा पानी डालो, आग बुझाओ, जिबराईल अ़लैहिस्सलाम इस इन्तिज़ार में हैं कि ये मुझसे कुछ कहें तो मैं आगे करूं।

तो जब देखा कि इबराहीम अ़लैहिस्सलाम बोलते नहीं हैं तो वो बेक़रार हो गए कि ये आग में जाएगा तो जल जाएगा, जिब्राईल भी तो यही जानते हैं कि आग जलाती है, कहने लगेः इबराहीम आपको मेरी कोई ज़रूरत नहीं, तो फ़रमाया :

اما الیک فلا ज़रूरत है पर मुझे तेरी कोई ज़रूरत नहीं, اما الی اللہ فنعم बेशक अल्लाह का ज़रूर मोहताज हूं, पर तेरा मोहताज कोई नहीं हूं, आग में जा रहे हैं।

जब जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से भी नज़र हट गई और पानी के फ़रिश्ते से भी नज़र हट गई, तो अल्लाह तआ़ला ने बराहे रास्त आग को हुक्म दिया :

يا نار كوني بردا و سلاما على ابراهيم

ऐ आग ठण्डी हो जा, सलामती के साथ, मेरे इबराहीम पर तो अल्लाह जल्ल जलालहू ने ठण्डा फरमाया और उसके शोलों को गोद बना दिया। शोलों ने इबराहीम अ़लैहिस्सलाम को गोद में लिया, जैसे मां बच्चे को चारपाई पे लिटाती है ऐसे आराम से अंगारों पर बिठा दिया, आग को शफ्फ़ाफ़ बना दिया, यहां तक कि इबराहीम अ़लैहिस्सलाम के बाप आज़र जो जानी दुशमन और क़त्ल के दरपे था जब उसकी नज़र पड़ी तो उसकी ज़बान से भी बेसाख़्ता निकला, نعم الرب ربک یا ابراهیم ऐ इबराहीम तेरे रब के क्या कहने, कया ही जबरदस्त तेरा रब है।

सहाबा केराम की हैरत अंगेज़ करामत

हज़रत उक़बा बिन नाफ़े जब पहुंचे तेवन्स में तो कहरवान का शहर अब भी मौजूद है, ये पहले जंगल था, ग्यारह किलो मीटर लम्बा चौड़ा जंगल था, यहां छावनी बनानी थी, तो उस लशकर में उन्नीस सहाबी थे उन्हों ने सहाबा रज़ि० को लेकर एक टीले पर चढ़ कर एलान किया कि जंगल के जानवरो! हम अल्लाह और उसके रसूल सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के गुलाम हैं यहां छावनी बनानी है, तीन दिन में ख़ाली कर दो इसके बाद जो हमें मिलेगा हम उसे क़त्ल कर देंगे।

ये वाक़िआ ईसाई मुअ़र्रिख़ीन ने भी अपनी किताबों में नक़ल किया है, सिर्फ़ मुसलमान लिखते तो हम कहते ऐसे

ही बेतुकी मार रहे हैं, ईसाई मुअर्रिख़ीन इस वाक़िआ को लिखते हैं, उसकी हक्क़ानियत का एतराफ़ करते हैं, कि तीन दिन में सारा जंगल ख़ाली हो गया और इस मन्ज़र को देख कर हज़ारों अफ़रीकन क़बायल इस्लाम में दाख़िल हो गए कि उनकी तो जानवर भी मानते हैं हम कैसे न मानें?

काफ़िर का थप्पड़ महबूबे ख़ुदा के चेहरे पर

एक सहाबी कहते हैं, मैं ने देखा कि एक बड़ा खूबसूरत नौजवान है और लोगों को दावत देता फिर रहा है, सुबह से चल रहा है और कलिमे की तरफ़ बुला रहा है, मैं ने कहा ये कौन नौजवान है? उन्हों ने कहा ये क़ुरैश का एक नौजवान है जो बेदीन हो गया है, حتی انتصف النہار सुबह से वो आदमी बात करता रहा यहां तक कि सूरज सर पर आया तो एक आदमी ने आके मुंह पे थूका, दूसरे ने गिरेबान फाड़ा, एक ने सर में मिटटी डाली, एक ने आके थप्पड़ मारा, लेकिन नबी करीम सल्ल0 का ज़र्फ देखो कि ज़बान से एक बोल बद्-दुआ का नहीं निकला, इतने में हज़रत ज़ैनब को पता चला तो वो ज़ार व क़तार रोती हुई आ रही हैं, प्याले में पानी लेकर।

जब बेटी को रोते देखा तो ज़रा आंखें नम हो गईं, कहा बेटी لا تخشی علی ابیک الغیل अपने बाप का ग़म मत कर, तेरे बाप की अल्लाह हिफ़ाज़त कर रहा है, मेरा कलिमा ज़िन्दा होगा, वो सहाबी कहते हैं (वो बाद में मुसलमान हो गए उस वक़्त काफ़िर थे) मैं ने कहा ये

लड़की कौन है? उन्हों ने कहा ये उसकी बेटी है।

मेरे भाइयो! रेढ़ी वाला आवाज़ लगा रहा है, पान सिगरेट वाला आवाज़ लगा रहा है, तुम मुहम्मद सल्ल0 के उम्मती हो कर उसके कलिमे की आवाज़ न लगाओ, तो भाई हम फिर क्या कहें? अगर आप अपनी मस्जिदों में बैठ गए तो हम समझेंगे कि हमारा आना वसूल हो गया और भाई नहीं बैठोगे तो हम यही समझेंगे कि हम से ही क़ुसूर हुआ कि हम समझा न सके और भाई मुसलमान को ताना देने से बचो, कितना ही गिरा मुसलमान हो।

इमाम अबूहनीफ़ा रह0 का तक़्वा

इमाम अबूहनीफ़ा रह0 एक शख़्स से मिलने गए तो दरवाज़े पे दस्तक दे के धूप में ख़ड़े हो गए उसके घर के साए में नहीं खड़े हुए धूप में खड़े हो गए जब वह निकला, देखा धूप में खड़े कहा हज़रत आप साए में आ जाते। कहा भाई कहीं सूद न बन जाता। क़र्ज़ लेना था उससे, तो कहा उसके साए में नफ़ा ऊठाना कहीं सूद न बन जाए। तो पैसे पे नफ़ा चूं कि कोई माल नहीं।

अमेरीकी डाकू और इत्तिबाए सुन्नत

अमेरिका हमारी जमाअत गई शकागो में एक मस्जिद में हम गये तो देखा मस्ज़िद में ख़ेमा लगा हूआ है मैं बड़ा हैरान हुआ कि ये क्यों लगा हुआ है? तो पता चला कि यहाँ इस इलाके का बहुत बड़ा बदमाश था सारे इलाके का, वे मुस्लमान हो गया और फिर पाकिस्तान आकर तब्लीग़ में

चिल्ले लगाए वो वापस गया है तो उसने ख़ेमा लगाया हुआ है और रोज़ाना आकर उसमें घन्टा दो घन्टा बैठता है कि मेरा नबी ख़ेमे में रहा करता था तो मैं मुस्तकिल तो नहीं रह सक्ता कुछ देर तो रहूँ ताकि मेरे नबी सल्ल0 की ये सुन्नत तो अदा हो जाए यक़ीन मानें कि मूझे इतनी शर्म आई कि देखो नये इस्लाम कबूल करने वाले का ये ज़ज़्बा छोटा सा ख़ेमा इतना सा था, नाम भी उसने अबूबक्र रखा हुआ था।

ये र्दद व ग़म निकल गया कि हाए मैं कैसे अपने अल्लाह को राज़ी करूं मेरी औलाद कैसे अल्लाह पाक को राज़ी करे ये मेहनत ही ख़त्म हो गई, नमाज़ पढ़ी तो भी ठीक है नहीं पढ़ी तो भी ठीक है न पढ़ने की ख़ुशि न छूटने का गम, क़ुरआन की तिलावत हो जाए तो ख़ुशी कोई नहीं, रह जाए तो गम कोई नहीं ये क्या मुर्दा दिली है?

गुनाहों भरी ज़िन्दगी से तौबा

शीशे का गिलास टूट जाए तो अफ़सोस होता है गिलासों से भरा पड़ा है अभी चन्द दिन पहले की बात है हमारी ख़ादिमा के हाथ से गिलास टूट गया? तो मेरी बीवी कहने लगी अभी तो मंगवाया था, अभी टूट गया, ये हमारे घर की मिसालें हैं, शिशे का गिलास टूटता है तो घर की मालिक़न को दुख होता है, दर्द होता है ये ताजिर बैठे हैं उनका एक लाख रुपया डूब जाए तो ये आग बगूला हो जाते हैं। सर से पाँव तक उनके रुएं रुएं में अंगारे भर जाते है। उसका गिरेबान पकड़ने को आते हैं उसे मारने को आते हैं। रोज़ाना कितने हुक्म शीशे की तरह चकना चूर हो जाते

हैं। ज़ब कोई औरत बे-पर्दा हो कर बाजार का रुख़ करती है तो वो एक सफ़र में कितने हज़ारों हुक्म तोड़ती है। एक ताजिर जब गलत लेन देन करता है। उस एक लेद देन में वे कितने हज़ारों हुक्म तोड़ता है।

भाइयो! शीशे का गिलास टूटने का तो दर्द हुआ लेकिन अल्लाह के हुक्मों के टूटने का ग़म ही मिट गया। ऐहसास ही ख़त्म हो गया। क़ीमत तो आमाल पे लगेगी न कि चीज़ों पर, न कि शक्ल व सूरत पर, वजन तो आमाल से पैदा होगा। हज़रत मुहम्मद सल्ल0 एक ज़िन्दगी लाए, उस ज़िन्दगी को अन्दर में उतारना हमारी मेहनत है।

सदक़ा देने का इनाम

एक रिवायत में आता है कि एक आदमी जा रहा था कि बादल से आवाज़ आई कि जाव फलां की खेती को पानी दो तो वो आदमी बादल के साथ हो लिया तो बादल एक पहाड़ी पर बरसा वहाँ से एक दर्रे में से एक नाला सा था उसमें आया आगे जाके एक ढाल था उसमें गया तो पानी के साथ साथ एक आदमी आगे इन्तिज़ार में है पानि आया तो उसने पानी को बाग़ में कर दिया वे कहने लगा! भाई क्या करता है तू? तेरा नाम क्या है? उसने नाम बताया तो उसने कहा कि मैं ने बादल से आवाज़ सुनी कि फलां की खेती को पानी पिलाओ कहा कि अगर ये किस्सा न होता तो मैं तुम्हें कभी न बताता असल में बात ये है कि अल्लाह ने मुझको बाग़ दिया है जब ये तैयार हो जाता है तो मैं उसके तीन हिस्से करता हूँ एक हिस्सा फ़क़ीरों को

देता हूँ एक हिस्सा अपने घर में अपना ख़र्च करने के लिए रख़ता हूँ और एक हिस्सा फिर उसमें लगा देता हूँ उसकी तैयारी के लिए।

इस हदीस से ये मालूम हुआ कि जमींदारी में जो फसल आए तो उसका एक हिस्सा आगे फ़सल पर लगाना चाहिए तब जाके फ़सल का हक़ अदा होगा। माद्दी लिहाज़ से कैसा ख़ूबसूरत तरीक़ा अल्लाह के नबी ने बताया कि 3 हिस्सा लगाऐं उसपर तब जाकर सही फ़सल होगी।

तो अल्लाह ने फ़रमाया امطرهم بحصادهم जब उनकी फ़सल तैयार होती है तो बारिश को रोक लेता हूँ और हुकूमत उनके अक़्लमन्द लागों को देता हूँ दर्दमन्द लोगों को देता हूँ बुर्दबार लोगों को देता हूँ, और ख़ुश अख़्लाक़ लोगों को देता हूँ, ये सारे मआनी अलीम के हैं। और पैसे सख़ियों को देता हूँ और ये मेरे राज़ी होने की निशानी है।

इत्तिबाए सुन्नत

मेरे भाइयो! अल्लाह के वास्ते अपने अल्लाह को अपना बना लो, इसके सिवा मन्ज़िल नहीं मिलेगी, भटकी हुई इन्सानियत है। मन्ज़िल मिलाने के लिए और अल्लाह तक पहुँचने के लिए। अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्ल0 की ज़िन्दगी को नमूना बनाया है। अल्लाह के यहाँ अरबी, अजमी ये नहीं चलते। कुरैशी, पठान नहीं चलते, राजपूत, खान नहीं चलते, अल्लाह से मिलना है तो मुहम्मदी बनना पड़ेगा।

क्या अल्लाह हमारे लिए काफ़ी नहीं?

یا ابن آدم خلقت السموات والا رض मेरे बन्दे मैं ने सात आसमान उठा दिए, सात ज़मीन बिछा दिए ولــم اعــی بـخـلـقهن ......मैं उनको बना के नहीं थका لا...... تــاخــذه سـنـة ......नहीं ऊंघा ......ولا نــوم नहीं सोया ......ولا يـؤده حـفـظهما......उसके निज़ाम को न बना के थका, न चला के थका, न ऊँघा, न सोया, न पहलू बदला, न करवट बदली, न जमाई ली, न अंगड़ाई ली, न दराज़ हुआ, न आराम किया, न अपने दरबार को छोड़ा, न पीछे रिटाएरिंग रूम में गया कि अल्लाह तआ़ला कुछ आराम कर रहे हैं अगले मुकदमें बाद मैं भुगते जाएंगे।

हर वक़्त كفى بـا الـلـه وكيلا ......كفى بـا الـلـه شهـيـدا...... كـفـى بـالـلـه رقيبا......كفى بـالـلـه عليما......كفى بالله وليا...... كفى بالله نصيرا......كفى بربك هاديا و نصيرا.

तेरा रब वकील है, तेरा रब हाज़िर है, तेरा रब रक़ीब है, शहीद भी है, अलीम भी है, बसीर भी है, हादी भी है, वली भी है, काफ़ी भी है, काफ़ी है, सात दफ़ा अल्लाह ने पुकारा उसके बाद हम से सवाल किया الـيـس الـلـه بكاف عبـــده अब भी यक़ीन नहीं आता कि मैं तुम्हें काफ़ी हूँ? अब तो मान जाओ कि अकेला तुम्हें काफ़ी हूँ।

मसायब की हिकमत

मेरे भाइयो! अल्लाह को साथ लिया जाए। अल्लाह को

साथ लिए बगैर कोई भी मसला हल नहीं होगा जब अल्लाह साथ हो जाएगा तो لفتحنا عليهم بركات من...... السماء والارض तुम्हारी ज़मीन से बरकतें निकलेंगी ज़मीन सोना उगलेगी, जब तक़वा आएगा अल्लाह तआ़ला हम सबको गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएगा।

एक हदीस जमाने बाद याद आई يقول البلاء كل يوم الى اين اتوجه يارب मुसीबत अल्लाह से सुबह उठते ही पुछती है "या अल्लाह मैं आज कहां जाऊँ? तो अल्लाह कहते हैं الى احبائى والولى طاعنى जा देख ले जो जो मेरे दोस्त हैं, मेरे फ़रमांबरदार हैं उनके घर चली जा मुसीबत को अल्लाह कह रहे हैं। क्यों? कहा!

ابلوابك اخبارهم देख़ूगां कि कच्चे हैं कि पक्के اختربك صبرهم उनके सब्र का इम्तेहान लूँगा امحص بك ذنوبهم उनके गुनाहों से उनको पाक कर दूँगा, थोड़ी तकलीफ़ देकर ارفع بك درجتهم उनके दर्जे जन्नत में बुलन्द कर दूँगा।

मैदाने हश्र में एक नेकी की क़द्र व क़ीमत

हश्र के मैदान में एक आदमी की नेकी कम पड़ जाएगी, अल्लाह फ़रमाएंगे एक ले आ, माफ़ करता हूं। वे सारा जग ढूंढ मारेगा, पर कोई नेकि देने को तैयार न होगा, तो परेशान होगा कि हाए मर गया, एक आदमी मिलेगा, क्या हुआ भाई? कहेगा एक नेकी से मार खा रहा हूँ, कहा फिक्र न कर मैं तुम्हें देता हूँ, कहा तुम क्यों देते हो? कहा

मेरी है ही एक, मेरे किस काम की, जा तेरा तो भला हो जाएगा।

वे भाग के आएगा, या अल्लाह मेरा काम बन गया, कैसे बन गया? उसने दे दी, उसे बुलाव, वे भी आएगा। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा आज तो कोई देने को तैयार नहीं तू क्यों तैयार हुआ? वे कहेगा या अल्लाह मेरी तो एक ही नेकि थी, मेरे तो किसी काम आने की न थी, मैंने कहा तेरे बन्दे का ही भला हो जाए तो अल्लाह तआ़ला कहेगा अच्छा तो आज तू मुझसे बड़ा बनना चाहता है, आज मुझसे बड़ा कोई नहीं है, चल तू भी साथ ही चल, दोनों ही जन्नत में जाओ। हम नक़ल उतार लें, अगर नक़ल भी लग गई तो अल्लाह बड़ा क़दरदान है, इस गए गुजरे दौर में अगर हमने नक़ल भी उतार ली तो वारे न्यारे हो जाएंगे।

अल्लाह के दुश्मनों पर माल की कसरत क्यों?

रोजाना सुबह अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है الـــــى اعـدائـى واولى معصيتى कि जा मेरे दुश्मनों के घर चली जा, दुशमनों के घर क्यों? कहा! ازيـد بـذالک طغيانهم उनकी बदमआ़शी और बढ़ेगी, اضـاعف بذالک عذابهم उनका अ़ज़ाब भी दुगना होता चला जाएगा। اخـــربک على غفلتهم उनकी ग़फ़्लत बढ़ती जाएगी। وعجل لک بهم और उनकी अगर कोई नेकी है तो उसका बदला उन्हें दुनिया में दिया जाएगा और आगे ख़त्म हो जाएगा, لـيـس لهـم فـى الاخـرة الا النار आगे दोज़ख़ की आग के सिवा

उनके लिए कुछ नहीं है।

लोग ये समझ रहे हैं कि जितना पैसा आ रहा है ये अल्लाह का फ़ज़्ल आ रहा है और अल्लाह का नबी सल्ल0 कह रहा है।

اذا رايت الله عزوجل يعطى العبد على معاصيه من الدنيا على ما يحب فانما هو استدراج ثم تلا رسول الله صلى الله عليه وسلم فلما نسوا ما ذكروا به فتحنا عليهم ابواب كل شئى، حتى اذا فرحوا بما اوتوآ اخذنهم بغتة فاذا هم مبلسون.

जब तुम देखो कि एक आदमी अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 का नाफ़रमान है फिर भी दुनिया उसके पास आ रही है तो याद रख लो! ये अल्लाह के दर्दनाक अ़ज़ाब का शिकार हो चुका है ये बेग़ैर तौबा के दुनिया से जाएगा ये सबसे बड़ा अ़ज़ाब है याद रखना।

ख़ौफ़े ख़ुदा के आंसू

قوآانفسكم واهليكم نارا बचाओं अपने आपको और अपने अहल व अ़याल को जहन्नम से।

इस आयत को सुनकर सलमान फारसी रजि0 रोते हुए बाहर निकल गए, इस आयत को सुनकर तीन दिन किसी को नहीं मिले। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया ओ! सलमान कहां चले गए? तलाश करो। तलाश किया तो पहाड़ों में बैठे रो रहे हैं, मिट्टी डाल रहे, हाए! वो आग जिसका इंधन इन्सान व पत्थर, हाए! अल्लाह मेरा क्या होगा? कोई बुला के लाया।

सलमान क्या हो गया? कहा या रसूलल्लाह सल्ल0 इस आयत ने बेक़रार कर दिया। कहा नहीं! नहीं! तू उनमें से नहीं है। सलमान (रज़ि0) तो वो है जिसको जन्नत भी चाहती है। जिसको जन्नत चाहे वे तो रोते रोते जंगलों को जाएं और जिसे पता भी नहीं कि जन्नत है कि जहन्नम है वो ऐसे मज़े की नींद सोए।

नमाज़ छोड़ने की नहूसत

जिस ज़मीन पे सज़्दा न अदा हो, उससे बड़ा भी कोई जुर्म है? ज़िना करने को गूनाह समझते हैं, नमाज़ को छोड़ देना ज़िना से बड़ा जुर्म है, रिशवत खाने को गूनाह समझते हैं, नमाज़ को छोड़ देना रिश्वत खाने से बड़ा जुर्म है, क़त्ल कर देना बड़ा गुनाह है, नमाज़ का छोड़ देना क़त्ल से बड़ा जुर्म है सज़्दे ही का तो इन्कार किया था शैतान ने।

शैतान ने कोई ज़िना किया था, कोई क़त्ल किया था? कोई शराब पी थी? कोई जुवा ख़ेला था क्या किया था? कोई शिर्क किया था? शैतान सज़्दे का इन्कारी हुआ, एक सज़्दे का इन्कार करके वो हमेशा के लिए मरदूद हो गया, इस मुसलमान को होश नहीं है, जो रोज़ाना दिन में पाँच दफ़ा बीसियों सज़्दे का इन्कार किए बैठा है।

और फिर आराम से रोटी ख़ाता है, आराम से चाए पीता है, आराम से क़हक़हे लगाता है, आराम से अख़बार पढ़ता है, आराम से बीवी के पहलू में लेटता है। एक सज़्दे का इन्कारी हो कर शैतान हमेशा के लिए मरदूद हुआ, जिसने फ़ज्र के सज़्दों का इन्कार किया, फिर ज़ोहर के सज़्दों

का मज़ाक उड़ाया, फिर अस्र का मज़ाक उड़ाया, फिर मग़रिब और इशा का मज़ाक उड़ाया, घर में नमाज़ पढ़ना भी चलो ना पढ़ने से तो बेहतर है, पर ये भी नमाज़ का मज़ाक ही है और आठवें दिन सर पे टोपी रख़ के आया, आठ दिन, जिसने इत्ने सज्दों का इन्कार किया वो इस बात से नहीं डरता कि कहीं अल्लाह उसे मरदूद न कर दे।

ये कैसी वफ़ा है?

तो क्या होगा उस दिन, जिन बच्चों की ख़ातिर या जिस नफ़्स की ख़ातिर अल्लाह से बग़ावात की, कि उठा नहीं जाता, गर्मी बड़ी है, सर्दी बड़ी है, अंधेरा बहुत है।

क्या क़ब्र के अंधेरे याद नहीं हैं? क्या क़ब्र की गर्मी याद नहीं है? क्या ज़हन्नम की आग भूल गए? क्या ज़हन्नम के अज़ाब भूल गए? क्या जन्नत की नेमतें भूल गए? वो अल्लाह का कलाम भूल गए? वो अल्लाह का दीदार भूल गए? वो अल्लाह से मुलाक़ात भूल गए? वो महबूबे ख़ुदा की महफ़िल भूल गए? ये कैसा इस्लाम है? ये कैसा पत्थर दिल है जो कमाने में ऐसे मस्त हुए कि होश नहीं जब अल्लाह बुलाए तो ऐसे गाफ़िल हो जाएं, न बूढ़े और जवान को होश आए, न किसी औरत को होश आए, न किसी मर्द को होश आए, न बाज़ार बन्द हो।

सबसे ज़्यादा ख़ुशी का दिन तबाही का दिन कैसे बना?

यज़ीद बिन मलिक उमवी ख़लीफ़ा गुज़रे हैं ये नये

ख़लीफ़ा थे उमर बिन अब्दुल अज़ीज के बाद आए थे एक दिन वो कहने लगे कि कौन कहता है कि बादशाहों को ख़ुशियाँ नसीब नहीं होती? मैं आज का दिन ख़ुशी के साथ गुज़ार कर दिखाउंगा अब मैं देख़ता हूँ कि कौन मुझे रोकता है? कहा आज कल बग़ावत हो रही है? ये हो रहा है? वो हो रहा है? तो मुसीबत बनेगी कहने लगे! आज मुझे कोई बग़ावत कोई मुलकी ख़बर न सुनाई जाए? चाहे बड़ी से बड़ी बग़ावत हो जाए मैं कोई ख़बर सुनना नहीं चाहता आज का दिन ख़ुशी के साथ गुज़ारना चाहता हूँ।

उसकी बड़ी ख़ूबसूरत लौंडी थी उसके हुस्न व जमाल की कोई मिसाल न थी उसका नाम हुबाबा था बीवियों से ज़्यादा उसे प्यार करता था उसको लेकर महल में दाख़िल हो गया फ़ल आए चीज़ें आगईं मश्रूबात आ गए आज का दिन अमीरुलमूमिनीन ख़ुशी से गुज़ारना चाहते हैं।

आधे से भी कम दिन गुज़रा है हुबाबा को गोद में लिए हुए है उसके साथ हंसी मज़ाक कर रहा है और उसे अंगूर ख़िला रहा है अपने हाथ से तोड़ तोड़ कर उसको ख़िला रहा है एक अंगूर का दाना लिया और उसके मुँह में डाल दिया वो किसी बात पर हंस पड़ी तो वो अंगूर का दाना सीधा उसकी सांस की नली में जा कर अटका और एक झटके के साथ उसकी जान निकल गई! जिस दिन को वो सबसे ज़्यादा ख़ुशी के साथ गुज़ारना चाहता था उसकी ज़िन्दगी का ऐसा बदतरीन दिन बना कि दीवाना हो गया पागल हो गया तीन दिन तक उसको दफ़न नहीं करने दिया तो उसका ज़िस्म गल गया जबरदस्ती बनू उमय्या के सरदारों

ने उसकी मैय्यत को छीना और दफ़न किया और दो हफ़्ते के बाद ये दिवानगी में मर गया। ख़ुशी इन्सान लेता है? ख़ुशी अपनी ताक़त से कोई ख़रीद सकता है? सब कुछ अल्लाह के ख़ज़ानों में है तो मेरे भाईयो! ये है لا الٰه الا الله सब कुछ कर सकता है मख़लूक़ क्या कर सकती है? एक रिवायत में आता है कि एक वक़्त में एक काफ़िर मर रहा था उधर ही मुसलमान मर रहा था एक ही जगह पर! वक़्त करीब है काफ़िर कहता है मुझे मछली चाहिए मुझे मछली चाहिए तो वो मछली दरिया में मौजूद लेकिन मण्डी में मैजूद नहीं अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम हरकत में आया उस मछली को पकड़वा लिया उसको बाज़ार में भिज़वाया उधर से उसके आदमी को भिज़वाया तो मछली ख़रीदी गई पकड़वाई गई उसके बाद वो मर गया! मुसलमान मर रहा है उसकी सुराही का पानी पास पड़ा था प्यास की शिद्दत थी उसने जो यूं पकड़ना चाहा सुराही को उँगलिया जा टकराईं सुराही ऊलट के गिरी प्यासा ही मर गया। तो ये फ़रिश्ता कहने लगा! अल्लाह उसकी जान निकाली तो मछली वहां से लाके खिलाई अपने की जान निकाली तो पानी भी न पिने दिया प्यासा ही उठा लिया तो मूसा अ़लैहिस्सलाम का सवाल और ये सवाल बराबर हो रहा है। एक सवाल इकट्ठा करूं ताकि तीनों का एक ही जवाब हो जाए।

हज़रत सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह की दुनिया से बेरग़बती

हज़रत सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उमर बैतुल्लाह का

तवाफ़ फ़रमा रहे थे, उमवी ख़लीफ़ा हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक उनके साथ तवाफ़ कर रहा था, तो हिशाम ने कहा सालिम! कोई हाज़त हो तो बताएं। तो उन्होंने फ़रमाया اتق الله। भाई अल्लाह से डर, बैतुल्लाह में अल्लाह के गैर से मांगना कितने शर्म की बात है? हिशाम ख़ामोश हो गया।

जब तवाफ़ ख़त्म करके बाहर निकले तो उसने कहा हज़रत! अब तो बताएं, अब तो बैतुल्लाह से बाहर हैं। फ़रमाने लगे, दुनिया की हाज़त बताऊँ या आख़िरत की बताऊँ? उसने कहा आख़िरत की क्या पूरी कर सकता हूँ? दुनिया की बताएँ, तो फ़रमाने लगे।

مافعلت من يملكها فكيف من لا يملكها

दुनिया तो कभी बनाने वाले से नहीं मांगी तुझसे क्या मागूं? जो दुनिया का बादशाह है दुनिया का सवाल तो कभी उससे नहीं किया तुझसे क्या सवाल करूं?

आख़िरत का शौक़

मेरे भाइयो और दोस्तो! दुनिया बे रग़बती, आख़िरत का शौक, जन्नत का शौक, अल्लाह पर एतमाद और तवक्कुल, ये हमारी असल बुनियादें हैं, जो बहुत कमज़ोर पड़ चुकी हैं।

मख़लूक़ से इस्तिग़ना ये हमारी अस्ल बुनियाद थी जो कमज़ोर पड़ चुकी है। अब अल्लाह की मदद तो इससे आएगी कि अल्लाह की जात से ज़र्रा बराबर तवज्जो न हटे يوم حنين اذ اعجبتكم كثر تكم فلم تغن عنكم شيئا थोड़ी सी अल्लाह से तवज़्जोह हटी, कितनी बड़ी शिकस्त हो

गई, तो जब सारी ही हट जाए फिर क्या हाल होगा?

वो अस्बाब जिनसे अल्लाह ने हमें अपनी बारगाह में मुक़र्रब बनाना था, उन अस्बाब में ख़ामी और कमज़ोरी आ चुकी है, वो अस्बाब ज़िन्दा कर दिए जाएं तो अल्लाह की गैबी मदद हरकत में आ जाएगी और उसके वायदे पूरे होने शुरू हो जाएंगे।

मछेरे की कहानी

एक मूसा अ़लैहिस्सलाम का सवाल और एक हदीस

एक मुसलमान माहीगीर और एक काफ़िर दोनों मछली के शिकार पे आए मुसलमान ने जाल डाला بسم الله الرحمٰن الرحيم वापस खींचा तो ख़ाली काफ़िर ने जाल डाला بسم لات والعزى लात व उज्ज़ा के नाम की बरकत से वो जो पत्थर थे पत्थर के बुत, जाल मछलियों से भरा हुआ बाहर आया।

फिर मुसलमान ने कहा بسم الله الرحمن الرحيم जाल खाली काफ़िर ने कहा بسم لات والعزى तो जाल भरा हुआ?

शाम तक शिकार होता रहा काफ़िर की मछलियाँ और कश्ती भरती रही मुसलमान हर दफ़ा खाली खाली आख़री दफ़ा जाल डाला काफ़िर ने और आख़री दफ़ा मुसलमान ने, काफ़िर का जाल दुग़ना भर के आया और मुसलमान के जाल में एक मछली आई, उसने कहा या अल्लाह! तेरा शुक्र है एक पर भी तेरा शुक्र है, उसको जो निकाला जाल खोला

तो फिसल के पानी में, उसने कहा या अल्लाह! ये भी तेरा शुक्र है तो वे फ़रिश्ते जो मुसलमान का था वो बेचारा न रह सका।

अर्श का साया किसके लिए

मेरे भाइयो! आदिल को सबसे पहले अल्लाह अपने अर्श के साए के नीचे जगह देगा। जून का महीना है कोई 35 के करीब होगा टम्प्रेचर लेकिन कितने ए, सी, ऑन हैं फिर भी ज़रा हब्स महसूस हो रहा है, घुटन महसूस हो रही है। और सूरज हमसे नौ करोड़ तीस लाख मील के फ़ासले पर है, एक दिन महशर का आने वाला है जब सूरज हमसे एक मील के फ़ासले पर होगा और ये सूरज एक सेकेन्ड में इतनी आग बनाता है जितना पचास करोड़ ऐटम बम के फटने से आग निकलती है, इतना सूरज एक सेकेन्ड में आग बनाता है।

उसके सेन्टर का टम्प्रेचर दो करोड़ सत्तर लाख फ़ॉरन हाइट चेक किया गया है। ज़मीन पर बैठ कर करीब जाएंगे तो और भी ज़्यादा होगा, ये चौदह अरब टन हेलिम गैस एक सेकेन्ड में बारह अरब टन हाएडरोज़न में तबदील होती है। इस केमिकलरी एकशन में धमाका होता है, वो धमाका पचास करोड़ एटमबम की ताक़त के बराबर होता है, जिस आग के गोले में ऐसे धमाके हर सेकेन्ड में हो रहे हों और वो करोड़ों मील के फ़ासले पर आग लगा देता हो, जब ये एक मील के फ़ासले पर होगा तो इन्सानों का क्या हाल होगा।

और फिर नंगे बदन खड़े हों, नंगे पाँव हों, नंगे सर हों, सिर्फ एक ठण्डी छाँव है अर्श का साया है और अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एलान होगा भाई कुछ लोगों को मेरे अर्श के साए में जगह दे दी जाए तो एलान होगा कि किसको बुलाया जाए? तो मेरा रब कहेगा सबसे पहले आदिल हुकमरान बुलाए जाएं न वली, न गौस, न कुतुब, न अब्दाल, न शहीद, हाँ! आएगें ये लोग भी लेकिन बाद में आएंगे, सबसे पहले जिन्हें बुलाया जाएगा हां भाई! अदल वाले नाज़िम आजायें, अदल वाले डी-आइ-जी आओ अदल वाले आ-ई-जी आ जाओ अदल वाला सदर आ जाओ अदल वाला वज़िरे आला आ जाओ, वज़िरे आज़म आजायें।

सबसे ज़्यादा मुसीबतों में रहने वाले की जन्नत में ख़ुशी

एक और हदीस बताऊँ :

अल्लाह तआ़ला आख़िरत में अपने एक बन्दे को बुलाएगा जिसको उसने दुनिया में सबसे ज़्यादा दुख में रखा होगा अब उसका इल्म अल्लाह को है ना, क्यों कि पैमाना अल्लाह के हाथ में है, तो अल्लाह तआ़ला अपना एक बनदा बुलाएगा जिसको अल्लाह ने दुनिया में सबसे ज़्यादा दुख़ी रखा होगा अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा! इसको ज़रा जन्नत का एक फ़ेरा लगवा के लाओ और बस! फिर तो उसको फ़रिश्ते ले जाएंगे और यूं फ़ेरा दिलाके ......वापस जैसे वे पन्घौड़ा ऊपर जाता और एक दम निचे...... बस ऐसे एक फ़ेरा आएगा और बाहर। जब वो अल्लाह के सामने

आएगा तो अल्लाह फ़रमायेगा।

क्यों मेरे बन्दे! तूने दुनिया में बड़े दुख़ देखे भाई! एक पल का झोंका एक नज़र का असर, कहेगा :

या अल्लाह! मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैने तो दुनिया में कभी कोई दुख़ देखा ही नहीं था, अभी तो रहना बाक़ी है। अभी तो जन्नत की बादशाही है।

अभी तो हूरों के साथ शादियां हैं, और अभी तो हमेशा की इज़्ज़तों के ताज हैं, फिर अल्लाह तआ़ला एक शख़्स को बुलाएगा जिसको अल्लाह तआ़ला ने दुनिया में सबसे ज़्यादा सुख़ी रखा होगा सबसे ज़्यादा सुख़ी नाफ़रमान काफ़िर अल्लाह तआ़ला फ़रमाएगा।

दोज़ख़ का एक फेरा दिलवा के लाओ, तो उसके फ़रिश्ते यूं कर के बाहर निकाल लेंगे अल्लाह के सामने लाएंगे अल्लाह फ़रमाएगा।

क्यों मेरे बन्दे! दुनिया में बड़ी मौज की, बड़े मज़े किए तूने कहेगा।

या अल्लाह! मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं ने दुनिया में कोई सुख़ देखा ही नहीं अब अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 का एक जुमला साथ जोड़ दें अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 अपने ख़ुत्बे में फ़रमाते हैं :

لا خير فى خير بعده النار ولا شر فى شر بعده الجنة। वो मुसीबत कोई मुसीबत नहीं जिसके बाद जन्नत हो और वो ख़ैर और सुख़ कोई सुख़ नहीं जिसके बाद जहन्नम हो।

जन्नत के बंगले

जन्नत के किनारे पर अल्लाह तआ़ला ने महल्लात के अलावा बंगले बनवाए हैं जो साठ मील लम्बा चौड़ा एक मोती का, जन्नत के अंदर महल्लात की हूरें अलग हैं, जब सैर करते कराते फिरते फिराते नहरों के किनारे आएंगे और जी चाहेगा अब थोड़ी देर बैठूं, थकावट की वजह से नहीं, वैसे ही, जब बैठना चाहेगा तो सामने बंगला आ जाएगा उसका दरवाज़ा ही कोई नहीं जब जाएगा तो उसी वक़्त दरवाज़ा बनेगा और खुलेगा। और अंदर जाएगा तो देखेगा कि حور مقصورات فى الخيام वहाँ जन्नत की बीवियाँ बैठी हुई हैं। अल्लाह तआ़ला कहेगा देख ले मैं ने कहा था न لم يطمثهن انس قبلهم ولا جآن कि किसी इनसान और जिन्न ने उनको नहीं देखा और छुआ। देख ले इसके अंदर ये बन्द थी मैं ने तेरे लिए दरवाज़ा खोला है, अब ये तेरी है, साठ-साठ मील लम्बे चौड़े बंगले, कितने बड़े बंगले? साठ-साठ मिल लमबे चौड़े बंगले, अल्लाह ने बना दिए और एक मोती के बंगले हैं।

हूर से शादी मगर कैसे?

ये फिर्दौस का महल है और उसकी हूर है اسمها لعبة जिसका नाम लअबता है خلقت من اربعة اشياء चार चिज़ों से पैदा किया, मुश्क अंबर, जाफ़रान, काफूर उसमें आबे-हयात डाला, दुनिया में कोई आबे-हयात नहीं है, ये सब गलत रिवायात हैं, आबे-हयात जन्नत में है عجن طينها بماء الحيوان आबे-हयात डाल कर कहा खड़ी हो

जाओ, वो खड़ी हुई, उसका जमाल ऐसा और उसका हुस्न ऐसा कि जन्नत वाला जब उसे देखेगा अगर मौत न मिट गई होती तो उसके हुस्न को देख कर मर जाता।

لولا ان الله قضى لاهل الجنة ان لا يموتو الماتو من حسنها وجما لها ऐसा जमाल कि देख कर मर जाता लेकिन मौत अब ख़त्म हो चुकी है, और तो और जन्नत की हूरें उसपर आशिक़ हैं جميع الحور العين عشاق لها ये मैं आपको अपनी तरफ़ से अरबी नहीं बता रहा, ये मैं आपको हदीस के अल्फ़ाज बता रहा हूँ कहीं यूँ समझो कि अपनी तरफ से अरबी बनाता रहता है हमें सुनाता रहता है, अरे ये हदीस के अल्फ़ाज बता रहा हूँ جميع الحور العين عشاق لها सारी जन्नत की हूरें भी उसकी आशिक हैं, उसके कन्धे पे हाथ मारती हैं।

يا لعبة لو يعلم الطالبون لحدو فيك ए लअबा अगर तेरे हुस्न व जमाल का लोगों को पता चल जाए तो तूझे हासिल करने के लिए सब कुछ लुटा दें ومكتوب في نحرها ये एक रिवायत है कि उसकी गर्दन पे लिखा हुआ है مكتوب بين عينيه

ये दूसरी रिवायत है कि उसकी आँखों के दर्मियान लिखा हुआ है من كان يريد ان يكون له مثلي जो ये चाहता है कि मुझे हासिल कर ले فليعمل برضاء ربي मेरे रब को राज़ी करके आए, मेरे रब के हुक्म को पूरा करके आए।

قوا انفسكم واهليكم نارا जाओ अपने आपको और अपने अहल व अयाल को जहन्नम से, उसकी सरदी से

भी बचाओ, हुकूक़ का मामला है, भूक से भी बचाओ। प्यास से भी बचाओ। पर अल्लाह तआ़ला ने कहा है कि आग से बचाओ وقودها الناس والحجارة जिसका इंधन इन्सान व पत्थर हैं।

ज़िन्दगी भर अय्याशी की मगर सुकून न मिला

मैं बंगलादेश से आ रहा था मेरे साथ एक गोरा बैठा हुआ था, एक घन्टे तक तो मैं बोला नहीं, मैं ने समझा कि अंग्रेजी तो मुझे भूल गई होगी पच्चीस बरस हो गए अंग्रेजी बोले हुए तो अब मुझे कहाँ याद होगी फिर मुझे ख़्याल आया उसे दावत दूँ फिर ख़्याल आया बोला नहीं जाएगा, एक घन्टे इसी कश्मकश में गुजर गया खाना हो गया आख़िर मुझसे रहा न गया मैंने कहा या अल्लाह! बहुत बोली है याद करवा दे।

तो मैं ने उससे बात शुरू कि, कोई पनद्रह मिन्ट बाद मैं ने देखा कि चालीस फीसद अल्फ़ाज आना शुरू हो गए, मैं जो कहना चाहता था उसको सुना दिया।

मैं ने उससे एक सवाल किया! मैं ने कहा ये बताओ तुम्हारी सारी ज़िन्दगी है नाचना, शराब पिना, डिस्को, कलब, जुआ, सारी ज़िन्दगी इसी के गिर्द घूमती है तुम अपने ज़मीर से पूछो क्या इतनी बड़ी क़ायनात का और क्या इतने बड़े वजूद का यही मक़सद है?

नाचा जाए, गाया जाए, अपने दोस्त तबदील किये जाएं, रात को शराब पिया जाए और फिर बेसुध होके पड़ जाया जाए, हफ़्ते, इत्तवार को सब कुछ लुटा दिया जाए।

अगले दिन फिर बैल की तरह काम शुरू कर दिया जाए।

मैं ने कहा अपने दिल से सवाल कर के मुझे जवाब दो क्या ज़िन्दगी का मक़सद यही है? वो ख़ामोश हो गया। कहने लगा ये बात तो मुझसे किसी ने कभी पूछी ही नहीं! मैं ने कहा तू बता क्या इसी लिए हम दुनिया में आए हैं? कुछ सोच कर कहने लगा नहीं! मैं ने कहा अगर ज़िन्दगी का मक़सद यही है तो हमेशा मक़सद के पाने के बाद इन्सान इतमिनान महसूस करता है, सकून महसूस करता है, चैन महसूस करता है, तुम अपने दिल से सवाल करो कभी ज़िनदगी में चैन महसूस किया है? कहने लगा नहीं!

तो फिर ज़िन्दगी में कहीं ख़ला है, हम वो इस्लाम लाएं है जिसमें ये ज़िन्दगी मुक़म्मल है, लेकिन हम क्या करें? हम ने तो अपने पाँव पे ख़ूद कुलहाड़ी मारी हुई है। अब मैं ने उसको इस्लाम की बात शुरू की, कि इस्लाम एक पाकीज़ा मज़हब है उसकी ये ये ख़ूबीयाँ हैं, मेरे मुंह से निकल गया कि शराब हराम है, ये आदमी को पागल कर देती है।

कहने लगा हाए तुम्हारे हाँ शराब हराम है? मैं ने कहा हाँ! कहा मैं सारी दुनिया में फिरता हूँ सबसे बेहतरीन शराब कराची में जाके पिता हूँ!

बस उसके बाद मैं चुप हो गया मैं ने कहा अब मैं उसे क्या कहूँ मेरा दिल पारा-पारा हो गया, आज का मुसलमान काफ़िर के लिए रुकावट बना हुआ है ख़ैर फिर मैने उसे

कहा हमे न देख, हमारी किताब पढ़ो, हम तो कमज़ोर हैं, किताब हमारी सच्ची है वही पढ़ लो।

सहाबी रज़ि0 के रोने पर आसमान के फ़रिश्ते भी रो पड़े

एक सहाबी तहज्जुद की नमाज़ में रो रहे हैं واعده من النار ऐ अल्लाह! जहन्नम से बचा ले और रो रहे हैं जब (बवक़्त) फ़ज्र वो नमाज़ में आएं तो आप सल्ल0 ने फ़रमाया لقد ابكيت اعين ملا من ملائكة كثير ऐ अल्लाह के बन्दे! आज़ तूने क्या कर दिया। तेरे रोने पर आसमान के फ़रिश्तों में भी सफ़े-मातम बिछी हुई थी। तेरे रोने पर फ़रिश्ते रो रहे थे, ऐसा दर्द ग़म उनके अंदर उतर गया था।

करोड़ों माओं से ज़्यादा मोहब्बत करने वाली ज़ात

अल्लाह तआला का क़ुरआन में इरशाद है ياعبادى ऐ मेरे बन्दो! या ईबादी का जो लफ़्ज़ है उसमें يا का जो इज़ाफ़ा है, आप यूँ समझें जैसे एक माँ बच्चे को कहती है मेरा बच्चा, मेरा बेटा, उसकी पुकार में जो मोहब्बत है, उसका तर्जुमा तो नहीं हो सकता।

वो तो जो सुनेगा वही समझेगा, मेरा बेटा लिखा हुआ हो तो इससे क्या पता चलता है? लेकिन जिसके सामने माँ ने कहा, हाए मेरा बेटा, मेरा बच्चा, इसमें जो मिठास, जो अपनाइयत, जो शीरीनी है, ममता की, वो तो कोई नहीं तर्जुमे में आ सकती, इसी तरह ياعبادى का तर्ज़ुमा नहीं

हो सकता।

इस में अल्लाह ने जो मोहब्बत भरी है, जो मिठास है, जो उसका रहम है, जो उसकी शफ़्क़त है, जो उसकी मोहब्बत है, वो तर्जुमे में नहीं आ सकती یا عبادی ऐ मेरे बन्दो! यूँ लगता आगे अल्लाह कहेगा जो तहज़्जुद पढ़ते हैं, जो उलमा हैं, जो सूफ़िया हैं, जो मुजाहिदीन हैं, जो मुफ़स्सिरीन हैं, जो मुत्तक़ीन हैं, उनको कह रहा है मेरे बन्दो! आगे गए तो पता चला यहाँ तो बात ही और है।

यहाँ तो किस्सा ही और छेड़ दिया, "या ईबादी" ऐ मेरे बन्दो! कौन है? الذين اسرفوا علی انفسهم जिन्होंने आज तक मुझे राज़ी करने का एक काम भी नहीं किया, और ये तू ने ही सारा किस्सा मिटा दिया, अरे तुम भी मेरे ही हो, औलाद माँ बाप को भूलाती है, माँ बाप औलाद को नहीं, भुलते और मैं बताऊँ बिछड़े हुए बेटे की वापसी का जितना इन्तज़ार माँ को होता है उतना बेटे को वापसी का शौक नहीं होता।

उससे करोड़ों गुना ज़्यादा अल्लाह इन बन्दों का मुन्तज़िर है जो उससे रूठे पड़े और उससे कटे पड़े और अल्लाह की रहमत पुकार पुकार कर कह रही है, मेरे ही हो, आ जाओ, यहीं पनाह मिलेगी, और कहीं नहीं पनाह الذين اسرفوا علی انفسهم لا تقنطوا من رحمة الله मुझसे ना उम्मीद न होना ان الله يغفر الذنوب جميعا मैं तुम्हारे सारे गुनाह माफ़ कर दूँगा, पर एक शर्त है انيبوا الی ربكم तोबा करो, तुम्हारी तोबा पर माफ़ कर दुँगा, नाउम्मीदी भी

बहुत बड़ा कुफ़्र है, इधर तुम तौबा करोगे, और उधर हमारी माफ़ी का दरवाज़ा खुल जाएगा।

नबी सल्ल0 वाला दर्द पैदा करो

मेरे भाइयो! आज इस दर्द वाला कोई नहीं है आज हम मुसलमान कहलाते हैं लेकिन दिल में दुनिया तड़पती है अल्लाह के घर से उठाया, अल्लाह ने दुकान से उठाया, अल्लाह पाक ने दफ़्तर से उठाया, कपड़े पाक करवाए जिस्म पाक करवाए, और फिर अपनी बारगाह में खड़ा फ़रमाया और फिर यूँ फ़रमाया! कि ऐ मेरे बन्दे! अब तू मेरे पास आया है अब मुझसे बात कर ताकि मैं तुझसे बात करूं, नमाज़ मेरा और तेरा आपस में मुकालमा है तू मुझसे बोल मैं तुझसे बोलूं नमाज़ तुझे मुझसे जोड़ने वाली है लेकिन जब नबी वाला दर्द मिटा, और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम वाला ग़म मिटा, तो मुसलमान नमाज़ में भी अपनी दुकान को सोचता है, और नमाज़ में भी अपने कारोबार को सोचता है, अल्लाह तआ़ला ने तो घर से उठा कर यहाँ खड़ा किया कि मेरे पास आ, लेकिन दिल व दिमाग अल्लाह को और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को नहीं दिया अब खड़ा हैं और दुनिया के मन्सूबे सोच रहा है।

हर हर सांस अल्लाह पर फ़िदा कर दो

मेरे भाइयो! हम अल्लाह की मानने के जज़्बे के साथ जिन्दा रहे, हमारा कोई जज़्बा न हो।

ان صلاتی ونسکی ومحیای ومماتی لله رب العالمین

मेरा जीना, मेरा मरना, मेरी जान, मेरा माल, मेरी बन्दगी मेरा सब कुछ तेरे लिए है, मैं तेरा हो गया।

मेरे भाइयो! अल्लाह का बन के रहना ही ज़िन्दगी है, वरना कोई ज़िन्दगी नहीं, देखो ना कितना करीम है, हमारे गुनाह बढ़ते हैं उसका रहम बढ़ता है। हमारी दिलेरी बढ़ती है, उसकी चश्मपोशी बढ़ती है हमारी बेहयाई बढ़ती है उसकी हया बढ़ती है, हम दिलेर होते हैं वो पर्दे डालता है, हम गुनाह करते हैं वो छुपाता फिरता है, कि तेरे गुनाह का किसी को पता न चल जाए।

और इस उम्मत के साथ तो ख़ास मामला है, क़यामत के दिन अल्लाह का हबीब (सल्ल0) कहेगा या अल्लाह! मेरे उम्मत का हिसाब मेरे हवाले कर दे। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे क्यों? कहेंगे उनको शर्मिन्दा न होना पड़े किसी के सामने। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे जब आप हिसाब लेंगे तो आपके सामने शर्मिन्दा होंगे कि नहीं होंगे? मैं तुझे भी हिसाब लेने नहीं दुँगा, मैं ख़ूद इनका अकेले पर्दे में हिसाब ले कर फ़ारिग़ कर दूँगा।

मिसाली साबिर

मेरे भाइयो! बजरा इब्नुल क़ैस कैशरी ने कहा (नऊज़ु बिल्लाह) कि इस पूरे बाजार में अगर सबसे बदतरीन चीज़ है तो ये है और हुज़ूरे अकरम सल्ल0 से कहा! चला जा खड़ा हो जा यहाँ से अगर मेरी कौम तुझे यहाँ न बिठाती तो मैं तेरी गर्दन उड़ा देता! हुज़ूरे अकरम सल्ल0 की ज़बान

मुबारक से तो एक भी बोल नहीं निकला।

आप सल्ल0 ने चादर उठाई ग़मगीन, परेशान उठे और ऊँटनी पर सवार होने लगे और ऊँटनी जब खड़ी हुई तो उसे खबीस ने निचे से नेज़ा मारा और ऊँटनी उछली आप सल्ल0 उलट कर ज़मीन पर गिरे फिर भी ज़बान से बद्दुआ नहीं निकली, अबू ज़ेहल ने मारा लेकिन आपकी ज़बाने मुबारक से अलफ़ाज़ नहीं निकले।

गूंगों की एक जमाअ़त का क़िस्सा

हमारे यहां गूंगों की एक जमाअ़त आई। एक गूंगा दूसरे गूंगे को तय्यार कर रहा था, मैं उनको देख रहा था, वो कहता तू चल, वो था चरसी, वो कहता मैं नहीं ज़ाता। अब जब सारे हरबे बेकार हो गए तो उसने उसको कहा तू मर जाएगा, उसने कंधे का इशारा किया, फिर कहा तेरी क़ब्र ख़ोद रहे हैं, अब वो उसको देख रहा, फिर कहा तुझे डाल रहे हैं, फिर ऊपर मिट्टी आगई, फिर आगे साँप का इशारा किया, तब्लीग हो रही है।

क़ुरबान जाएं अल्लाह के रसूल सल्ल0 पर, अश्शाहिद ने गूंगे भी ख़ींच लिए और अल्लाह ने ज़िन्दा करके दिखा दिया, काम करके दिखाया कि लफ़्ज शाहिद ही फिट था। अब वो साँप की आवाज़ निकाल रहा, अपने हाथो के इशारे से उसको एक डंग इधर मारा, एक उधर मारा, फिर उसने तिली जलाई, फिर कहा आग तेरी क़ब्र में जल रही है, अब उसका रंग एक आ रहा, एक जा रहा, फिर कहने लगा तूने बिस्तर उठाया और हमारे साथ चला तो उसने इशारा किया

जन्नत का, वो तो मुझे याद नहीं रहा लेकिन अगला इशारा याद रहा हूर का, कोके का इशारा किया, मतलब हूर और बड़ी ख़ूबसूरत हूर, कहां तुझे मिलेगी।

मेरे सामने वो तीन दिन के लिए तैयार हो गया। और ऐसी तौबा की उसने कि चर्स भी छूटी, हर चीज़ छूटी फिर वहां मदरसे में पड़ा रहता था, और नमाज़ सीख़ी, मसायल सीखे, तहारत सीख़ी, सब कुछ सीखा और नौ महीने बाद अल्लाह को राज़ी करता हुआ मर के चला गया, सारी ज़िन्दगी के गुनाह नौ महीने धुलवा के वो जन्नत में गया, सस्ता सौदा कर गया, जिसको कोई आलिम तय्यार न कर सके, कोई मुकर्रिर न तय्यार कर सके उसको एक गूंगे ने तय्यार कर के उठा दिया।

सुन्नत का एहतिमाम मुझे मुसलमान कर गया

कैलीफ़ोरनिया में एक अरब लड़का खड़ा था, पगड़ी, कुरता पाज़ामा पहना था, एक लड़की आ गई और कहने लगी कि तुम कौन हो? कहने लगा कि मैं मुसलमान हूँ। उस लड़की ने पुछा कि ये लिबास कैसा है? उसने कहा कि मेरे नबी का है, तो उसने कहा कि ये तो बहुत ख़ूबसूरत लिबास है, दूसरे मुसलमान ये क्यों नहीं पहनते हैं? अरब बोला कि ये उनकी गफ़लत है और ग़लती है उसने कहा कि इस्लाम क्या है? मुझे बताओ तो सही?

पाँच मिन्ट बात की तो मुसलमान हो गई, इस वक़्त जो देर हो रही है ये हमारी तरफ़ से हो रही है कि हम तब्लीग़ को अपना काम बना कर दीन सीख़ कर पूरी दुनिया

में फैल जाएं तो मुलकों के मुलक इस्लाम में आएंगे।

अल्लाह के लिए नई दुलहन को भी छोड़ दिया

हज़रत हन्ज़ला रज़ि0 की रात को शादी हुई सुबह उठे सर में पानी डाला है, अचानक आवाज़ लगी कि मुसलमानों को शिकस्त हो गई, तो नहाए बगैर मैदान की तरफ़ भाग गए, सिर्फ़ एक रात की शादी थी और अल्लाह के रासते में जा के शहीद हो गए।

तो उनकी लाश हवा में उठ गई आसमान के दर्मियान फ़रिश्ते आगए और जन्नत के पानी से गुस्ल दिया आप सल्ला0 ने देखा कि हन्ज़ला रज़ि0 को गुस्ल दिया जा रहा है आप सल्ल0 ने फ़रमाया! अरे ये क्या हो गया है, शहीद को तो गुस्ल नहीं दिया जाता तो फिर लाश निचे आ गई सहाबा रज़ि0 ने देखा कि सर के उपर से पानी टपक रहा है बाद में तहकीक़ करने से पता चल गया कि जनाबत की हालत में शहीद हुए थे।

तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों के ज़रिए से गुस्ल का इंतिज़ाम फ़रमाया! उनकी बीवी के हकूक़ का क्या हुआ? क्या उन के घर उजड़ गए या नहीं? उनके घर वीरान हुए? और हमारा ज़ेहन कहता है कि बीवी और बच्चों को छोड़ कर चले जाना कहाँ का इस्लाम है, इससे आप हज़रात खुद अन्दाज़ा लगाएं और फ़ैसला फ़रमा लें।

फ्रांस की एक जमाअ़त की कारगुज़ारी

फ्रांस में पाकिसतान की एक जमाअ़त पैदल चल रही

थी तो एक गाड़ी रुकी और उसमें से दो लड़कियाँ निकलीं। उनहों ने जलदी से पैसे निकाले कहा जी आप नेक लोग लगते हैं, ये पैसे हैं, आप लोग सवार हो जाएं। सर्दी बहुत ज़्यादा है, पैदल चल रहे थे, पैदल चलती हैं पूरब में जमाअ़तें। उन्होंने कहा बहन हमारे पास पैसे तो हैं।

फिर पैदल क्यों चल रहे हो इतनी ज़्यादा सर्दी में? कहा हम लोगों की ख़ैर ख़्वाही में और अल्लाह पाक को राज़ी करने के लिए कि अल्लाह अपने बन्दों से राज़ी हो जाएं और उसके बन्दे अल्लाह की मानने और सुनने वाले बन जाएं, इसी लिए हम चल रहे हैं और हम उनके लिए दुआ करते हैं, तो लड़की ने कहा हमारे लिए भी दुआ करते हो कहा हाँ आपके लिए भी दुआ करते हैं। उस लड़की ने कहा मैं बताऊँ आप कौन हैं? कहा बताओ। कहने लगी आप नबी हैं।

तो उन्हों ने कहा कि आपको कैसे पता चला कि हम नबी हैं? कहा हमारे किताब में लिखा है कि ये काम नबी किया करते हैं, तो उन्हों ने समझाया कि बहन हम नबी नहीं, उस नबी (सल्ल0) के उम्मती हैं जो हमारे ज़िम्मे नुबुव्वत वाली ज़िम्मेदारी लगा गया था, الا فليبلغ الشاهد الغائب। अब मैं जा रहा हूँ मेरा पैग़ाम आगे पहूँचाना तुम्हारे ज़िम्मे है।

तो हम इस काम की अदाएगी के लिए निकले हुए हैं, तो दोनों लड़कियां मुसलमान हो गईं, एक ने उनसे रूट पूछा कि फ़लाँ दिन कहां होंगे। एक हफ़्ते बाद आठ लड़कियों को ले कर आई। और उनको भी मुसलमान किया।

आख़िरत के साँप बड़े ख़तरनाक हैं

मौलाना तारिक़ जमील फ़रमाने लगे, मेरे वालिद साहब फौत हुए तो मैंने उन्हें ख़्वाब में देखा। इन्तिहाइ डरे हुए, मैंने कहा क्या हुआ? कहा बेटा आख़िरत के सांप बहुत ख़तरनाक हैं? मैंने कहा आपके साथ क्या हुआ? कहा अल्लाह ने मेरी तो हिफ़ाज़त फ़रमा ली पर आख़िरत के साँप बड़े ख़तरनाक हैं।

एक भिड़ से बचने के लिए निज़ाम बना हुआ है। एक बिच्छु से बचने के लिए निज़ाम बना हुआ है। और वो सांप और बिच्छू जिन पर मौत तारी नहीं होगी। जहन्नम का बिच्छू एक ख़च्चर के बराबर है। एक दफ़ा जिसे डस लिया तो चालीस वर्ष तक तड़पता रहेगा, चालीस वर्ष और उसने डसते ही जाना है, डसते ही जाना है। तो इंसानियत को बचाने की ज़रूरत है। काबिले रहम हैं जो अल्लाह के नाफ़रमान हैं।

दीन के लिए सूली पर लटक गए

जब हज़रत ख़ुबैब रज़ि0 को सूली पे लटकाने लगे अबू सुफ़यान ने कहा! अब भी मान जा तो निजात है सूली पे लटके-लटके शेर पढ़े जा रहे हैं।

وقد خير وللكفر والموت دونه
وقد حملت عيناى من غير مجزعى
ومهوى حضار الموت انى لميت
ولكن حضارى جحم نار ملفعى
فلست بمبد للعدو تخشعا

ولا جذعا انى الى الله مرجعى

अरे अबू सुफ़यान किस धोखे में पड़ गए मेरा सब कुछ दीन पर कुरबान हो सकता है पर मैं अपने महबूब का कलमा नहीं छोड़ सकता हूँ, लटका दो मुझे सूली पे और मेरे आँसुओं से धोखे न खाना, मैं मौत के डर से नहीं दोज़ख़ के डर से रो रहा हूँ जान क़ुरबान कर दी जाएगी लेकिन अल्लाह और उसके रसूल को नहीं छोड़ा जाएगा।

जब अबू सुफ़यान ने नेजे उठाए मारने के लिए तो कहा! ऐ अल्लाह अपने हबीब को मेरा सलाम कहना, उसी वक़्त ज़िबराईल मस्ज़िदे नबवी में उतर गए कि या रसूलल्लाह! ख़ुबैब आपको सलाम पेश कर रहे हैं, उनको क़ुरैश ने शहीद कर दिया।

रक़्क़ासा का क़बूले इस्लाम

कनाडा में हमारी जमाअ़त गई। तो वहां एक करनल अमीरुद्दीन साहब हैं, हिन्दुस्तान के हैं, लेकिन वहां आबाद हैं। तो Danivr में एक कलब था, जहां नाच गाना होता है, वहां गश्त में गए, बुढ़े आदमी थे, इस लिए उनको भेजा, वहां क्या हो रहा था, एक लड़की स्टेज़ के ऊपर नंगी नाच रही थी, और एक लड़का उसके साथ डरम बजा रहा था, यानि साज़ और देखने वाले कौन थे? सारे मुसलमान बैठे हुए थे, अरब वग़ैरह, शराब पी रहे थे।

और ये हमारे करनल अमीरुद्दीन साहब बड़े बारोब आदमी थे। बड़ा चेहरा, सफ़ेद दाढ़ी, फैली हुई, रहे भी फ़ौज में, तो उन्होंने जाते ही एक दम ज़ोर से डांटा, तो वो लड़की

भी चुप हो गई और वो रक़्स भी रुक गया, जो शराब पी रहे थे वो एक दफ़ा हिल गए। पूछा क्या बात है? कहा मेरी बात सुनो। जब वो दावत देने लगे तो वो जो लड़की थी वो चुपके से स्टेज़ से उतरी और मेज़ पोश जो होटल में पड़े होते हैं वो उतार कर अपने ऊपर बांध लिए, और उसने अपना सारा ज़िस्म छुपा लिया।

उन्होंने दावत दी, उनकी तो समझ में नहीं आई वो तो सारे शराब में मस्त पड़े हुए थे। उनको पता ही नहीं कि मेरे पीछे लड़की आकर ख़ड़ी हो गई है, वो पीछे से बोली कि जो बात आपने उनको समझाई है मुझे समझ आ गई है, उनको नहीं आई, आप मुझे बताएं मैं क्या करूं? मैं ये ज़िन्दगी चाहती हूँ, तो उन्हों कहा कि बेटी हम कलमा पढ़ने को कहते हैं, उसने कहा मुझे पढ़ा दें, वहीं उसने कलमा पढ़ा तो कहने लगी मेरा ख़ाविन्द जो डरम बजा रहा था उसको भी कलमा पढ़ाओ।

दोनों मियां-बीवी ने कलमा पढ़ा, अब हमें क्या करना है? कहने लगे कि हमारी जमाअ़त तीन दिन तक यहीं है, हमारे पास आती रहो, हम बताते रहेंगे। वो दोनों मिंया बीवी आते रहे, फिर जब वापस जाने लगे तो उन्होंने फोन नम्बर दिया, वहां Danvir इस्लाम सेन्टर का पता भी दे दिया कि जब कोई ज़रूरत पड़े तो हम से राबता कर लेना।

दो महीने के बाद हम टोरंटो में थे तो उस लड़की का फोन आया, हैलो मिस्टर करनल अमीरुद्दीन, उन्होंने कहा मेरा ख़्याल है तू वो रक़्क़ासा है जिसके साथ Danvir में

बात चीज हुई थी। कहा हां मैं वही हूँ क्या हुआ? कहा एक मसला पेश आ गया है। क्या मसला पेश आ गया है? कहने लगी बहुत जब्रदस्त मसला है, कहा बताओ तो सही क्या हुआ? कहती है कि जब मैं नाचती थी तो एक रात का पाँच सौ डालर लेती थी, यानि तीस हज़ार रूपये एक रात का लेती थी।

जब मैं इस्लाम में आई तो पता चला कि इस्लाम तो औरत को बाहर निकलने की इज़ाज़त नहीं देता, तो अब मैंने अपने ख़ाविन्द से कहा कि अब तू कमा मैं घर में रहुंगी, तो उसको कोई शुग्ल नहीं आता, उसने एक फ़ैक्ट्री में मजदूरी शुरू कर दी है, उसको चालिस डालर मिलते हैं, यानी तीन हज़ार रूपये रोजाना, वो तीन हज़ार रूपये पर आ गई सत्ताईस हजार रूपये एक दिन की आमदनी घट गई, तो मेरा घर बिक गया, गाड़ीयाँ बिक गईं, हमारा एक छोटा सा किराए का मकान है उसमें रहते हैं, दो कमरे का है।

आप ने कहा था कि हम और रिशतेदारों को जाकर इस्लाम की दावत दिया करें, दावत देना तो मुसलमान मर्दों का भी काम है, औरतों का भी है, तो कहने लगी मैं और मेरे मियां दोनो बस में जा रहे थे, तो बस के टिकट मेंन को मैंने पकड़ा हुआ था, एक जगह बस की ब्रेक लगी और मुझे झटका लगा, तो मेरा जो कुरते का आसतीन है ये पीछे हटा और मेरे बाजू का एक चौथा हिस्सा नंगा हो गया तो उस गुनाह की वजह से मैं दोजख़ में तो नहीं जाउँगी? ये कह कर उसने टेलिफ़ोन पर रोना शुरू कर दिया, सिर्फ दो महीने

पहले वो लड़की औरत के लिए एक ज़िल्लत का निशान थी, और दो महीने के बाद वो उसपर रो रही है कि मेरे बाज़ू का चौथा हिस्सा नंगा हो गया।

हमारे पाकिसतान की औरत के सारे बाज़ू नंगे होते चले जा रहें हैं और वो पूरी नंगी होने के बाद इधर आई कि चौथा बाज़ू गलती से हटा तो मैं दोजख़ी तो नहीं होउंगी?

मेरे भाइयो और बहनो! ये तब्लीग़ का काम हैं जो एक फ़ाहिशा को वली बना दे, बनाने वाला तो अल्लाह है, मगर दुनिया दारुल-असबाब है, तो उन्होंने कहा कि बेटी ऐसे ग़म की बात नहीं, रोने की कोई बात नहीं, अल्लाह बहुत रहीम व करीम है, बहुत मेहरबान है, तुम ग़म न करो ये तो सहवन हुआ है, जान बूझ कर नहीं हुआ है और दूसरे अल्लाह ने उसकी माफ़ी रख़ी है कि अगर गलती से हो भी जाए तो उसका इज़ाला हो जाएगा।

तो इस लिए हम मर्दों को भी कहते हैं औरतों को भी कहते हैं कि जमाअतों में निकल कर ये सिफ़ात सीखें जो मुख़तसर मैंने आपकी ख़िद्मत में पेश की हैं, जिनको अपनाए बगैर न मर्द मर्द बन सकता है, न औरत औरत बन सकती है। यानी न अल्लाह के राज़ी करने वाले मर्द ने अल्लाह के राज़ी करने वाली औरतें वजूद में आ सकती हैं।

लोगों को सामने रख कर ज़िन्दगी न गुज़ारें, हमारी औरतों के लिए नमूना आज की औरतें नहीं हैं, हमारी औरतों के लिए नमूना, माँ आएशा रज़ि० हैं, माँ ख़दीज़ा रज़ि० हैं, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० हैं, हज़रत मैमूना रज़ि० हैं,

आज की औ़रत हमारी औ़रतों के लिए नमूना नहीं है।

जिस गिर्जे में बैतुल मक़दिस पर क़ब्ज़े की मीटिंग हुई, आह!!

मुडगासकर से एक जमाअ़त सफ़र कर के आई है दस हज़ार आदमी एक सफ़र में मुसलमान हुए। कबीलों के कबीले अफ़रीका में मुसलमान हो रहे हैं, पैदल जमाअ़तों ने लाखों इन्सानों को कलमे में दाख़िल कर दिया। तीन हज़ार मस्ज़िदें फ्रान्स में बनी हैं।

जब सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी रहमतुल्लाह ने फ़िलस्तीन फतह किया बैतुलमक़्दिस को फतह किया तो सारे यूरोपियन शहज़ादे फ्रान्स में जमा हुए और एक गिर्जे में सब ने मिल कर क़सम उठाई! कि मुसलमानों से बैतुलमक़्दिस वापिस लेंगे।

जिस गिर्जे में उनहों ने क़समें उठाई थीं वो गिर्ज़ा इस वक़्त मस्ज़िद बना हुआ है। अब बताएं कितना बड़ा इंक़िलाब है। गश्त हो रहे हैं, ता़लीम हो रही है, जमाअ़तें निकल रही हैं। तो सब पर मेहनत करते हुए, सारे आलम में फिरना ये सीख़ने के लिए चार महीने हैं, चालिस दिन हैं। ये तो सीख़ने का निज़ाम है। ये कोई हतमी चीज़ नहीं, सीख़ने की हैं।

दुनिया साया है उसके पेछे मत भागो

اعلموا सुनो मेरे बन्दो! मेरी बात ग़ौर से सुनो انما الحيوة الدنيا ये दुनिया की ज़िन्दगी, ये नारोवा़ल की

ज़िन्दगी, ये बाज़ार की ज़िन्दगी لهــو ولـعـب खेल, तमाशा आपने देखा दस बारह बच्चे खेल रहे हैं। किसी ने पूछा ये क्या कर रहे हैं? तो कहा गया कि खेल रहे हैं।

अभी हम बाज़ार से आए हैं हमने देखा कि सारे लोग काम कर रहे हैं। कोई पूड़ियां बना रहा है, कोई लस्सी बना रहा है, कोई सब्ज़ी पे पानी फेंक रहा है, कोई दुकान पे झाड़ू दे रहा है, कोई दुकान पे बैठ चुका है, तो हम कहते हैं कि ये सारे लोग काम कर रहे हैं।

अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि अगर मेरे नज़र से देखो तो ये सब खेल रहे हैं। जैसे तुमहारी नज़र में बच्चे गाड़ियों से खिलौनो से खेल रहे होते हैं, لهــــو तमाशा, तमाशा क्या होता है?

आपने देखा एक मदारी ने डुगडुगी बजाई और हमारे जैसे दो चार फ़ारिग़ इक्टठा हो गए और उसने कहा अभी मैं अपनी पिटारी से सांप निकालूंगा और सांप से ये बना दूँगा बोतल से जिन निकल आएगा। और जिन से बोतल निकल आएगी, वो लोगों को बेवकूफ़ बना रहे होते हैं और लोग उसे दीवानों की तरह खड़े देख रहे होते हैं। लेकिन अक्लमन्द कहते हैं मदारी तमाशा दिखा रहा है।

अल्लाह तआला हमें कह रहा है कि ये जो औरतें समझती हैं कि हम घरों में काम कर रहे हैं, और ये मर्द जो समझते हैं हम बाज़ारों में काम कर रहे हैं, मैं तुम्हारा रब तुम्हें कह रहा हूँ कि ये तमाशे हो रहे हैं, तमाशे। अगर किसी बच्चे की गाड़ी टुट जाए तो वो कितना रोता है? माँ

कहती है, कोई बात नहीं, ख़िलौना ही तो है और आजाएगा और ले दूँगी। लेकिन बच्चा कहता है मेरा तो बहुत नुक्सान हो गया। तो अल्लाह यही फ़रमा रहा है कि ए मेरे बन्दो! तुम नारूवाल के नुक्सान पर ही रोने बैठ गए, ये तो कुछ भी नहीं, तुम यहाँ की खुशियों को दिल दे बैठे ये तो कुछ भी नहीं।

उमर रसीदा मुसलमानों का अल्लाह के यहाँ एजाज़

और इस उम्मत का बूढ़ा इतना कीमती है कि अगर ये झुकी कमर के साथ कदम उठाता है, तो अल्लाह का अर्श भी हिलता है और आए हुऐ अज़ाब उठ जाते हैं। इस उम्मत के साथ अल्लाह तआला का खुसूसी मामला था जब ये मेरा बन्दा पचास वर्ष का हुआ जाए तो मेरे नबी का कलमा पढ़ता है।

पचास वर्ष का हो जाए तो फिर उसका हिसाब आसान कर देता हूँ, और जब ये साठ वर्ष का हो जाता है उसे अपनी सोहबत देना शुरू कर देता हूँ क्यों कि तू मेरे आने के क़रीब हो चुका है इस दुनिया से निकल दुकान में बैठना जायज़ नहीं अब तो निकल, तू साठ का हो गया, मेरी तरफ़ को आ, मैं अपनी तरफ़ को रजा देता हूँ, जब सत्तर साल का हो जाता है अल्लाहु अकबर।

मेरे भाइयो! अल्लाह कितना मेहरबान है इस उम्मत पर, अल्लाह तआला कहते हैं फिर मैं भी और मेरे फ़रिश्ते भी उससे मोहब्बत करते हैं कि ये सत्तर वर्ष का बुढ़ा हो गया, इस्लाम में दाढ़ी हो गई और अस्सी वर्ष का हो जाता

है तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं, अस्सी वर्ष के बूढ़े मुसलमान को दोज़ख़ का अ़ज़ाब देते हुए शर्म आती है, मैं कैसे अ़ज़ाब दूं कि बूढ़ा हो गया है, हां अल्लाह तआ़ला कहता है कि अब उसकी नेकियां ही लिखते रहो, बस सेठिया गया, आज़ाद हो गया।

20 लाख रूपयों के ज़ेवर पहनने वाले की तौबा

मांचिस्टर में एक आदमी से मिले सय्यद हाशमी...... हज़रत हसन रज़ि0 की औलाद, उनका बेटा भी ईसाई, दो बेटियां भी ईसाई, बीवी भी ईसाई, सारा शजर ए नसब घर में लटका हुआ था, शैखु अ़ब्दुलक़ादिर रह0 का दरमियान में नसब नामा आता था, मैं ने उसके बेटे से पूछा तुम मुसलमान हो कहा नहीं, मैं कैथोलिक हूं, मैं ने कहा क्यों तेरा बाप तो मुसलमाना है? कहा मेरी मां कैथोलिक है, मैं भी कैथोलिक हूं।

ये उसका हाल था हम मिलने गए तो उसने ऐसी चढ़ाई की कि अच्छा पाकिस्तान में इस्लाम फैल गया कि इंग्लिस्तान में तब्लीग़ करने आ गए वहां रिशवत है, ज़िना है, ये है, वो है, जाओ वहीं तब्लीग़ करो।

हमारा वक़्त ज़ाय न करो, अगर तुम्हारे पास पैसे ज़्यादा हैं तो हमें दे दो, यहां भी अब बेरोज़गारी बढ़ रही है, हम यहां लोगों में तक़सीम कर देंगे। इतनी बेइज्ज़ती कि रब का नाम! इतने में उसकी मां बीवी आ गई, उसने हैलो! हैलो! करने के लिए अपना हाथ बढ़ाया तो हमने सलाम नहीं किया।

हमने कहा भई हम तो ग़ैर औरतों से हाथ नहीं मिलाते, तो इतना गुस्से में आया कि तुमने हमारी बीवी की तौहीन कर दी, हमारे सामने ही खड़े हो कर उसके गले लग कर चूमने लगा, ये बड़े जाहिल लोग हैं, इनको आदाब का ही नहीं पता है, मैं ने कहा! हम ऐसे जाहिल ही रहें अल्लाह करे, ये मैं उससे पहली मुलाक़ात बता रहा हूं, दो दिन बाद मैं ने उसे फोन किया, मैं ने कहा हज़रत! आप हमारा खाना खाना पसन्द फरमाएंगे, सिर्फ़ आपको खाने के लिए बुलाना है, पन्द्रह मिनट मैं ने उसकी मिन्नत की कि आप खाना आ कर खा जाएं, आख़िर वो तय्यार हो गया, कि अच्छा ठीक है लेकिन मुझे ले कर जाओ।

हम गए उसको ले कर आए कोई मेरे ख़याल में पन्द्रह, बीस लाख का उसने ज़ेवर पहना हुआ होगा, सोने का, जवाहरात का, और हीरों का, और पता नहीं क्या क्या, ये कम से कम बता रहा हूं, मुमकिन है इससे ज़्यादा का हो, हम ने उसे मस्जिद में बैठाया।

उसने बयान सुना जब हम उसे छोड़ने के लिए गए तो कहने लगा सत्ताईस साल के बाद पहली दफ़ा मस्जिद में आया हूं, सत्ताईस साल के बाद एक ईद किया, जुमा किया, नमाज़ किया, मैं तो यहां आना ही भूल गया था, सत्ताईस साल के बाद आज मस्जिद में आया हूं, मैं ने कहा काम बन गया, जो कह रहा है कि सत्ताईस साल के बाद मस्जिद में आया हूं।

तो मालूम होता है वो पुराना ईमान जाग रहा है, फिर दो दिन बाद दोबारा उससे मिलने गए फिर उसको मस्जिद

में लाए खाना खिलाया, बात सुनाई, फिर दो दिन छोड़ के फिर उसको लाए, तीसरे दिन खड़ा हो गया कहा! मेरा नाम लिखो तीन दिन, मुझे सुबह सुबह उसका टेलीफोन आया! तुम लोगों ने मस्जिद में क्या जादू कर दिया है? मैं ने कहा क्या हुआ? कहा मेरी ज़बान से ज़ोर ज़ोर से कलमा निकल रहा है, मैं अपने आपको रोक भी रहा हूं मुश्किल से, मुझे क्या हो गया है? मैं ने कहा ईमान ज़िन्दा हो गया है और कुछ भी नहीं हुआ है! फिर जो उसने हमारे साथ वक़्त लगाया, वो जो रोता था, उसका रोना देख के हम रोते थे।

फिर उसके बाद उसका ख़त आया (अभी तक उसके ख़त आते रहते हैं) कहा वो दिन आज का दिन न उसकी तहज्जुद क़ज़ा हुई है उस दिन से उसकी नमाज़ क़ज़ा हुई है, न रोज़ा क़ज़ा हुआ है, सत्ताईस साल की ज़कात यहां पाकिस्तान में दे कर गया है।

पूरे सत्ताईस साल की ज़कात और पहले दिन कहा था मैं कोई फ़ालतू हूं कि यहां आया हूं वक़्त ज़ाय करने फिर जो उसका ख़त आया उसमें लिखा था। आप इंग्लिस्तान आ जाएं सारा खर्चा मेरे ज़िम्मे रहाइश मेरे जिम्मे, और यहां की शहरियत ले के देना मेरे ज़िम्मे, यहां आ के तब्लीग़ करो, यहां के मुसलमानों में तब्लीग़ की भी बहुत ज़रूरत है, ऐसे लाखों, करोड़ों हीरे बिखरे हुए पड़े हैं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि0 का ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआ़

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा रज़ि0 को क़ैद कर

दिया गया और उन्हें डराया गया कि ईसाई हो जा, उन्होंने कहा : नहीं होता, फिर लालच दिया गया, ईसाई हो जा, उन्हों ने फिर कहा नहीं होता, फिर सबसे ख़तरनाक हर्बा आज़माया नौजवान बड़े मज़ाहिया सहाबा में से थे, ये सहाबा ऐसे थे कि हुज़ूर सल्ल0 को भी हंसाते हंसाते कहीं ले जाते थे इतना हंसाया करते थे और उनको सहाबा गधा कहा करते थे, "अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा हिमार" और एक दफ़ा किसी ने आ के शिकायत की कि या रसूलल्लाह! ये अ़ब्दुल्लाह बहुत ज़्यादा मज़ाक़ करता है। आप सल्ल0 ने फ़रमाया : دعوه فانه يحب الله ورسوله अरे उसे कुछ न कहा करो, उसे अल्लाह और उसके रसूल से मोहब्बत है।

अब उन्हों ने आख़िरी हर्बा आज़माया, एक ख़ूबसूरत लड़की को उसके साथ कमरे में बन्द कर दिया, शराब और सुवर का गोश्त रख दिया, और लड़की से कहा कि जिस तरह भी हो इससे ज़िना कराओ, जब मुसलमान औ़रत के चक्कर में फंसेगा, ये अपना ईमान भी बेचेगा, और अपना सब कुछ बेचेगा, तीन दिन और तीन रातें वो लड़की सारा ज़ोर लगाती है कि किसी तरह ये मेरी तरफ़ देखे तो सही, जब देखेगा तो ज़िना की ख़्वाहिश पैदा होगी।

अब उस सहाबी में क़ुरआन ज़िन्दा है, उन्हों ने हमारी तरह तफ़्सीरें नहीं पढ़ी थीं, न उस ज़माने में तफ़्सीरें लिखी गई थीं, वो तफ़्सीरें जानते भी नहीं थे, वो क़ुरआन जानते थे, वो अस्रार व रुमूज़ नहीं जानते थे, वो क़ुरआन जानते थे, वो बड़े बड़े लम्बे चौड़े मसायल पर बातें नहीं किया

करते थे, वो कहते थे:

हमारे नबी सल्ल0 ने ऐसे किया, हमने कर दिया, बस हमें और नहीं पता, इस मौक़े पर हमारे नबी ने क्या कहा, आंख को झुकाओ. अब अब्दुल्लाह की आंख का पर्दा झुका हुआ है, ये नबी का गुलाम है।

क़ैसर ने बुलाया, और कहा: आग जलाओ कढ़ा चढ़ाया, उसमें तेल डाला, उसने कहा, जब खौलने लगे तो उसके दो साथियों को इसमें डालो अगर ये फिर भी ईसाई न हो तो इसे भी डाल दो, जब दो साथियों को डाला गया और वो जल भुन गए और जब उनको फेंकने लगे, तो ये रोए, तो उन्हों ने कहा قيل انه بكى जी वो रो रहा है, कहा वापस लाओ।

उसने पूछा क्यों रो रहे हो? कहा :

لا جزعا من الموت، ولا سبابة بالحيات

न मौत के डर ख़ौफ़ से और न ज़िन्दगी के शौक़ में तो कहा क्यों रो रहे हो? कहा :

रोया इस बात पर हूं कि मेरी तरफ़ एक जान है ख़त्म हो जाएगी, मैं चाहता था, मेरे जिस्म पर जितने बाल हैं उतनी मेरी जानें होतीं, और मैं एक एक का अल्लाह के नाम पर गिराता जाता, कुर्बान करता जाता, करता जाता, करता जाता।

अब ये जज़्बे हमारे हैं? बाप चाहता है मेरा बेटा डॉक्टर बने, लेकिन भाई अगर वो मुहम्मदी नहीं बना तो वो बर्बाद है, हलाक है, हम चाहते हैं मुहम्मदी बन जाए।

आशिक़ का जनाज़ा बड़ी धूम धाम से निकला

हमारे गूजरनिवाला का एक बहुत बड़ा ताजिर है अल्लाह ने उसे तब्लीग़ में लगाया उसने अपने बेटे को स्कूल से उठा लिया और रायवन्ड में उस्को दाख़िल करवा दिया, हमारे साथ वो पढ़ता था, एक साल हम से पीछे था, बड़ा ख़ूबसूरत जवान था, हाफ़िज़े कुरआन भी था, और बीस वर्ष की उम्र में उसकी शादी भी कर दी थी, एक बच्ची थी, उसका आख़िरी साल था, मैं तब्लीग़ में साल लगा रहा था, मस्जिद में उसकी और मेरी आख़िरी मुलाक़ात हुई, मैं जमाअ़त में चला गया, वो अचानक बीमार हुआ और बेहोश हुआ, तीन दिन तक बेहोशी में रहा, उठा कर हस्पताल ले गए, जहां उसका इन्तिक़ाल हो गया।

उसका बाप ऐसा अजीब आदमी था कि उसका एक आंसू नहीं निकला, वहीं हस्पताल से बेटे को उठाया और सीधा रायवण्ड लेकर आगया, और कहने लगा ये तुम्हारी अमानत है, तुम संभालो, न बहनों को पहुंचने दिया, न फूफ़ियों को पहुंचने दिया, जब उसे क़ब्र में उतार चुके थे, फिर उसकी बहनें पहुंची और उसकी फूफ़ियां पहुंचीं उन्हों ने फ़रयाद की कि अल्लाह के वास्ते हमें सिर्फ़ एक नज़र देखने दो, चुनांचे उनके रोने पर फटटे हटा कर उनको दिखाया गया और रायवण्ड के कब्रस्तान में उसे दफ़न कर दिया।

हम हकट्ठे रहते थे, मेरे साथ उसका बड़ा तअ़ल्लुक़ था, रात को तहज्जुद में जब उठते तो बड़ी मज़ेदार चाए बनाता, मुझे भी पिलाता, खुद भी पीता और ऐसा ख़ूबसूरत क़ुरआन

पढ़ता था कि जी चाहता पढ़ता चला जाए, झूम-झूम कर क़ुरआन पढ़ता था।

मेरा दिल करता था कि अल्लाह करे मुझे ख़्वाब में मिल जाए, ताकि मुझे पता चले कि उसके साथ क्या हुआ, अल्लाह की शान, कोई वक़्त क़बूलियत का होता है, मेरी ख़्वाब में उसके साथ मुलाक़ात हो गई, वैसा ही क़द्दो क़ामत, सफ़ेद लिबास पहने हुए, हंस रहा था, मेरे पास आया, मैं ने कहा अ़ब्दुल्लाह तुम मर गए हो? कहने लगा हां, मैं ने कहा तुम्हारा क्या हाल है? कहने लगा!

ان اصحٰب الجنة اليوم فی شغل فکهون، هم و ازواجهم فی ظلل علی الارآئک متکئون، لهم فيها فاکهة و لهم ما يدعون، سلٰم قولا من رب رحيم.

अरे तारिक़! क्या पूछते हो। जन्नत में हम तख़्तों पर अपनी जन्नत की औ़रतों के पहलू में लेटे हुए हैं, और कभी तख़्तों पर बैठ कर जन्नत के फल खाते हैं, और अल्लाह तबारक व तआ़ला से जो हम चाहते हैं वो हमें देता है और जो तमन्ना करते हैं।

वो पूरी करता है और इससे बढ़ कर سلٰم قولا من رب رحيم और हमें सलाम भी कहता है।

मैं ने कहा, यार तुझे मौत की कोई तकलीफ़ भी हुई थी? तीन दिन तक वो सक्ते में रहा, कहने लगा अल्लाह की क़सम मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हुई, बस एक फ़रिश्ता मेरे पास आया और उसने मेरे अंगूठे को हिलाया और कहने लगा अ़ब्दुल्लाह, चलो अल्लाह तुम्हें बुलाता है, मैं उसके

पास चला गया, मैं ने पूछा तुम्हारी रूह कैसे निकली? कहने लगा बस चुटकी बजाते ही निकल गई।

उसका बाप जानता था कि मेरा और उसका तअ़ल्लुक़ था, वो मेरे पास आ जाता, मौलवी तारिक़ साहब बताओ अ़ब्दुल्लाह ज़िन्दगी कैसे गुज़ारता था? ऐसे बाप अल्लाह हर जगह पैदा कर दे, मुझसे पूछता, मेरा बेटा कैसे वक़्त गुज़ारता था? मुत्तक़ी था? वक़्त ज़ाय तो नहीं करता था? कहीं उसको अ़ज़ाबे क़ब्र तो नहीं हो रहा? देखो कैसा दर्द है? आज के बाप को देखो उसका दर्द क्या है। हराम हलाल इकट्ठा खिलाता है जब औलाद जवान होती है तो फिर बाप के सर में भी जूते मारती है, और मां के सर में भी जूते मारती है, जब अपनी औलाद को आप हराम खिलाओगे, तो तुम तवक्क़ो न रखो कि ये तुम्हारे फ़रमांबरदार बनेंगे, ये तुम्हारे सर पर जूते मारेंगे, जिस औलाद की ख़ातिर आप अपने सारे जज़्बे मिटा कर उमर बर्बाद कर देते हो औलाद जवान हो कर तुम्हारे हाथ तोड़ती है, कहती है तू तो बूढ़ी हो गई है, क्या बकती है, बाप से कहता है तू ने हमारे लिए बनाया ही क्या है? ये आज के रोज़मर्रा के वाक़ेआ़त हैं।

उसका बाप जब भी रायवण्ड में आता, कहता एक बात बता दो, मेरा बेटा कैसे वक़्त गुज़ारता था, ज़ब मैं ने ख़्वाब में देखा तो मैं ने कहा! भई आप ख़ुश हो जाओ अल्लाह तआ़ला ने मुझे तो ये दिखाया!

गुलशन तेरी यादों का महकता ही रहेगा

अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहे हैं।

يا ابن آدم يا عبادى، انى لم اخلقكم لاكثر كم من قله، ولا ستائس بكم وحشة، ولا لاستعينكم على امر قد عجزت عنه.
انما خلقتكم لتعبدونى فضيلا و تذكرونى كثيراً و تسبحونى بكرة واصيلا.

मेरे बन्दो! तुम्हें इस लिए पैदा किया कि तुम्हारी वजह से मेरे ख़ज़ाने पूरे हो जाएंगे, तुम्हें इस लिए पैदा किया कि तुम्हारी वजह से दिल लगाउंगा, तुम्हें इस लिए नहीं पैदा किया कि तुम्हारी वजह से मेरे काम बन्द पड़े थे, तुम आकर मेरे काम करोगे, नहीं! नहीं! मैं ने इस लिए पैदा किया है कि सुबह शाम मेरे बन के ज़िन्दगी गुज़ारो मेरी इत्तिबा में ज़िन्दगी गुज़ारो।

अल्लाह को साथ लिए बग़ैर ज़िन्दगी कटी हुई पतंग की तरह है

क़ुरआन में ये दुस्तूर दिया है कि अल्लाह को लेलो, अल्लाह को लिए बग़ैर न दुनिया बनेगी, न आख़िरत बनेगी, ने अन्दर को सुख है न बाहर को सुख है, मेरे रब की क़सम! अगर इन्सान सारी दुनिया का माल व मताअ़ इकट्ठा कर ले, सारी दुनिया का हुस्न अपने पहलू में बिठा ले सारी दुनिया के तख़्त उसके सामने ताराज हो जाएं, सारी दुनिया के ख़ज़ाने सिमट कर उसके क़दमों में आ जाएं, अग़र वो अल्लाह पाक से दूर है तो उनमें से क़ोई चीज़ भी ऐसी नहीं जो उसके दिल के ज़ख़्मों को भर सके।

कोई ऐसी चीज़ नहीं जो उसकी रूह की तड़प का

इलाज बन सके, कोई ऐसी चीज़ नहीं जो उसके अन्दर के अंधेरों को रोशन कर सके, दिल का मरहम अल्लाह ही है, रूह के अंधेरों की नूरानियत अल्लाह ही है, अन्दर की परेशानियों का इलाज अल्लाह ही है, बाहर के दुख दर्द की दवा करने वाला अल्लाह ही है, और अन्दर के ग़मों को दूर करने वाला भी अल्लाह ही है और ज़मीन को मुसख़्ख़र करने वाला भी अल्लाह ही है और कायनात को मुसख़्ख़र करने वाला भी अल्लाह ही है।

ऐ इन्सान! तुझे खेल कूद के लिए नहीं पैदा किया

मेरे भाइयो! अल्लाह की क़सम अल्लाह के बग़ैर हम कुछ भी नहीं, वो राज़ी न हुआ तो कुछ न हुआ और वो राज़ी हो गया तो सब कुछ हो गया, अगर वो नाराज़ है तो हम दोनों जहां में बाज़ी हार गए और अगर वो राज़ी है तो हम दोनों बाज़ी जीत गए। चाहे हम सूलियों पर लटकाए जाएं, चाहे आरों से चीरे जाएं, चाहे दो टुकड़े कर दिए जाएं, चाहे जिस्म से गोश्त उधेड़ दिया जाए।

मेरे भाइयो! افحسبتم انما خلقنكم عبثا अल्लाह कहता है कि मेरे बन्दो! तुम्हारा क्या ख़याल है कि बेकार हो? कोई काम नहीं? बस नाचना कूदना, पैसे इकट्ठे करना, यही काम है नहीं, ايحسب الانسان ان يترک صدا मैं ने यूं ही तेरा सारा बेकार काम बनाया है, तुझे ऐसे ही छोड़ दूंगा, फ़ारिग़ छोड़ दूंगा, तेरे ऊपर कोई नहीं है? है ان السمع والبصر والفواد كل اولئک كان عنه مسئولا

तेरी आंखों से पूछुंगा क्या देखा? तेरे दिल से पूछूंगा कि कुछ ज़ज्बा ले कर आया? तेरे कानों से पूछूंगा क्या सुनकर आया? ये तो ऊपर से एक निज़ाम चल रहा है, जिसने हमें जकड़ा हुआ है, मेरे भाइयो! لا الٰه الا الله का मतलब ये होता है कि आज के बाद हम अपनी मर्ज़ी की ज़िन्दगी नहीं गुज़ारेंगें। जहां गलास्को हो, अमेरीका हो, मदीना हो, मक्का हो, ऐ अल्लाह हम वो करें जो तू चाहता है, तेरी मान कर चलेंगे, मनचाही पर नहीं चलेंगे। तेरी चाहत पर चलेंगे।

अदना दर्जे के जन्नती का वाक़ेआ

अदना दरजे का जन्नती जब जन्नत में जाएगा, उसके लिए दरवाज़ा खुलेगा, तो जो उसका ख़ादिम दरवाज़ा खोलेगा, ये उसके हुस्न व जमाल को देख कर सर झुकाएगा, वो समझेगा यें फ़रिश्ता है, कहेगा ये आप क्या कर रहे हैं? पूछेगा तुम फ़रिश्ते हो? वो जवाब देगा नहीं मैं तो आपका ख़ादिम व नौकर हूं, उसके लिए जन्नत में कारपेंटिंग होगी, चालीस साल तक उसपर चल सकता है, और उसके दोनों तरफ़ अस्सी हज़ार ख़ादिम होंगे, और कहेंगे ऐ मेरे आक़ा आपने इतनी देर लगा दी? आप इतनी देर से आए? कहेगा शुक्र करो मैं आ गया तुम्हें क्या ख़बर कहां फंसा हुआ था, ऐसी धुलाई हो रही थी।

आज कौन बादशाह है?

मेरे मोहतरम भाईयो! सबको फ़ना एक को बक़ा, रोज़े क़यामत अल्लाह जल्ल जलालहू ज़मीन को पकड़ेगा,

आसमान को पकड़ेगा, सातों ज़मीन व आसमान को लपेटेगा, फिर एक झटका देगा, जैसे धोबी कपड़ों को देता है, अल्लाह एक झटका देगा फिर इरशाद फ़रमाएगा انـــا الملِك मैं बादशाह हूं, फिर दूसरा झटका देगा फिर कहेगा انـــا الـقـدوس السلام الـمومن मैं सलामती वाला, फिर अल्लाह तआ़ला तीसरा झटका देगा फिर कहगा انـــا الـمهيـمن العزيز الجبار المتكبر मैं मुहैमिन, मैं अ़ज़ीज़, मैं जब्बार, मैं मुतकब्बिर, फिर अल्लाह तआ़ला पूछेगे, ايـــن الـمـلوك बादशाह कहां हैं, ايـن الـجـبار दुनिया में ज़ुल्म करने वाले कहां हैं, لـمن الملك اليوم आज कौन बादशा है। कोई हो तो जवाब दे, कोई हो तो बोले, अकेला जवाब देगा, ख़ुद अपने सवाल का जवाब दे रहा है, अल्लाह, अकेले अल्ला की बादशाहत है, जो الواحد है القهار जो ग़ालिब है, जिससे कोई लड़ नहीं सकता, टकरा नहीं सकता, छीन नहीं सकता, भाग नहीं सकता, छुप नहीं सकता, ايــــن المفر، भागो, कहां भागोगे, لا تخفى منكم خافيه छुपोगे, لا تنفذون الا بسلطان लड़ो कैसे लड़ोगे।

दुनिया का सबसे पहला क़त्ल

क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला जो सबसे पहला फ़रीज़ा फ़रमाएगा वो क़ातिल और मक़तूल का होगा, मामलात की पहली कचेहरी जो अल्लाह के दरबार में लगेगी उसमें इस तरह पेश होंगे कि हाबील की गर्दन क़ाबील के हाथ में होगी और हाबील ने क़ाबील का गिरेबान पकड़ा

हुआ होगा, क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया था और हाबील अल्लाह से अर्ज़ करेगा या अल्लाह! इससे पूछ इसने मुझे क्यों क़त्ल किया था?

फिर क़ाबील से लेकर आज तक जितने लोग क़त्ल कर रहे हैं और आज से क़यामत तक जितने क़त्ल होंगे, ये सब ज़ालिम इसी तरह पकड़े जाएंगे कि हर मक़तूल चाहे वो गोली से मारा गया हो, पत्थर से मारा गया हो, ज़हर से मारा गया हो, उसकी गर्दन क़ातिल के उलटे हाथ में होगी और मक़तूल का हाथ क़ातिल के गिरेबान पर होगा और उसको अल्लाह तआ़ला के अर्श के नीचे ला कर सवाल करेगा। या अल्लाह!

पूछ इससे इसने मुझे क्यों क्तल किया था? तो ईमान का कमाल ये है कि मुसलमान के अख़लाक़ उमदा हों एक और हदीस में आता है कि एक औ़रत की इबादत बहुत ज़्यादा है लेकिन अख़्लाक़ अच्छे नहीं हैं, आप सल्ल0 ने फ़रमाया : दोज़ख़ में जाएगी। फिर एक दूसरी औ़रत के बारे में ज़िक्र किया गया उसकी इबादात तो ज़्यादा नहीं हैं उसके अख़्लाक़ बहुत अच्छे हैं। आप सल्ल0 ने फ़रमाया जन्नत में जाएगी। तो अख़्लाक़ की बलन्दी ईमान है।

झूठ बोलना और दाढ़ी मुंडाना दो गुनाह

मेरा एक दोस्त ताजिर था, उसने कुछ वक़्त के बाद दाढ़ी रख ली, तीन चार महीने मुलाक़ात नहीं हुई, जब अर्से बाद मिला तो दाढ़ी साफ़, मैं ने कहा ये क्या किया? कहा:

जी, सारा दिन झूठ बोलता था, मैं ने ख़ुद से कहा कि

ऐसे ही दाढ़ी रख के झूठ बोलुंगा तो मैं ने मुंडवा दी।

मैं ने कहा पागल अब तुम ने दो गुनाह किए हैं, झूठ का तअ़ल्लुक़ दाढ़ी से नहीं था, झूठ का तअ़ल्लुक़ कलिमे के साथ था कि कलमा कह रहा है, झूठ न बोला करो, दाढ़ी तो नहीं कह रही कि झूठ न बोलो, अब तो तुमने दो गुनाह शुरू कर दिए, एक झूठ बोलना, एक दाढ़ी मुंडाना, तुम दो परचों में फेल हो गए।

जिसने अल्लाह से तअ़ल्लुक़ तोड़ लिया वो परेशानियों के समुन्दर में डूब जाएगा

ख़्वाहिशात और मर्ज़ी की ज़िन्दगी पर क़दम उठाने वालों के लिए अल्लाह का फ़ैसला है :

من اعرض عن ذكرى

जो मेरी याद से मुंह मोड़ कर चलेगा मैं उसकी ज़िन्दगी तंग कर दूंगा। तंगी से मुराद मआ़शी तंगी या पैसे की तंगी नहीं معيشة ضنكا हम उसकी ज़िन्दगी तंग कर देंगे, उनके सीने घुट जाएंगे, उनके दिल बन्द हो जाएंगे, वो हक़ीक़ी ख़ुशियों से ना आशना हो जाएंगे, उनका दामन कभी गुलाब के हक़ीक़ी फूलों से न भरेगा, वो हमेशा काग़ज़ के फूलों को गुलाब समझ कर सूंघने की कोशिश करते रहेंगे। वो बड़ के दरख़्तों से अपने आपको महकाने की कोशिश करेंगे, सेहरा को गुलिस्तां समझ कर अपने दामन को धोखा देने की कोशिश करते रहेंगे, वो कभी भी मंज़िल तक न पहुंच पाएंगे, वो कभी भी हक़ीक़ी ख़ुशियों को हासिल न कर पाएंगे, जो अपनी ख़्वाहिश को पूरा करना,

अपनी ज़िन्दगी की मेराज बना लेंगे, अल्लाह थोड़ी देर के लिए उन्हें दुनिया दे देगा।

من كان يريد الحيٰوة الدنيا وزينتها जो हमसे दुनिया और दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत का तलबगार बनता है हम दे देते हैं उसके लिए दर खोल देते हैं।

من كان يريد العاجلة من كان يريد الحيٰوة الدنيا و زينتها

कहता है मुझे सब कुछ यहीं मिल जाए, तो हम क्या करते हैं? हम उनके लिए दुनिया खोल देते हैं, दुनिया आना शुरू हो जाती है, इसमें कोई कमी नहीं होती।

आगे क्या होता है, आगे मौत के बाद जहन्नम की आग के सिवा कुछ नहीं बचता, जो दुनिया में किया बो वहीं धरे का धरा रह गया, उनकी सारी कोशिशें क़यामत के दिन बातिल हो गई, और दुनिया भी ख़राब और आख़िरत भी ख़राब कर के हमेशा की आग का ईंधन बन के रह गए।

अल्लाह! मुझे बचा औलाद को जहन्नम में डाल दे

ऐसे ताक़तवर बादशाह के सामने हम एक दिन पेश होने वाले हैं, मैं ने शुरू में ही कहा था हम आज़ाद नहीं, इतनी बड़ी हस्ती के साथ हमारा वास्ता है जो कल को खड़ा करने वाला है, ولقد اجتمعونا فردا अकेले अकेले كما خلقنكم اول مرة जैसे अकेले आए अकेले जा रहे हैं, अल्लाह की बारगाह में मां बेगानी बन गई, बीवी नाआश्ना बन गई।

औलाद ने साथ छोड़ा, दोस्तों ने आंखें फेर लीं, दुश्मन भी पराए अपने भी पराए, अपनी जान भी पराई, कि ये

हाथ बोलेगा, मैं ने ये ज़ुल्म किया, ये पांव बोलेगा, मैं वहां तेरी नाफ़रमानी में चला, ये पेट बोलेगा, मैं ने फ़लां हराम लुक़्मा खाया।

ये पूरा जिस्म मेरा मुख़ालिफ़ होगा, मेरे अह्ल व अयाल मुझे छोड़ गए, उस दिन फिर मुजरिम पुकारेगा, يود المجرم لو يفتدى من عذاب يومئذ ببنيه मेरी औलाद को डाल दे दोज़ख़ में, وصاحبته واخيه मेरी बीवी, मेरे भाइयों को डाल दे, दोज़ख़ में وفصيلته التى تؤويه मेरे ख़ानदान को डाल दे दोज़ख़ में, मुझे बचा ले, और अगर ये भी क़बूल नहीं तुझे ومن فى الارض جميعا सारे इन्सानों को दोज़ख़ में डाल दे पर मुझे बचा ले, كلا नहीं नहीं, ये नहीं हो सकता।

ख़ालिक़ की नाफ़रमानी से मर जाना बेहतर है

आप सल्ल० ने फ़रमाया اَلَا ميتة فى طاعة الله خير من حيٰوة فى معصية الخالق याद रखना! फ़रमांबरदारी में मर जाना, ये नाफ़रमान बन कर ज़िन्दा रहने से बेहतर है, ये हदीस ये बता रही है कि हुकूमतों की दौड़ में अगर अल्लाह नाराज़ हो रहा हो तो हुकूमत छोड़ दो।

मेरे भाइयो! अल्लाह को राज़ी करना अपनी ज़िन्दगी का काम बनाओ, अल्लाह राज़ी हो गया तो सारे काम बन गए। अल्लाह तआला नाराज़ हो गया तो ये जहां में कुछ दिन अल्लाह तआला देता है, कुछ वक़्त के लिए मिल जाता है, अल्लाह काफ़िर को भी देता है, मुसलमान को भी देता है, लेकिन मौत के बाद बहुत बड़ी तबाही आने वाली है,

जिसको इन्सान बर्दाशत नहीं कर सकता।

गुनाह करने से पहले मेरे अज़ाब का सोच लेना

يا ابن آدم لا تتحمل سخطى ولا تطيق عذابى فتعصينى मेरे बन्दे मेरी नाफ़रमानी करने से पहले सोच लेना कि तुम में ताक़त नहीं कि तेरा जिस्म आग बर्दाश्त कर सके, तुम में ताक़त नहीं है कि मेरे गुस्से को बर्दाश्त कर सके, गाने सुनने से पहले सोच लेना कि इस कान में दोज़ख़ का पिघला हुआ शीशा डाला जाएगा किसी की बेटी को नज़र उठाने से पहले सोच लेना उसमें आग के कील उतारे जाएंगे।

सूद खाने से पहले सोच लेना कि पेट के अन्दर साँप और बिच्छू डाले दिए जाएंगे, पेट के अन्दर साँप चले जाएंगे, अन्दर बिच्छू चले जाएंगे, जो सूद खाने वाले को अन्दर से काटेंगे, वो बाहर से काटता है तो चालीस साल तड़पता रहता है और जिसके पेट के अन्दर साँच चला जाएगा बिच्छू चला जाएगा और उसका पेट होगा जैसे ये पहाड़ है, इतना बड़ा पेट होगा, वो साँपों से भरा हुआ होगा, वो बिच्छुओं से भरा हुआ होगा, उसको काटेगा और उसको बचाने वाला कोई नहीं होगा।

मर के मर जाते तो मसला आसान था मगर!

मेरे भाइयो! मर के मर जाते तो मसला आसान था, मर के न उठते तो भी मसला आसान था, मुसीबत ये है कि

मर के मरता नहीं, मर के फिर ज़िन्दा हो जाता है, अगर यहां ग़फ़लत में मर गए, तो वहां बहुत बड़े ख़ौफ़नाक अन्जाम का सामना करना पड़ेगा, अगर कुछ लेकर चले गए तो बड़ी ख़ूबसूरत ज़िन्दगी है जिसका आगाज़ तो है लेकिन उसका अंजाम कोई नहीं, उसकी इब्तिदा तो है उसकी इन्तिहा कोई नहीं, ये कायनात बड़ी तेज़ी के साथ अपने अनजाम की तरफ़ चल रही है।

من مات فقد قامت قيامته जो मरता है उसकी क़यामत आ ही जाती है, एक क़यामत इस कायनात की भी आने वाली है, अन्क़रीब ख़त्म होने वाली है, और उसको मौत का झटका तोड़ने वाला है, और हमें बिलकुल बेबस कर दिया जाएगा, क़ब्र की चहार दीवारी में फेंक दिया जाएगा, जहां इन्सान चीख़ना चाहे, चिल्ला नहीं सकता, बताना चाहे बता नहीं सकता, कहीं मय्यत होती है तो कहती है।

لا تقدمونی मुझे न ले जाओ, पूरी कायनात इसका नौहा सुनती है, لا تقدمونی मुझे क़ब्र में न ले जाओ, उसका एख़्तियार ख़त्म हो चुका है।

जन्नत के परिन्दे

ऊपर फलों की बहार है, सामने परिन्दों की क़तार है, لحم طير مما يشتهون परिन्दे उड़ते हुए जा रहे हैं, भागे हुए आ रहे हैं, يا ولی الله كل لی अल्लाह के दोस्त मुझे खाओ, दूसरा भागा भागा आएगा, ना ना उसे नहीं मुझे खाओ, तीसरा आएगा, इसे नहीं मुझे खाओ, परिन्दे लड़ रहे

हैं मुझे खाओ मुझे खाओ, आपस में झगड़ा कर रहे हैं,

तुम्हारे घर की मुर्गी ज़िब्ह करने लगो तो तुम्हारे हाथ में नहीं आती, और यहां परिन्दे झगड़ा कर रहे हैं, मुझे खाओ, मुझे खाओ, वो कहता है मुझे खाओ, उनमें से एक कहता है :—

يا ولى الله انى رعيت من الجنة تحت العرش و شربت من ماء السلسبيل.

ऐ अल्लाह के दोस्त मैं जन्नतुलफ़िरदौस की घास को खाया है और तूबा का जो चश्मा है सलसबील उसका पानी पिया है, मेरा एक तरफ़ भुना हुआ है एक मेरे शोरबे वाला है, कया करोगे? खाओगे नहीं खाओगे? जिसको चाहोगे खाओगे।

सामने परिन्दों की क़तारें, ऊपर फलों की बहार, नीचे नहरों की अन्हार, انهار من ماء انهار من لبن انهار من عسل انهار من خمر नहरें ही नहरें, दूध की नहरें, शहद की नहरें, शराब की नहरें, पानी की नहरें, कैसी? मिट्टी की नहीं, एक किनारा याक़ूत का है, एक किनारा मोती है, ज़मीन के नीचे कस्तूरी है, याक़ूत और मोती का कुनाह है और कस्तूरी उसका गारा है और वो लहरें खाती हुई चलती हैं, और आपके महल में जा के टकराएंगी।

अल्लाह की मोहब्बत का ज़ायक़ा

मेरी बहनो! आज बीवी ने ख़ाविन्द की मोहब्बत का ज़ायक़ा चखा, मां बाप ने औलाद की मोहब्बत का ज़ायक़ा

चखा हे, और हम सब ने दिरहम व दीनार, सोने और चाँदी, रूपये और पैसे की मोहब्बत का ज़ायक़ा चखा, लेकिन नहीं चखा तो अपने रब की मोहब्बत का ज़ायक़ा नहीं चखा, अल्लाह की मोहब्बत में रोना, अल्लाह की मोहब्बत में परेशान होना, अल्लाह की मोहब्बत में तकालीफ़ उठाना, ये सब आज उम्मत के दिल से निकल गया, ये उम्मत बांझ हो गई, सबके दिल की दुनिया उजड़ गई, दिल अंधे आँखें रोशन हैं, दिल काले, घर सफ़ेद हैं।

मेरी बहनो! अंबिया का काम ये है कि आकर अपनी जान माल और धड़ की बाज़ी लगा कर, इन्सानों के अन्दर ईमान की शमा रोशन करते हैं, ईमान का चिराग़ जलाते हैं, दिलों को अल्लाह की मोहब्बत में आबाद करते हैं, पेशानियों को ज़मीन पर टिका कर अल्लाह की मोहब्बत में रोना सिखाते हैं, मख़्लूक़ की मोहब्बत निकाल कर अल्लाह की मोहब्बत को पैवस्त करते हैं।

तारीख़ से सबक़ लो

हाए! हाए! किस बात पे हम दुख कर रहे हैं, कि क्रिकेट हार गए, चन्द दिनों पहले मैं बहुत रोया, कि आने वाला मुअर्रिख़ इस क़ौम की तारीख़ को लिखने के लिए जब क़लम उठाएगा,, तो सिर्फ़ ये नहीं कि उसका वजूद कड़वा हो जाएगा, बल्कि उसका क़लम तलवार बन कर काग़ज़ पर नक़्श बनाएगा, किस कड़वाहट से हमारी तारीख़ लिखी जाएगी?

मेरे भाइयो! जब स्पेन डूब रहा था, तो बादशाहे वक़्त

कश्तियों के मुक़ाबले करवाते थे,

घुड़ दौड़ के मुक़ाबले हो रहे थे,

ऊँटों के मुक़ाबले हो रहे थे,

पहलवानी के मुक़ाबले हो रहे थे,

तुर्किस्तान में आग लग रही थी,

चंगेज़ ख़ान ख़ून की होली खेल रहा था,

और खोपड़ियों के मीनार बना रहा था,

बग़दाद के शहज़ादे कबूतर उड़ा रहे थे,

पहलवान को लड़ाया जा रहा था, अखाड़ों में कुश्तियां हो रही थीं, घोड़ों की दौड़ हो रही थी, और क़यामते सुग़रा सर पर आ चुकी थी, लेकिन वो इसी खेल कूद में मस्त थे, उस ज़माने के क्रिकेट जीतने और हारने पर खुश हो रहे थे।

मैं कहां से आँसू लाऊँ? मैं कहां से फ़रयादें लाऊँ? जो उम्मत, जो क़ौम इस क़दर पस्त हो चुकी हो, कि बल्ले और गेंद की शिकस्त पर अफ़्सुर्दा हो, और अल्लाह की बड़ी बड़ी नाफ़रमानियां देख कर उनकी हाए न निकलती हो, उनको नाफ़रमानियों का ग़म न हो, उन नाफ़रमानियों पर किसी के आँसू न टपके, जब लोगों की नाफ़रमानियां, देखते हुए भी उनकी आँखें खुशक हो जाए मस्जिद खाली है, बाहर गप्पें मार रहें हैं, मस्जिद खाली है और बाहर जूए की बाज़ियां लग रही हैं।

माएं तड़प रही हैं, और औलाद नाच रही है, बाप बिस्तर पर करवटें बदल रहा है।

हाए! मेरा पुत्तर मैंनू दो चार मरोड़े भर देंदां

मेरा बेटा मुझे थोड़ा सा दबा ही देता, लेकिन बेटे को टेलीवीज़न से फ़ुर्सत नहीं, है, मैच लगा हुआ है, और गाने लगे हुए हैं, दूसरी तरफ़ बाप थका हुआ है और इन्तिज़ार में है कि कोई मेरा बच्चा मेरी ख़िद्मत कर देता।

क़ब्र में कीड़ों की चादर

मेरे भाइयो! हम छोटे छोटे मसायल को मसला बना कर बैठे हैं, मर जाना है, ये भी तो बड़ा मसला है, हम तो पुरानी चादर उतार कर बिस्तर पर नई चादर बिछवाते हैं, और जिस वक़्त मिट्टी का बिस्तर होगा? तो उस वक़्त क्या बात बनेगी, और मिट्टी की चादर होगी तो उस वक़्त क्या होगा?

जब बल्ब फ़्यूज़ हो जाए तो फ़ौरन बल्ब लगाओ, वो क्या दिन होगा जब अंधेरे के घर में जा पड़ेंगे, यहां घंटी लगी हुई है, नौकर को बुलाइये वो फ़ौरन आ जाता है।

वो क्या दिन होगा न कोई सुन सकेगा? न कोई सुना सकेगा, तो कितना ख़ौफ़नाक अन्जाम है, कपड़े पे दाग़ लगा तो उतारो, आज बदन पे कीड़े रेंग रहें हैं, घंटों चेहरे को सजाया, कितने साबुन, कितने शैमपू, ख़ुश्बूएं कितनी, और वो क्या दिन होगा, उन आँखों को कीड़े खा रहे होंगे और उसी पर चल रहे होंगे, पूरा वजूद कीड़ों की ग़िज़ा हो चुका होगा, उन कीड़ों को दूसरे कीड़े खा रहे होंगे, افحسبتم انما خلقناكم عبثا मेरे बन्दो तुम्हें क्या हो गया है? कैसे ज़िन्दगी गुज़ार रहे हो, कि जैसे तुम्हें आज़ाद पैदा किया गया

है, तुम पर कोई निगहबान नहीं है, तुम्हें ख़बर नहीं है कि وما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد तुमहारी ज़बान का हर बोल मैं लिख रहा हूं, بلىٰ و رسلنا لديهم يكتبون मेरे फ़रिश्ते तुम्हारे हर बोल को लिख रहे हैं। तो अल्लाह तआ़ला की खुली किताब हमें बता रही है, तुम्हारा हर बोला लिखा जाता है, يعلم خائنة الاعين तुम्हारी आँख ग़लत देखती है, वो भी लिखा जाता है, وما تخفى الصدور तुम्हारे अन्दर में ग़लत जज़्बात पैदा होते हैं, वो भी लिखा जाता है। وما خلقنا السماء والارض وما بينهما لعبين ज़मीन आसमान और जो कुछ उसमें है मैं ने कोई खेल कूद केलिए तो नहीं पैदा किया, لو اردنا ان نتخذ لهوا لاتخذنه من لدنا अगर मुझे खेल का कोई तमाशा बनाना ही होता अपने पास बनाता, तुम्हें पैदा मैंने इसलिए थोड़ा ही किया है? तो जब हम खुद नहीं बने और खुद जाना भी नहीं है और फ़िर मर के मर जाते तो बड़ा मसला आसान था, अगर मर के मिट्टी हो जाना है, लेकिन मसला ये है कि मर के मरना नहीं है, मर के नई ज़िन्दगी में दाख़िल होना है।

नमाज़में खुशू व खुज़ू पैदा करने का नुस्ख़ा

एक छोटा सा नुस्ख़ा मैं बताता हूं, एक तो सबने क़ुरआन मजीद में से قل هو الله احد से जो ठेका किया हुआ है, कि हमने हर रकअ़त में तुझे ही पढ़ना है, यानी हर रकअ़त में قل هو الله احد ही पढ़ते हैं, आज से ये ठेके तब्दील कर दो, दो चार और ठेके कर लो, कम से कम चार सूरतें तो याद करो, ताकि हर रकअ़त में अलग सूरत पढ़ी

जाए, एक ही सूरत को हर रकअ़त में पढ़ना, उलमा ने मकरूह लिखा है, मकरूह है और बाज़ दुआ़ए क़ुनूत की जगह भी قل هو الله احد ही पढ़ते हैं।

तो भाई ये कहां का फ़तवा है, चलो कम से कम दुआ़ की जगह दुआ़ तो पढ़ो, अगर दुआ़ पढ़ोगे तो वाजिब अदा होगा, लेकिन दुआ़ की जगह قل هو الله احد पढ़ने से तो वाजिब अदा नहीं होता, और वित्र होती ही नहीं।

दुआ़ए क़ुनूत याद करें और जब तक नहीं याद होती, उस वक़्त तक ربنا اٰتنا فی الدنیا حسنة و فی الآخرة حسنة و قنا عذاب النار पढ़ लिया करें, तो ये दुआ़ए क़ुनूत के क़ायम मक़ाम हो जाएगा, लेकिन قل هو الله احد तो क़ायम मक़ाम नहीं होती।

एक तो हम बदल बदल कर सूरतें पढ़ें, और दूसरा ये कि रुकूअ़ में سبحان ربی العظیم तीन दफ़ा के बजाए पाँच दफ़ा पढ़ना शुरू करें और ये भी नहीं कि जितनी देर में तीन दफ़ा पढ़ा जाता है, तेज़ तेज़ उतनी ही देर मे पाँच दफ़ा पढ़ लिया, तो फ़ायदा हासिल न होगा, बल्कि आराम से ठहर ठहर कर पाँच दफ़ा पढ़ें।

और जब रुकूअ से खड़े हों तो سمع الله لمن حمده और ربنا لک الحمد ये सब खड़े खड़े कहो, अभी आ़म तौर पर हमारा ربنا لک الحمد सजदे में पूरा होता है, फिर الله اکبر कह देते हैं इसलिए ربنا لک الحمد खड़े खड़े कहें।

मुसीबत पर सब्र करने का इनाम

एक हदीस ज़माने के बाद याद आई, يـقـول البـلاء كـل يـوم الى اين اتوجه يا رب मुसीबत अल्लाह से सुबह उठते ही पूछती है या अल्लाह मैं आज कहां जाऊँ? तो अल्लाह कहते हैं, الـى احبـائى و اولى طاعتى जा देख ले जो मेरे दोस्त हैं, मेरे फ़रमांबदार हैं, उनके घर चली जा, मुसीबत को अल्लाह कह रहे हैं, क्यों? कहा ابـلـوابک اخبـارهم देखूंगा امـحص بک ذنوبهم उनके गुनाहों से उनको पाक कर दूंगा। थोड़ी सी तकलीफ़ दे कर ارفع بک درجتهـم उनके दरजे जन्नत में बुलन्द कर दूंगा। يـقـول الـرحـآء كل يوم माल व दौलत पूछता है: या अल्लाह! मैं कहां जाऊँ? रोज़ाना सुबह, अल्लाह तआला फ़रमाता है, الى اعدائى و اولى معصيتى कि जा मेरे दुशमनों के घर चला जा, दुश्मनों के घर क्यों? कहा اريـد بـذالک طـغيـانهم उनकी बदमाशी और बढ़ेगी, اضـاعف بـذالک عذابهم उनका अज़ाब भी दुगना होता चला जाएगा, اخـــربک وعـجل لک على غفلتهم उनकी ग़फ़लत बढ़ती जाएगी, بهـم और उनकी अगर कोई नेकी है तो उसका बदला उन्हें दुनिया में मिल जाएगा और आगे ख़त्म हो जाएंगे لـيـــس لهـم فـى الآخـرة الا النار आगे दोज़ख़ की आग के सिवा उनके लिए कुछ बाक़ी नहीं बचेगा।

8 लाख साल तक दीदारे इलाही

इमाम ग़िज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैह की एक रिवायत

मुझे इसकी सनद का पक्का पता नहीं है लेकिन इमाम ग़िज़ाली रह0 की एक रिवायत कि अल्लाह जल्ल जलालहू का दीदार जो पहला दीदार होगा, आठ लाख वर्ष तक होता रहेगा, देख रहे हैं, अपने रब को देख रहे हैं, अरे महबूब के पास बैठा रहे, रात गुज़र जाती है, पता ही नहीं चलता तो वो मोहम्द सल्ल0 का रब है।

इबराहीम अलैहि0 का रब है, मूसा अलैहि0 का रब है, ख़लील का रब है, यूसुफ़ अलैहि0 का रब है, जिसे देख कर औरतों ने फ़ल काटने के बजाए قطعن ایدیھن हाथ काट दिए, वो रब कैसे हुस्न व जमाल वाला होगा, कभी इसपे भी तो सोचा करो।

भाई! दुकानों को ही सारी ज़िन्दगी देदी कि कमाना फ़र्ज़ है, कमाना फ़र्ज़ है, अरे उस रब का पड़ोस लेना उससे भी बड़ा फ़र्ज़ है, अल्लाह अपना दीदार कराके हंसता हुआ सामने आएगा और कहेगा, बता तेरा क्या हाल है? सोचो तो सही उसमें क्या लज़्ज़त होगी।

जिसे बाबे इश्क़ से वास्ता पड़ा होगा उसे ही ख़बर होगी, हमें तो पता नहीं है, हदीस शरीफ़ में पढ़ा है इसलि आपको सुना देते हैं कि वो क्या मन्ज़र होगा जब अल्लाह तुम्हें अपना दीदार करा रहा होगा।

और जन्नत की हूरें नग़मे गा रही होंगी और अल्लाह कहेगाः ऐसा नग़मा कभी सुना है, कहेंगे कभी नहीं सुना, अल्लाह कहेगाः ऐ दाऊद अ़लैहि0 तू सुना, हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम सुनाएंगे फिर अल्लाह तआ़ला कहेगा बताओ

ऐसा कभी सुना, कहेंगे की नहीं सुना, फिर अल्लाह कहेगा, ऐ मेरे हबीब सल्ल0 अब तू सुना, फिर हुज़ूरे पाक सल्ल0 अल्लाह का कलाम सुनाएंगे, कहेगा, ऐसा कभी सुना? कहेंगे कभी नहीं सुना, फिर अल्लाह कहेगा अब मेरा सुनो! मेरा, मेरे जैसा तुमने कभी नहीं सुना होगा, फिर अपना सुनाएगा, अपनी ज़बान से सुनाएगा।

हज़रत मआज़ अदविया का मौत के वक़्त हंसना और रोना

हज़रत मआज़ अदविया रह0, जब रात आती तो कहतीं मआज़! तेरी आख़िरी रात है, कल का सूरज तू नहीं देखेगी, कुछ करना है तो कर ले और ये कह कर सारी रात जागतीं, रात मुसल्ले पर बैठे बैठे सो जातीं, जो सो जातीं, फिर शुरू, फिर अगली रात आती, मआज़! ये आख़री रात है, कल का सूरज नहीं आएगा, कुछ करना है तो कर ले, फिर सारी रात बन्दगी में लगी रहतीं।

अब उनका इन्तिक़ाल होने लगा, तो रोने लगीं, फिर हंसने लगीं तो औरतों ने कहा रोई किस बात पर और हंसी क्यों हो? कहा! रोई इस बात पर कि आज के बाद नमाज़ से महरूमी हो जाएगी, और नमाज़ और रोज़ा आज के बाद छूट गया इस बात पे रोना आया है।

और हंसी किस बात पर? उनके ख़ाविन्द पहले शहीद हो गए थे, सलआ बिन असीम तुर्किस्तान के जिहाद में, वो बहुत बड़े ताबईन में से हैं, यानी सहाबा रज़ि0 के शागिर्दों में से, तो फ़रमाने लगीं हंसी इस बात पर हूं कि वो सामने मेरे

ख़ाविन्द खड़े हुए कह रहे हैं कि तुझे लेने के लिए आया हूं, तो इस बात पर हंस रही हूं, कि अल्लाह ने मिलाप कर दिया कि वो सामने खड़े हैं, सेहन में और कह रहे हैं कि तुझे लेने के लिए आया हूं, और उसके साथ ही इन्तिक़ाल हो गया, तो हम अल्लाह की ज़ात को सामने रख कर चलने वाले बनें।

नबी करीम सल्ल0 का नसबनामा

रसूले पाक सल्लाह अ़लैहि वसल्लम का नसब अस्सी (80) वास्तों तक हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तक जाता है, एक नाम भी तारीख़ ने गुम नहीं होने दिया, गिरने नहीं दिया, मौजूद है, आप देखोगे तो आपको रोज़े रोशन की तरह रास्ते मिलेंगे, मुहम्द सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से चलता है वास्ता :

حضرت محمد ابن عبدالله بن عبدالمطلب بن ھاشم بن عبدالمناف بن قصی بن کلاب بن سری بن کعب بن لوی بن قالب بن فجر بن مالک بن نضر بن کنانه بن خزیمه بن مدرکه بن الیاس بن نضر بن نضار بن معد بن عدنان بن عدی بن ھیسابن سلاما بن عوف بن بعوض بن قموال بن قدیه بن اعوام بن ناشر بن حزا بن بلداس بن یدلاف بن تابغ بن جاھم بن ناحش بن ماخی بن عیفی بن ابتر بن عبید بن ادعا بن ھمدان بن سمدن بن یسبری بن یحزن بن ھلحن بن عراوه بن عیزی بن ذیشان بن عیسر بن اقناد بن عیحام بن مقسر بن نافش بن زارا بن سنی بن مزی بن معوض بن ایرام بن قیدار بن اسماعیل بن ابراھیم بن آذر بن ناشور بن سروش بن وعوف بن

فاعثن بن اعدر بن ارفشاد بن سام بن نوح بن لاملک بن مطثالی بن ادریس بن یاروح بن ملیحل بن عینان بن آنوش بن شیث بن آدم علیہ السلام.

ये अस्सी (80) वास्तों तक नसब नामा है।

अल्लाह की नाराज़गी की निशानी

एक रिवायत में आता है कि अल्लाह तआ़ला जब किसी से नाराज़ होता है तो सबसे पहली चीज़ जो उससे वापस ले लेता है अपनी याद की लज्ज़त वापस ले लेता है, अल्लाह की याद की लज्ज़त नहीं रहती, हमारे एक साथी थे, दो रगें जो दिमाग़ में से आती हैं और मुंह में ज़ायक़ा छोड़ती हैं, मीठा खा रहे हों या नमकीन खा रहे हों, कड़वा खा रहे हों या कसेला खा रहे हों, गरम खा रहे हों, नरम खा रहे हों अगर इन रगों की सपलाई बन्द हो जाए तो मुंह में पत्थर रखो या रोटी पता नहीं चलेगा, कड़वा रखो या मीठा पता नहीं चलेगा। तो एक आदमी ऐसे मरीज़ मिले वो इतने परेशान थे कि दुआ़एं मंगवा रहे थे कि मेरे मुंह का ज़ायक़ा ख़त्म हो गया और मुझे कुछ पता ही नहीं चलता कि मैं क्या खा रहा हूं, तो मुझे याद आया कि कितना ज़माना गुज़र गया कि हमे अल्लाह की याद में मज़ा ही नहीं आता, कोई दुआ़ करो अल्लाह मेरा तअ़ल्लुक़ जिन्दा कर दे और मुझे भी इस नाम और याद में हलावत और मिठास महसूस होने लगे, लोग तीन तस्बीह पूरी नहीं करते तो बाक़ी लज्ज़तें कहां से आएं।

अमेरीकी लड़की का क़बूले इस्लाम

अमेरीका में जमाअत गई, अरबी में बयान हुआ, मर्द भी बैठे थे, औरतें भी बैठी थीं ब्यान के बाद एक तुर्की लड़की आई, कहने लगी एक बात कहती हूं पर आप लोग मुझसे नफ़रत न करेंगे, उन्होंने कहा नहीं हम तो मोहब्बत सीखते हैं, फैलाते हैं, उसने कहा :

मैं तुर्की हूं, मैं ने इस आदमी की बात सुनी है, मुझे कुछ समझ में नहीं आया, क्योंकि मैं अ़र्बी नहीं जानती, लेकिन इसके बयान में ईमान का लफ़्ज़ बार बार आ रहा था, इस लफ़्ज़ ने मेरे दिल पर हथौड़ा मारा है और मेरे ईमान को ज़िन्दा कर दिया है, मैं यहां एक यहूदी लड़के के साथ रहती हूं और बग़ैर निकाह के रहती हूं, इस लिए मैं ने कहा था कि मुझसे नफ़रत न करना।

उस लड़के को बुलाओ, मुसलमान हो जाए तो मेरा निकाह कर दो, नहीं मुसलमान होता तो मैं तुम सबको गवाह बना कर कहती हूं कि मैं अपनी पिछली ज़िन्दगी पर तौबा करती हूं और मैं वापस चली जाऊँगी।

उस लड़के को बुलाया, तीन दिन तक दावत देते रहे, उसने इन्कार कर दिया, उस लड़की को बुला कर कहा कि ये तो नहीं मानता, उसने पर्स में से टिकट निकाल कर दिखाया, कि देखो मैं इस्तंबोल का टिकट ले कर आई हूं, एक लफ़्ज़ ईमान ने उसकी ज़िन्दगी का रुख़ बदल दिया।

मेरे भाइयो! तौबा करें और पूरी उम्मत को तौबा की

लाइन पर लाएं इस ग़फ़लत की ज़िन्दगी से निकल जाएं, वर्ना हलाकत के दरवाज़े खुल जाएंगे। अरे! अल्लाह से ज़्यादा महबूब कौन है जिस से जी लगाया जाए। जों ख़ुद बैठा हुआ है इन्तिज़ार में, सत्तर साल तक एक आदमी कहता है : या सनम, या सनम, या सनम, एक दिन ग़लती से मुंह से निकल गया يا صمد अल्लाह ने फ़ौरन फ़रमाया : لبیک، لبیک मेरा बन्दा, फ़रिश्ते पुकारे या अल्लाह ग़लती से बोल बैठा है, उसको तो तेरा पता ही नहीं। इरशाद हुआः सत्तर साल से इन्तिज़ार में था, कभी तो मुझे बुलाएगा, आज बुलाया तो चाहे भूल से बुलाया।

जब उस आदमी से ऐसा प्यार है जो माने गा उससे कैसा प्यार होगा, ये मुबारक ज़िन्दगी हमने अपने अन्दर ज़िन्दा करनी है, और सारी दुनिया के मुसलमानों में ज़िन्दा करनी है, ये हमारी मेहनत है, ये हमारा काम है।

रुठे रब को मना लो

अपने अल्लाह को राज़ी कर लो, अपने अल्लाह को मना लो, अल्लाह से ज़्यादा मेहरबान कोई नहीं, शफ़ीक़ कोई नहीं, मां क्या जन्नत देगी जो अल्लाह देता है, बाप क्या शफ़कत देगा जो अल्लाह देता है, उसकी फरमांबरदारों से मोहब्बत तो पता नहीं कितनी है, नाफ़रमानों से ज़रा देखना, नाफ़रमानों के बारे में हदीस सुन लो।

يا داؤد بشر المذنبين ऐ दाऊद जा मेरे नाफ़रमानों को ख़ुशख़बरी सुना, नाफ़रमानों को ख़ुशख़बरी दे, हौसले

हार बैठे, दिल छोड़े बैठे हैं, सोच रहे कि तौबा ही कोई नहीं, हमने इतने गुनाह किए कि हमारी तौबा ही कोई नहीं, जा-जा उनको ख़ुशख़बरी सुना। क्या? या अल्लाह, उनको बता तुम्हारा बड़े से बड़ा गुनाह भी माफ़ करना मेरे लिए मसला नहीं। तुम तौबा तो करो, तुम तौबा करो, मेरी माफ़ी देखना, ये क्या छबेइन्साफ़ी है कि बढ़-चढ़ कर बदमाशी करो, फिर कहो कि अल्लाह बड़ा ग़फ़ूर्रुहीम है, तुम मेरी रहमत का मज़ाक़ उड़ा रहे हो, मुझे चैलेंज कर रहे हो, नाउम्मीदी हराम, लेकिन देरी भी हराम।

दुनिया के चार बड़े फ़ातेह

सुलतान महमूद गज़नवी के पास रआया में एक शख़्स रोता हुआ आया, कहा : सुलतान मुअ़ज़्ज़म!

सुलतान मुअ़ज़्ज़म का सबसे पहला लक़ब महमूद गज़नवी को मिला है, सुलतान लफ़्ज़ "अस्सुलतान" इस्लामी तारीख़ में सबसे पहले किसको मिला, वो महमूद गज़नवी को मिला है। इसके बाद तो फिर आ़म हो गया, ये दुनिया का फ़ातेह सानी है। सबसे बड़ा फ़ातेह दुनिया का चंगेज़ ख़ान है। चंगेज़ ख़ान से ज़्यादा शख़्सी फ़ूतूहात किसी शख़्स को हासिल नहीं हैं।

चंगेज़ ख़ान के बाद दूसरे नम्बर पर महमूद गज़नवी है, तीसरे नम्बर पर सिकन्दर यूनानी और चौथे नम्बर पर वो लंगड़ा, नामुराद तैमूर, जो मुसलमानों को ही क़त्ल करता रहा, ऐसा बदबख़्त अल्लाह उसकी क़ब्र को आग से भर दे, मुसलमानों के ही शहर जलाता रहा, ऐसा ज़ालिम था कि

दमिश्क़ को आग लगा दी। सारे दमिश्क़ को और नज़र पड़ी एक गुंबद पर बड़ा ख़ूबसूरत नज़र आया। फ़ौरन एक इंजीनियर बुलवाया, कहा फ़ौरन जलने से पहले पहले उसका नक़्शा काग़ज़ पर उतार लो। मैं ने समरक़न्द में जा कर बनवाना है, बच्चे घरों में जल रहे हैं और ये नक़्शे बनवाने में लगा हुआ है, ऐसा कमबख़्त था।

महमूद गज़नवी की ख़ुदा तर्सी

तो ये महमूद गज़नवी फ़ातेह सानी है दुनिया का, एक शख़्स ने आकर कहा हुज़ूर वाला! आपका भांजा मेरे घर आता है, मुझे मेरे घर से निकाल देता है, मेरी बीवी की इज्ज़त को तार तार करता है।

महमूद का रंग फ़क़ हो गया, कहने लगा : क्या ऐसा होता है? कहा जी! कहा अब अगर आए तो मुझे बताना और पहरेदारों से कहा जिस वक़्त ये शख़्स आए फ़ौरन मुझे इत्तिला करना।

तीसरी रात थी कि वो शख़्स फिर आया, दौड़ता हुआ, रोता हुआ, तो महमूद को अन्दर इत्तिला की गई, वो उसी वक़्त तलवार हाथ में लिए हुए साथ चला और उसके घर में दाख़िल हुआ, और जाते ही चिराग़ बुझा दिया, और एक तलवार का हाथ मारा, और उसकी गर्दन उड़ा दी, और उसके साथ ही ज़मीन पर गिर गया, कहने लगा, ويحك اسقني अरे तेरा भला हो, जलदी से पानी ला।

वो भाग कर गया, पानी लाया, पानी पिया, कहा

चिराग़ जलाओ, चिराग़ जलाया तो उसकी जब लाश को देखा तो कहा, الحمدلله तो ये कहने लगा :

सुलताने मुअ़ज़्ज़म समझ में नहीं आई, आपकी कहानी मुझे, आपने क़त्ल करते ही पानी मांगा, फिर उसकी लाश को देख कर الحمدلله कहा, कहने लगा :

जिस दिन तुम आए थे नां, उस दिन से क़सम खाई थी कि न खाउंगा, न पियूंगा जब तक तेरी मदद न कर लूं, तीन दिन से प्यासा हूं, न खाया है, न पिया है और भूखा भी हूं, और अल्हमदुलिल्लाह इसपर कहा कि मेरा भांजा नहीं है, कोई मेरे ख़ानदान को बदनाम करने के चक्कर में उनका नाम लेता था, मुझमें से नहीं है। तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

जब मैं राज़ी होता हूं, तो ऐसों को हुकूमत दे देता हूं, जो औरों का दर्द उठाते हैं, औरों का ग़म खाते हैं, पैसा सख़ियों को देता हूं, जो फ़ुक़रा पर ख़र्च करते हैं।

अल्लाह को दिल में बसा लो!!

अल्लाह की क़सम! अर्श भी उस दिल के सामने छोटा पड़ जाता है, जिसमें अल्लाह की मोहब्बत उतर आती है, अर्श भी छोटा है, जिसमें अल्लाह आ गया और सूई के नाके से तंग है, वो दिल जिसमें से अल्लाह निकल गया, जिससे अल्लाह का तअ़ल्लुक़, मोहब्बत, मारिफ़त निकल गया वो من سم الخياط सूई के नाके से भी तंग है।

तो मरने से पहले अपने अल्लाह से जी लगा लें।

अल्लाह की क़सम! कायनात की कोई शक्ल, कोई सूरत, क़ोई नग़मा, कोई नेमत, कोई मश्रूब, कोई गिज़ा, कोई तख़्त, कोई जलवा, कोई नज़ारा वो दिल की दुनिया को आबाद नहीं कर सकता, ये आबाद सिर्फ़ अल्लाह से होता है, यहां अल्लाह ही होगा, तो ये आबाद होगा, अगर अल्लाह न हुआ तो कायनात का हसीन से हसीन मन्ज़र भी उसकी दुनिया को वीरान रखेगा, जिसका दिल का दिया न जल सका, न कोई जला सकता है, न कभी जलेगा, जिसका दिल अल्लाह से कट गया, जिसके दिल की शमा बुझी है ये कभी न जलेगी।

न राग रंग से, न जलवों में, न नाफ़रमानियों में, न नज़ारों में न कायनात की दौलत में, न अर्श व फ़र्श में इसको जलाना है, इस दीप को रोशन करना है, इसमें अल्लाह को ले लें, अल्लाह को, जो तय्यार बैठा है कि तू मुझे बुला तो मैं आ जाऊँ।

दुनिया के बादशाह से तअल्लुक़ जोड़ना हो, तो क्या क्या पापड़ बेलने पड़ते हैं और उस बादशाह से तअल्लुक़ जोड़ना हो, तो बस दो लफ़्ज़ बोलने पड़ते हैं : या अल्लाह मेरी तौबा, अब मैं तेरा हो गया।

वो भी कहता है :

ठीक है, हम तो पहले ही तेरे थे, तुम्हारा ही इन्तिज़ार था। يا ابن آدم كم تزين لنافهل تزينت لا جلى मेरा बन्दा तू लोगों के लिए जितना संवरता है, कभी मेरे लिए तो बन के आया कर।

जन्नत के ख़ूबसूरत नज़ारे

जन्नती से कहा जाएगा अब महल में दाख़िल हो जा, طرائق خضر अन्दर बने हुए हैं, सफ़ेद मोती की चट्टानों के रास्ते बने हुए हैं, सोने की चट्टानों के रास्ते बने हुए हैं, चांदी की चटटानों के रास्ते बने हुए हैं।

उनके साथ चलता हुआ महल में आएगा। महल कितना ऊँचा है? फ़र्श से ले कर छत तक एक लाख हाथ ऊँचा होगा, فياتى الا اريكة एक बहुत बड़े तख़्त पर आएगा اريكه कहतें हैं ऐसा तख़्त जिसके चारों तरफ़ कोनों पर लकड़ियां खड़ी कर के और ऊपर से छत कर उसे ख़ूबसूरत मुज़य्यन किया जाए।

उसे 'अरीका' कहते हैं और 'सरीर' कहतें हैं जिसके ऊपर छत न हो वो 'सरीर' है अरीका ऊपर से छत हो, على العريقة سبعون سريرا उस अरीका पर सत्तर मसहरयां होंगी, على كل سرير سبعون فراش और उस पर सत्तर सत्तर बिस्तर होंगे, على كل فراش سبعون جاريه हर हर बिस्तर पर सत्तर सत्तर बीवियां बैठी होंगी, على كل جارية سبعون حلة हर जन्नत की औ़रत पर सत्तर जोड़े होंगे, على كل حلة على غير لون صاحبتها हर जोड़े का रंग अलग होगा, على كل جارية سبعون لونا من الطيب हर जन्नत की उस औ़रत पर सत्तर क़िस्म की ख़ुशबूएं होंगी, ينفذ بصره من ورآء الحلل और सत्तर जोड़ों में उसका जिस्म उसे चमकता हुआ नज़र आएगा।

ऐसी हुस्न व जमाल वाली होंगी, لا يلن उनमें पेशाब नहीं है, لا يتغوطن पाख़ाना नहीं है, لا يحضن ख़ून नहीं है, لا يلدن वलादत नहीं है, لا يفضخن उनकी बकारत नहीं टूटती, हमेशा कंवारी रहती हैं, ابكارا عربا اترابا कुंवारी हैं, हम उम्र हैं, عربا का क्या मतलब है? متحيات، متعشقات इश्क़ की इन्तिहा, मोहब्बत की इन्तिहा, عُرُب ऐसी मोहब्बत कि मोहब्बत की इन्तिहा, ابكارا हमेशा कुंवारी रहने वाली।

अब आके तख़्त पर बैठा ऊपर देखेगा, وجنا الجنتين دان ऊपर का मंजर तो फूलों का है, फल क़रीब क़रीब हैं, الين من احلى من العسل हर फल शहद से मीठा है, الين من الزبد हर फल मक्खन से नर्म है, اشد بيضا من اللبن दूध से ज़्यादा चमकदार है, ليس فيها عجم इस में गुठली कोई नहीं और एक एक खोशा अंगूर का ऐसा बड़ा कि एक महीने को उड़े, لا ينفع बैठे नहीं, لا يفتر दाएं बाएं न हो जाए, لا ينفنى वो मुड़े नहीं और सुस्त न पड़े, एक महीना अगर खाता रहे तो अंगूर का एक खोशा ख़त्म हो। ये फ़रमाने हबीब है, मैं अपनी तरफ़ से नहीं कह रहा हूं, यूं कहो कि इतना बड़ा कहां होगा? क्यों कि अल्लाह के नबी ने कहा है होगा, हमारा यक़ीन बिलग़ैब है, हम अक़्ल को नहीं देखते ईमान बिलग़ैब को देखते हैं।

मोहब्बते इलाही में ख्वाहिशात को छोड़ने वाले का वाक़ेआ

मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाहि अलैहि जा रहे थे, बाज़ार में एक बांदी देखी बड़ी ख़ूबसूरत बड़ी कशिश, आगे

उसके ख़ादिम, कहा बेटी, कहा क्या बात है? कहा मैं तुझे ख़रीदना चाहता हूं, पहले बांदियों की ख़रीद व फ़रोख़्त होती थी तो जो रईसज़ादे अय्याश होते थे एक एक लाख दिरहम की ख़रीदा करते थें कहा बेटी मैं तुझे ख़रीदना चाहता हूं।

वो हंसने लगी, ابـمـثـلـی क्या मेरे जैसी को तू फ़क़ीर ख़रीदेगा? कहा हां मैं ख़रीदना चाहता हूं, तो उसने खुद्दाम से कहा इसको पकड़ लो, मैं इसे अपने आक़ा को दिखाउंगी, चलो तमाशा ही रहेगा। तो उसके नौकर व नौकरानी उसे पकड़ कर दरबार में ले आए, तो उसका सरदार तख़्त पर बैठा था तो वो हंसने लगी कहा आक़ा आज एक बड़ा लतीफ़ा हुआ। कहा क्या। कहा ये बड़े मियां कहते हैं, मैं तुम्हें ख़रीदना चाहता हूं। वो हंसने लगी।

तो उसने कहा बड़े मियां क्या वाक़ई आप ख़रीदना चाहते हैं? कहा हां मैं ख़रीदना चाहता हूं, कहा क्या पैसे दोगे? कहने लगे वैसे तो बहुत ही सस्ती है, मैं ज़्यादा से ज़्यादा ख़जूर की दो गुठलियां दे सकता हूं, सिर्फ़ गुठलियां, नहीं वो गुठलियां जिन्हें चूं कर फेंक दिया गया हो, जिन पर ज़रा भी ख़जूर न लगी हो, वो सारे हंसने लगे सरदार भी हंसने लगा, बड़े मियां आप क्या कह रहे हैं,? कहा बात ये है इसमें बहुत सारी ख़राबियां हैं इसकी वजह से कह रहा हूं, कहा क्या हैं?

कहा खुशबू लगाए तो उसके पसीने से बदबू पड़ जाए, रोज़ाना दाँत साफ़ न करे तो मुंह की बदबू से क़रीब बैठना मुश्किल हो जाए, रोज़ाना कंघी न करे तो सर में जूंए पड़

कर तेरे सर में भी पड़ जाएं, चार साल और गुज़र गए तो बूढ़ी हो जाएगी, पेशाब पाख़ाना इसमें है, ग़म इसमें, दुख इसमें, लड़ाई इसमें, गुस्सा इसमें, अपनी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए तुझसे मोहब्बत करती है इसकी मोहब्बत सच्ची नहीं गर्ज़ की मोहब्बत है।

जन्नती हूर की खुसूसियात

एक लौंडी मेरे पास भी है, ख़रीदोगे? कहा वो कौन सी है? वो भी सुन लो, वो मिट्टी से नहीं बनी, मुश्क, अंबर, ज़ाफ़रान, और काफ़ूर से बनी है। उसके चेहरे का नूर अल्लाह के नूर में से है। ये हदीस पाक का मफ़्हूम है, उसकी कलाई, सिर्फ़ कलाई सात दुनिया के अंधेरों में आ जाए तो सातों ज़मीनों के अंधेरे रोशनियों में बदल जाएंगे और उसकी कलाई सूरज को दिखाई जाए तो सूरज उसके सामने नज़र नहीं आएगा गुरूब हो जाएगा।

समुन्दर में थूक डाले समुन्दर मीठा हो जाए, मुर्दे से बात करे तो मुर्दे में रूह पैदा हो जाए, ज़िन्दों को एक नज़र देख ले कलेजे फट जाएं, अपने दुपट्टे को हवा में लहरा दे सारे जहां में खुश्बू फैल जाए, सात समुन्दर में थूक डाल दे मीठे हो जाएं, ज़ाफ़रान के बाग़ात में और मुश्क के बागात में परवान चढ़ी है, तस्नीम के चश्मे का पानी पिया और अल्लाह की जन्नत मे परवान चढ़ी है, अपनी मोहब्बत में सच्ची है, बेवफ़ा हरगिज़ नहीं।

मोहब्बत में सच्ची है, वफ़ा में पक्की है, न हैज़ न निफ़ास, न पेशाब, न पाख़ाना, गुस्सा है न लड़ाई, वो हमेशा

राज़ी, हमेशा जवान, हमेशा साथ रहती है उसपे मौत नहीं आती। अब बता मेरी वाली ज़्यादा बेहतर है कि तेरी वाली ज़्यादा बेहतर है? कहने लगा जो आपने बयान की वो बहुत ज़्यादा बेहतर है।

कहा उसकी क़ीमत बताऊँ? कहा बताओ, कहा दो गुठलियों से भी ज़्यादा सस्ती है? कहा उसकी क्या क़ीमत है? कहा उसकी क़ीमत है अपने मौला को राज़ी करने में लग जाओ, मख़लूक़ को राज़ी करना छोड़ दे, ख़ालिक़ को राज़ी करना अपना मक़सद बना ले, जब आधी रात गुजर जाए, सब सो रहे हों तू उठके दो रकअत अंधेरे में पढ़ लिया कर, ये उसकी क़ीमत है।

ये उसकी क़दर है, जब खुद खाना खा ले तो ग़रीब को भी याद कर लिया करो, कि कोई ग़रीब भी है कि उसको पहुंचाऊँ, ये हो जाए तो ये तेरी होगी, कहने लगा अपनी बांदी से तूने सुन लिया जो उसने कहा? कहा सुन लिया, कहा तू अल्लाह के नाम पर आज़ाद, सारे नौकर आज़ाद, सारा माल सदक़ा, सारी दौलत सदक़ा, और अपने दरवाज़े का पर्दा उतार कर कुर्ता बनाया, अपना लिबास भी सदक़ा।

फिर उस लौंडी ने कहा जब तूने फ़क्र इख़्तियार कर लिया मेरे आक़ा तो मैं भी तेरे साथ अल्लाह को राज़ी करने निकलती हूं, फिर दोनों की मालिक रह० ने शादी कर दी, फिर दानों अपने वक़्त के ऐसे लोग बने कि लोग उनकी ज़ियारत के लिए आते थे, अगर हुकूमत आपसे मश्क़ लेती है, तो तंख़्वाह भी तो देती है नां, लेकिन वो बेचारी छोटी सी

है कि इतनी तंख़्वाह देती है कि हलाल से चलने वाले के लिए ज़िन्दगी मुश्किल हो गई।

अल्लाह से दोस्ती की बरकात

ख़ौला बिन सालबा रज़ि0 एक सहाबिया हैं, उनके ख़ाविन्द ने उनको ज़माना जाहिलियत की एक तलाक़ दे दी और उनसे कहा, انت علی کظهر امی तू मेरे लिए मां की तरह है, ये ज़माना जाहिलियत की एक तलाक़ थी, उसके बाद औरत हमेशा के लिए ख़ाविन्द पर हराम हो जाती थी, दूसरा निकाह कर के भी उसके लिए हलाल नहीं हो सकती थी। दूसरा निकाह हो, तलाक़ हो, तीन तलाक़ के बाद तो फिर निकाह हो सकता है, लेकिन ये तलाक़ ऐसी थी कि हमेशा के लिए हराम।

तो हज़रत ख़ौला परेशान हुईं, भाग कर हुज़ूर सल्ल0 की ख़िद्मत में आईं अम्मां आयशा आप सल्ल0 को कंघी कर रही थीं, अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल0! मेरे ख़ाविन्द ने ज़िहार कर दिया है, इस तलाक़ को ज़िहार कहते हैं, तो क्या हुक्म है? अभी कोई हुकम शरीअ़त में, क़ुरआन में आया नहीं था, तो हुज़ूर सल्ल0 ने माहौल और रिवाज के मुताबिक़ फ़तवा दिया, तू उस पर हराम हो गई।

कहने लगी : या रसूलल्लाह सल्ल0 ये आप क्या फ़रमा रहे हैं? मैं हराम हो गई, तो मैं कहां जाऊँगी,? मैं कहां जाऊँगी? आप सल्ल0 इस पर ग़ौर फ़रमाएं, हम दोनों मियां-बीवी में बड़ी मोहब्बत है। वो गुस्से में कह गए हैं, आप सल्ल0 ने कहा तू उस पर हराम हो गई।

उसने कहा : या रसूलुल्लाह सल्ल0 मैं तो बूढ़ी हो गई और शादी के क़ाबिल नहीं रही, मां-बाप मर गए, किसी के घर बैठने के क़ाबिल न रही, पैसा मेरे पास कोई नहीं कि ख़ुद से कुछ अपने मआ़श का इन्तिज़ाम कर सकूं, या रसूलल्लाह आप इसपर ग़ौर फ़रमाएं, आप सल्ल0 ख़ामोश हो गए, वह्य कोई आई नहीं, रिवाज में यही फ़तवा है, औरत मानती नहीं, आप सल्ल0 ख़ामोश हो गए, जब उसने देखा हुज़ूर सल्ल0 कुछ बोल नहीं रहे, तो उसने कहा, अच्छा मैं आपके रब से गिला करती हूं, मैं आपके रब को सुनाती हूं, वहीं बैठे बैठे यूं आसमान की तरफ़ देखा, कभी बड़ी यारी थी, हमारी अल्लाह से, ज़माना हुआ भूल गए।

एक निगाह उठती थी, बोले बग़ैर ही अल्लाह के ग़ैबी निज़ाम हरकत में आ जाती थी, अब तो फ़रयादें भी दम तोड़ गई हैं, हम क़ुसूरवार हैं, अल्लाह ज़ालिम नहीं है, हमारे दुस्तूर बदल गए ـه

कभी हम में तुम भी चाह थी
कभी हम में तुम भी राह थी
कभी हम भी तुम भी थे आशना
तुम्हें याद हो कि न याद हो

हम ही भूल गए अपने रब को, नबी मौजूद है और कह चुका है हराम है, तो उसके बावजूद अल्लाह से कह रही है, ऐ अल्लाह! मेरी सुन! तेरा नबी नहीं सुन रहा है:

ان لی منه وصبية صغار، ان ضممتهم الي فجاعوا،ان ضممتهم اليه وضاعوا.

देख ले मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं, मेरे पास रहें तो रोटी कहां से खिलाउंगी?, बाप के पास रहे तो तर्बियत कौन करे? तर्बियत तो मां करती है। ऐ अल्ला! फ़ैसला उतार लेकिन मेरे हक़ में हो, मेरे ख़िलाफ़ न हो।

इतनी बड़ी दिलेरी कि अल्लाह को यूं कह रही है फ़ैसला भी उतार अपनी शरीअ़त का, मेरे ख़िलाफ़ न हो, मेरे हक़ में हो, मेरे हक़ में हो या अल्लाह! ये जो रोई, हज़रत आ़यशा रज़ि0 फ़रमाती हैं, उसे रोता देख कर मैं भी रोने लगी, उसके रोने ने अर्श के दरवाज़े खुलवा दिए, एक दम हुज़ूर सल्ल0 पर वही नाज़िल हो गई, जब वही नाज़िल होती तो आपका चेहरा बदलता था, तो हज़रत आयशा ने झिंझोड़ा ख़ौला को, ठहर जा देख! देख उसने देखा वह्य आ रही है, तो और ज़्यादा रोने लगी कि पता नहीं मेरे हक़ में है या मेरे ख़िलाफ़। अल्लाह कोई किसी का पाबन्द है तो नहीं और रोना बढ़ गया और ज़ारी बढ़ गई और बेक़रार माही बेआब की तरह।

एक दम आप सल्ल0 ने आंखें खोलीं, पसीना पोंछा कहा बशारत हो फ़ैसला तेरे हक़ में अल्लाह ने कर दिया। अपने नबी के खिलाफ़, नबी के खिलाफ़, फ़तवे के ख़िलाफ़, कहा ख़ौला तेरे हक़ में है, ये भी हमारे नबी की शान है कि उसने ऐसे शागिर्द तय्यार कर दिए, ऐसी औरतें तय्यार कर दीं जिनकी हाए ने वह्य उतरवा दी।

अच्छा वह्य आ जाती, वैसे ही जिबराईल आते या रसूलल्लाह! अल्लाह कह रहे हैं, ये तलाक़ ख़त्म, तो भी

हमारे लिए तो हुज्जत थी, बात हो रही थी लेकिन बहुत से लोगों ने बाद में आना था, जिनकी अ़क़्ल में कीड़े पड़ने थे और उन्हों ने हदीसों का इन्कार करना था अल्लाह तआ़ला ने उसको क़ुरआन का हिस्सा बनाया, क़ुरआन का, और क़ुरआन भी वहां से जहां से सिपारा शरू हो और सिपारा वो जो आज आपने पढ़ा है, यही पढ़ा है ना قد سمع الله قول التی تجادلک فی زوجها ये ताबीर इतनी ताक़तवर है कि जो अ़रबी में मेरे दिल में आ रहा है उसका मफ़्हूम, उसको उर्दू में बताने के लिए अलफ़ाज़ कोई नहीं हैं।

या आप यूं समझ लें कि जैसे अल्लाह यूं कह रहा हो कि मैं भी तुम्हारे पस बैठा हुआ, तुम दोनों का झगड़ा सुन रहा था, मैं भी वहीं मौजूद था, قد سمع الله......سمعتُ काफ़ी था, हमने सुन लिया, अल्लाह ने अपने नाम को ज़ाहिर किया, ख़ौला की इज्ज़त बढ़ाने के लिए।

जन्नत की ऐश व राहत

उसके अस्सी हज़ार नौकर होंगे और उसे कोई तंख़्वाह नहीं देनी पड़ेगी, सारा ख़र्चा अल्लाह के ज़िम्मे है, फिर आगे आएगा, जहां बड़ा लम्बा चौड़ा मैदान होगा, और उसके बीच में तख़्त बिछा होगा, उसपर इसे बिठाया जाएगा, फिर उसके अस्सी हज़ार नौकर होंगे, हर नौकर एक खाने की क़िस्म पेश करेगा, एक मश्रूब की क़िस्म पेश करेगा।

अस्सी हज़ार क़िस्म के खाने और अस्सी हजार क़िस्म के मश्रूब खाता जाएगा, पीता जाएगा, न पेट थकेगा, न आंत फटेगी, न जबरा थके, न दाँत टूटे, न ज़बान दाँतों में

आए।

अल्लाह का सारा निज़ाम ग़ैबी उसके लिए चल रहा है, और हर लुक़्मे की लज़्ज़त बढ़ती जाएगी, हर घूंट की लज़्ज़त बढ़ती जाएगी, दुनिया के बरअक्स होगा, दुनिया में पहला निवाला लज़ीज़ होता है, दूसरा उससे कम और तीसरा उससे भी कम लज़ीज़ होता है, फिर आख़िर में देखने से भी जी भर जाता है, लेकिन जन्नत में इसके बरअक्स होगा, हर घूंट की लज़्ज़त पहले से ज़्यादा होगी, हर लुक़्में की लज़्ज़त पहले से ज़्यादा होगी और फिर अल्लाह तआ़ला ऐसी कुव्वते हाज़्मा देगा, कि चाहे जितना मर्ज़ी खाता जाए, उसका पेट नहीं थकेगा।

न पेशाब होगा, न पाख़ाना होगा,

जब खा पी लेगा, तो फिर उसके ख़ादिम कहेंगे, اتركوه و اهله अब इसे अपने घर वालों से भी मिलने दो, वो वापस चले जाएंगे, सामने से एक पर्दा उठेगा :

فاذا هو بملك آخر

आगे एक और पूरा जहान नज़र आएगा, पूरी एक जन्नत होगी, और वहां एक तख़्त बिछा होगा, जिसपर जन्नत की एक हूर बैठी होगी।

जिसके जिस्म पर सत्तर जोड़े होंगे, हर जोड़े का रंग अलग होगा, ख़ुशबू अलग होगी, सत्तर जोड़ों में उसका पूरा जिस्म नज़र आएगा, जब उसके चेहरे में देखेगा तो उसके चेहरे में उसे अपना चेहरा नज़र आएगा, चालीस साल उसके हुस्न में गुम सुम रहेगा।

फिर वो उसकी बेहोशी को तोड़ेगी, امالک فینا من رغبة अल्लाह के वली आपको मेरी ज़रूरत नहीं है, फिर होश आएगा, कि मैं कहां बैठा हुआ हूं, कहेगा तू कौन है? कहेगीः मैं उनमें से हूं जिन्हें अल्लाह ने तेरी आँखों की ठंढक के लिए छुपाया है।

उम्मते मोहम्मदिया बेहतरीन उम्मत है

ये तो वो ईमान का ज़र्रा है, जो सेन्टी मीटर के दस हिस्से का भी करोड़वां हिस्सा है, और उसके दिल में है, उसकी इतनी क़ीमत है, तो अमेरीका वालों के पास क्या है? तो हमें एहसासे कमतरी से निकलना चाहिए, कि हमारी वजह से सारी दुनिया को रिज़्क़ मिल रहा है, सारे मुसलमान हज़रत मुहम्मद सल्ल० की उम्मत हैं, जो सारी उम्मतों की सरदार है।

انتم تتمون سبعین امت ☆ انتم خیرها واکرمها علی الله

तुम सबसे बेहतरीन उम्मत हो, तुम सबसे अफ़ज़ल उम्मत हो, एक दफ़ा मूसा अ़लैहिस्सलाम ने कहाः

या अल्लाह! मेरी उम्मत से अच्छी कोई उम्मत है, मेरी उम्मत पे बादलों का साया हुआ, मेरी उम्मत को मन व सलवा मिला, तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :

ام اتدری یا موسیٰ ان فضل امت محمد صلی الله علیه وسلم علی سائر الخلق کفضلی علی خلقه.

ऐ मूसा! आपको पता नहीं है कि मुहम्मद सल्ल० की उम्मत को सारी उम्मतों पर वो इज्ज़त हासिल है जो मेरी ज़ात को अपनी मख़्लूक़ पर हासिल है।

जन्नत में अल्लाह का दीदार

एक हवा चलेगी, जिसका नाम मुसय्यिरा है, ये हवा जब चलेगी तो टेहनियों और पत्तों को आपस में टकराएगी, तो जन्नत का म्यूज़िक तय्यार होगा और जन्नत की हूर की आवाज़ होगी, एक बड़ा अजीब समां बंधेगा,

अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे, बोलो! कभी ऐसा सुना है? कहेंगे नहीं, कहा! ये दुनिया में जो रण्डी का गाना नहीं सुना उसका बदला है, इससे अच्छा सुनाऊँ? पूछेंगे इससे अच्छा क्या है? फरमाया ऐ दाऊद आओ मेंबर पर बैठो।

दाऊद की आवाज़ वो थी कि जब ज़बूर पढ़ते थे तो पहाड़ हिलने लग जाते थे, इन्सान के सीने में तो दिल है, लेकिन उनकी आवाज़ पर संग व खिश्त भी झूमने लग जाते थे, يا جبال اوبي معه والطير क़ुरआन बता रहा है, जब दाऊद की आवाज़ होगी और जन्नत का साज़ होगा, तो ऐसा समां बंधेगा कि अपने आपको ही भूल जाएंगे, अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे, बोलो ऐसा कभी सुना है? कहेंगे नहीं सुना, अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे इससे अच्छा सुनाऊँ? कहा इससे अच्छा भी है? फरमाया : बिल्कुल है वो अच्छा क्या है? ऐ मेरे हबीब ! ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम आओ मेम्बर पर बैठो।

इधर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल0 की आवाज़ हो, उधर जन्नत का साज़ हो, ऊपर अल्लाह का साथ हो, वो तो समां ही और हो जाएगा, अ़ल्लाह के नबी की आवाज़ पर जन्नत भी झूमने लग जाएगी। अल्लाह तआ़ला फ़रमाएंगे ऐसा

कभी सुना? कहेंगे नहीं सुना, अल्लाह तआला फ़रमाएंगे इससे अच्छा सुनाऊँ? कहेंगे इससे अच्छा क्या है? कहाः

इससे अच्छा तुम्हारा रब है जो खुद तुम्हें सुनाएगा, फिर अल्लाह जन्नत के बड़े फ़रिश्ते से क़हेगाः ऐ रिज़वान! पर्दे हटा दे, मेरे बन्दे मुझे देख लें।

बिन देखे जिसपर करोड़ों इन्सानों की गर्दनें कट गईं जिसके लिए दश्त व सेहरा में फिरे, जिसके लिए बीवियां छोड़ीं, जिसके लिए ख़ाक छानी, जिसके लिए घर छोड़े, जिसके लिए जंगलों में मारे मारे फिरे, अपने जिस्म की बोटियां करवा लीं, सर उतरवा लिए, नेज़ों पर चढ़ा लिए, बिन देखे जिसके लिए इतना कुछ किया, जब देखेंगे तो क्या होगा?

यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को देख देख कर हाथों पर छुरियां चल गईं, यूसुफ़ के बनाने वाले को देख कर क्या हाल होगा? वहां तो मौत नहीं है, इसलिए ज़िन्दा रहे, वरना अल्लाह को देखते ही मर जाते, अल्लाह का दीदार आंखों की लज्जत होगा, अल्लाह की आवाज़ कानों की लज्ज़त होगी, अल्लाह का साथ दिल व दिमाग़ की लज्ज़त होगा, ये वो महफ़िल होगी जो लाखों साल चलेगी और सब कुछ भूल जाएंगे, हत्ता कि अल्लाह पर्दा फ़रमा लेंगे और कहेंगे तुम्हारी हूरें तुम्हें बुला रही हैं जाओ।

जन्नती कहेंगे या अल्लाह हमें कुछ नहीं चाहिए, बस आपका दीदार ही करते रहें, अल्लाह कहेंगे नहीं, वो तुम्हारी हूरें तुम्हारा इन्तिज़ार कर रही हैं और कह रही हैं, ऐ अल्लाह! हम अपने ख़ाविन्दों से उदास हो गई हैं, इस

महफ़िल में हूर नहीं होगी, ईमान वाली औ़रत होगी, जो हूर से भी सत्तर हज़ार गुना ज़्यादा ख़ूबसूरत होगी।

ये सब सुनकर मूसा अ़लैहिस्सलाम कहने लगे :

'या अल्लाह अगर मुसलमान के हाथ कटे हुए हों और पांव कटे हुए हों, مقطوع اليدين والرجلين، وعاش الدهر كله दोनों हाथ कटे हुए हों, और पांव कटे हुए हों, और नाक ज़मीन पर घिसट रही हो, न कोई खिलाए, न पिलाए और वो क़यामत तक ज़िन्दा रहे, लेकिन मर के यहां से चला जाए जो मैं ने देखा है तो या अल्लाह तेरी इज़्ज़त की क़सम! उसने कोई दुख नहीं देखा।

नमाज़ की अहमियत और इस्राईलियों का ख़ौफ़

1991 ई0 में उरदुन में हमारी जमाअ़त गई थी, हम इस्राईल के बॉडर पर चले गए, आमद व रफ़्त बात चीत होती रहती है, चूंकि कुछ अ़रब इधर रहते हैं, कुछ अ़रब उधर रहते हैं, रिश्तेदारियां हैं तो कहा :

ये यहूदी हम से पूछते हैं तुम्हारे फ़ज्र की नमाज़ में नमाज़ी कितने होते हैं और तुम्हारे जुमे में नमाज़ी कितने होते हैं, हमने पूछा ये तहक़ीक़ क्यों करते हो? उन्हों ने कहा : हमारी किताबों में ये है कि जब फ़ज्र की नमाज़ के नमाज़ी और जुमा की नमाज़ के नमाज़ियों की तादाद बराबर हो जाएगी तो यहूदी दुनिया से मिट जाएंगे।

अब यहां फ़ज्र में डेढ़ सफ़ होती है और जुमे में बाहर भी सफ़ें बनी पड़ी हैं, चलो मैं कहता हूं मान लिया कि 1/3

तबक़ा बाहर से आया है, ये 2/3 तो यहीं से उठ के आया है, ये हर नमाज़ में क्यों नहीं आता?

हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ का ईमान अफ़रोज़ वाक़ेआ़

ईद का मौक़ा था हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़जीज़ के बेटे अपनी मां से कहने लगे कपड़े ले के दो, बारह बेटे थे, जब हज़रत उमर आए तो बीवी ने कहा बच्चे कपड़े मांग रहे हैं, कहने लगे,

मेरे पास तो पैसे कोई नहीं हैं!

हालांकि हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ का ज़माना वो है कि जब तीन बर्रे-आ़ज़मों में ज़कात लेने वाला कोई न बचा था, देपालपूर तक, काशग़र तक, इस्तंबोल तक, सेनीगाल तक जिस शख़्स का झण्डा लहरा रहा था, ये उसकी बात है, जो कहता है मेरे पास तो पैसे नहीं, कपड़े कहां से ले कर दूं?

तो उनकी बीवी ने कहाः हम ऐसा करते हैं कि महीने की तंख़्वाह पेशगी ले लेते हैं, उससे कपड़े सी लेंगे, रोटी के लिए मैं सारे महीना मज़दूरी करती रहूंगी।

हालांकि फ़ातिमा बिन्त अ़ब्दुलमलिक वो ख़ातून हैं जिसकी इतनी इज्ज़त थी कि तारीख़ में उसकी मिसाल नहीं है, ये वो ख़ातून है जिसका दादा, जिसका बाप, जिसका ख़ाविन्द, और जिसके चार भाई यके बाद दीगरे बादशाह

बने, सात निस्बतों से ये लड़की मलिका थी, ऐसी ख़ातून की तारीख़ में नज़ीर कोई नहीं है, ये कह रही है, मैं मज़दूरी कर लूंगी और हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ जब गवरनर थे, ख़लीफ़ा नहीं बने थे, तो सौ ऊँटों पर उनके क़पड़े आते थे।

एक दफ़ा जा रहे थे, रेशमी लिबास पहना हुआ था, और टख़नों से नीचे था, (जबकि अल्लाह के नबी का हुक्म है टख़नों से ऊपर रखो) तो एक शख़्स ने कहा उमर! अपनी शलवार ऊपर करो, तो जवाब दिया :

बादशाहों से बात करने का सलीक़ा सीखो, दोबारा कहा तो गर्दन उड़ जाएगी।

उस वक़्त ये वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक की तरफ़ से गवरनर थे, जब ये ख़लीफ़ा बने तो सारे निज़ाम ही बदल गए।

एक मर्तबा उन्हों ने अपने नौकर को आठ रूपये दिए कि जा चादर ले कर आओ, वो ले आया कहा बहुत नर्म है वापस कर दो मुझे नहीं चाहिए, वो नौकर हंसने लगा, कहा क्यों हंसे हो, कहाः जब आप गवरनर थे तो आपने आठ सौ दिरहम दिए और कहा था चादर लाओ आठ सौ की चादर ले कर आया तो आपने कहा था बहुत सख़्त है वापस कर दो, मुझे नहीं चाहिए, आज आठ रूपये की चादर आपको नर्म नज़र आ रही है।

तो उनकी बीवी ने कहा मैं मज़दूरी कर लूंगी, आप

तंख़्वाह ले लें, उन्होंने अपने ख़ज़ांची को बुलाया, कहा भई हमें तंख़्वाह पेशगी दे दो, हमने कपड़े बनाने हैं, तो वो कहने लगा :

आप एक महीने ज़िन्दा रहने की ज़मानत दे दें, मैं आपको तंख़्वाह दे देता हूं, तो कहने लगे मैं तो एक दिन की भी ज़मानत नहीं दे सकता।

घर में आए बीवी ने कहा क्या बात है? कहा बच्चों से कह दो कि उनका बाप उन्हें कपड़े नहीं ले के दे सकता, दो साल दो महीने ये मशक्क़त उठाई और उसका रिज़ल्ट क्या मिला, उन्हों ने हज़रत रजा को बुलाया, कहा :

रजा! मैं ने अ़ब्दुल मलिक को क़बर में रखा तो उसका चेहरा क़िब्ले के रुख़ से फिर चुका था और रंग काला स्याह हो चुका था, फिर वलीद को क़बर में रखा तो उसके कफ़न की गिरह खोल कर देखा उसका चेहरा क़िब्ले के रुख़ से फिर चुका था और रंग स्याह हो चुका था, फिर मैं ने सुलैमान को क़बर में रखा (जो बनु उमय्या का ख़ूबसूरत तरीन इन्सान था) और उसकी गिरह को खोला तो उसका चेहरा क़िब्ले से हट चुका था, और रंग काला स्याह हो चुका था, अब मैं जा रहा हूं, मुझे देख लेना मेरे साथ क्या होता है। तो उनका हाल अल्लाह ने क़ब्र में जाने से पहले ही दिखा दिया, जब उनकी मय्यत को लहद के क़रीब कर दिया तो हवा का एक झोंका आया और एक परचा गिरा, परचे

को उठा कर देखा तो उसपर लिखा हुआ था :

بسم الله الرحمن الرحيم، برائة من الله بعمر ابن عبدالعزيز من النار.

ये उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की जहन्नम से निजात का परवाना है, परवाने को कफ़न में डाल दिया गया।

फरमाते हैं: जब मैं ने कफ़न खोला और चेहरे को देखा तो मुंह क़िब्ले की तरफ़ था और यूं लग रहा था जैसे चौदहवीं रात के चांद के टुकड़े को काट कर क़ब्र में रख दिया गया हो।

मेरे भाइयो! जिस्म का इस्तेमाल सीखना पड़ता है, अल्लाह तआ़ला के यहां तरीक़ा मुहम्मदी चलता है, صبغة الله। कौन अल्लाह के रंग में रंगा हुआ है, कौन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का है, तो ये तब्लीग़ की मेहनत इस में रंगने की मेहनत है, इसमें आप निकल कर अल्लाह के दीन को फैलाएं।

सौ आदमियों के क़ातिल की तौबा का वाक़िआ़

शिर्क़ के बाद सबसे बड़ा गुनाह क़त्ल है, बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत है, कि बनी इस्राईल में से एक आदमी निन्नानवे क़त्ल कर चुका उसके बाद उसे ख़्याल आया कि मैं तौबा कर लूं, उसने किसी अनपढ़ से पूछ लिया, क्या मेरी तौबा क़बूल हो जाएगी? उसने कहा :

तेरी तौबा कैसे क़बूल हो सकती है, निन्नानवे क़त्ल कर चुका है, तू तो सीधा दोज़ख़ी है, उसने कहा तो सौ पूरे

करूं अधूरा काम तो न हो और उसे भी उड़ा दिया, और सौ पूरे कर दिए।

फिर उसे ख़्याल आया कि तौबा करूं तो किसी आलिम से पूछा कि मेरी तौबा क़बूल है? कहा बेटा क्यों नहीं लेकिन एक शर्त है कि तौबा पक्की होनी चाहिए और तौबा पक्की उस वक़्त होती है जब आदमी अच्छा माहौल इख़्तियार करे, तो यहां चूंकि माहौल अच्छा है नहीं, तू ये शहर छोड़ दे, और फ़लां बस्ती चला जा, वहां नेक लोग रहते हैं, वहां तेरी तौबा पक्की हो जाएगी।

यही हम कहते हैं नारोवाल हो या पाकिस्तान का कोई शहर हो माहौल इतना गन्दा है, कि तौबा पक्की होती नहीं, इसलिए तौबा पक्की करने के लिए उसे चिल्ले और चार महीने के लिए छोड़ दें।

औरतों का दिल चूंकि नर्म होता है, इस लिए उनको तीन दिन में वो कुछ हासिल हो जाता है, जो मर्दों को तीन चिल्ले में हासिल होता है, ज़मीन नर्म होती है, उसने कहा जी मैं तय्यार हूं, मेरी तौबा क़बूल होनी चाहिए, आलिम ने कहा तू यहां से निकल जा, उसने सामान उठाया और चल दिया, लोग हमें कहते हैं कि ये बिस्तर उठा कर निकल पड़ते हैं, तो ये बनी इस्राईल से बिस्तर उठाना चला आ रहा है, वो चल पड़ा रास्ते में बीमार हो गया, और मौत ने आ घेरा, और उसे नज़र आया कि नहीं बचता तो उसने

आहिस्ता आहिस्ता चलना शुरू कर दिया, जब गिर पड़ा तो रेंगना शुरू कर दिया और जब मौत ने झटका दिया तो उसने लपक कर छलांग लगाई और जब उसने छलांग लगाई तो उसके दोनों हाथ आगे फैले हुए थे और उसी हाल में उसकी रूह क़ब्ज़ हो गई।

अल्लाह को उसकी ये अदा पसन्द आई कि अल्लाह ने क़्यामत तक के लिए उसकी कहानी को हम तक पहुंचाने केलिए दुनिया में ही उसपर मुक़द्दिमा चला दिया, जन्नत के फ़रिश्ते भेज दिए और दोज़ख़ के फ़रिश्ते भी भेज दिए। दोज़ख़ वाले कहने लगेः हमारा क़ैदी है, जन्नत वाले कहेंः हमारा मेहमान है, तौबा कर चुका है,

दोज़ख़ वाले फ़रिश्तों ने कहा :

तौबा पूरी नहीं हुई, वहां जाता तो पूरी होती।

जन्नत वाले कहने लगे :

तौबा पूरी हो गई है कि जब चल पड़ा तो तौबा हो गई, फ़ैसला नहीं हो रहा था, तो अल्लाह तआला ने एक तीसरा फ़रिश्ता भेजा उसने कहा :

इधर की ज़मीन भी नापो और उधर की ज़मीन भी नापो, अगर घर के क़रीब है तो दोज़ख़ी और अगर इस बस्ती के क़रीब है तो जन्नती है, हालांकि घर का फ़ासला कम था और उस बस्ती का ज़्यादा था लेकिन ज़मीन भी अल्लाह की और जहान भी अल्लाह का।

जब नापने लगे तो अल्लाह ने बस्ती की तरफ़ वाली ज़मीन से कहा सिकुड़ जा और घर के तरफ़ वाली ज़मीन से कहा फैल जा, ये फैल गई और वो सिकुड़ गई, बस्ती की तरफ़ घट गई और घर की तरफ़ बढ़ गई, और अल्लाह ने कहा मेरे बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर दो।

दुनिया में ख़ाली हाथ आए और जाओगे भी ख़ाली हाथ

कोई घर सलामत नहीं, ये घर कितने शौक़ से बना पड़ा है लेकिन कितनी हसरत की बात है कि चन्द दिनों के बाद लोग इसको छोड़ कर जाना शुरू हो जाएंगे और मिट्टी और कीड़ों के घर में जा कर उनके अपने ही उनको दबा देंगे, कोई उनकी हाए हाए भी नहीं सुनेगा कि हमने कितने अरमानों से ये घर बसाया था।

एक एक पौदे का इन्तिख़ाब करके लगाया, मुझे कहां ले जा रहे हो? हां हां! यही दुनिया की रीत है कि मरने वालों को कोई घर में नहीं रखा करता, यहां ज़िन्दों के लिए मक़ाम है, मरने वालों केलिए कोई मक़ाम नहीं है, जाओ जाओ, एक दिन ऐसा आएगा कि इस घर को बनाने वाले को कोई याद भी नहीं करेगा कि किसी ने ये घर बनाया था, क़बरें भूल जाएंगी, नाम भूल जाएंगे, ये भी भूल जाएगा कि कभी मिल कर बैठे थे।

इस जहां की सरिश्त और फितरत में ही बे-वफ़ाई है। इस जहां की फ़ितरत भूल जाना है। फितरत मिटना है, बचना नहीं है, कहतें हैं मरते मरते बचा, अरे एक दिन बचते बचते मर ही जाओगे, कब तक कहोगे मरते मरते बचा, एक दिन बचते बचते मर ही जा ओगे।

वो देखो जनाज़े उठ रहे हैं, एक दिन हम भी उठा दिए जाएंगे इस जहान से जी लगाने से पहले ही एक ज़र्ब लगी कि यहां तो मरते भी हैं, यहां तो उठ भी जाते हैं, बड़े बड़े ख़ूबसूरत मनाज़िर को छोड़ कर, बड़े बड़े ख़ूबसूरत बेडरूमज़ को छोड़ कर, बड़े-बड़े आलीशान बिस्तरों को छोड़ कर, मिट्टी के घरों में सोते हैं, मिट्टी के बिस्तर पर लेटते हैं और मिट्टी की चादर औढ़ कर ऐसे बुझ जाते हैं जैसे शमा जलते जलते बुझती है, तो अपना वजूद भी मिटा जाती है, जैसे था ही कोई नहीं कोई आया ही न था बनाने के लिए।

दुनिया धोखे का घर है

तो अल्लाह तआला ने दुनिया की हैसियत इतनी रखी है कि ये मच्छर का पर भी नहीं, अगर होती तो काफिर को घूंट न मिलता, और हक़ीक़त ये बताती है कि अगर तुम पक्के रहते तो मैं तुम्हें दुनिया में कुछ न देता और काफिर के घर सोने और चांदी के, जिस्म लोहे के, न बूढ़े होते न बीमार होते, सिर्फ़ मौत आती और कुछ होता।

इसका नतीजा क्या बताया والاخرة عند ربك للمتقين और ये सारे का सारा दुनिया में चार दिन का खेल तमाशा था, फिर असल अंजाम तो मेरे पास तक़वे वालों का है, अब दुनिया का बनाने वाला हमें इसकी क़ीमत बता रहा है, وما الحيوة الدنيا الا متاع الغرور कहा ये सारी दुनिया एक धोखा है और धोखा किसे कहते हैं? हो न और नज़र आए, इसको धोखा कहते हैं, आपको दुनिया की ख़ूबसूरती नज़र आ रही है।

अल्लाह तआ़ला कहता है ये धोखा है हक़ीक़त नहीं, आपको जवानी नज़र आ रही है, अल्लाह तआ़ला कहता है ये धोखा है, आपको ख़ूबसूरत वादियां नज़र आरही, अल्लाह तआ़ला कहता है ये धोखा है।

बड़ी बड़ी बिलडिंगें नज़र आ रही हैं, हुकूमत नज़र आ रही है, ताक़त नज़र आ रही है, दौलत नज़र आ रही है, इज्ज़त नज़र आ रही है, जिल्लत नज़र आ रही है, बदसूरती नज़र आ रही है, परेशानी नज़र आ रही है, जो भी शक्ल है हुस्न के नक़्शे हों, बदसूरती के नक़्शे हों, इज्ज़त की चोटी हो या ज़िल्लत की पस्ती हो।

अल्लाह तआ़ला कहता है ये तुम्हारी नज़र का धोखा है और कुछ भी नहीं है, دار الغرور धोखे का घर متاع الغرور धोखे का सामान, جناح بعوض मच्छर का पर है।

तो अल्लाह ने इस दुनिया को तीन ख़िताब दिए हैं, धोखे का घर, मच्छर का पर और मकड़ी का जाला, अगर कोई आदमी मच्छर के परों से झोली भर ले, तो आप क्या कहेंगे? कि बड़ा ख़ुशनसीब है भई देखो कितना माल ले के जा रहा है, बल्कि ये कहेंगे कि ये इतना पागल है, कि मच्छरों से झोली भर के ले जा रहा है।

दुनिया क़ीमती नहीं बल्कि ईमान क़ीमती है, अल्लाह ने हमें ईमान दिया है, हम मुसलमान हैं, ये कितनी बड़ी हमारे ऊपर अल्लाह की रहमत की बारिश है कि उसने हमें मुसलमान बना दिया, सारी दुनिया के काफ़िर मुसलमानों की वजह से ज़िन्दा हैं, सारी नुनिया के मुश्रिक, यहूदी और ईसाई मुसलमानों की वजह से जिन्दा हैं, मुसलमान न हों तो सारी कायनात तोड़ दी जाए, मुसलमान न हों तो ज़मीन आसमान का नक़्शा टूट जाए, لا تقوم الساعة حتى يقال على وجه الارض ......الله...... الله जब तक एक मुसलमान भी ज़िन्दा है क़यामत नहीं आएगी।

फ़ज़ायले उमर रज़ि0

हज़रत उमर रज़ि0 वो शख़्सियत हैं जिनके तुफ़ैल बाईस लाख मुरब्बा मील में इस्लाम फैला और वो शख़्स है जिसके बारे में आप सल्ल0 ने फ़रमाया : उमर रज़ि0 जिस रास्ते से गुज़रता है शैतान वो रास्ता बदल जाता है और वो

शख़्सियत हैं जिनके बारे में हुज़ूर सल्ल0 ने मैदाने अ़रफ़ात में फ़रमाया, सवा लाख का मजमा है सहाबा केराम रज़ि0 मौजूद हैं, आप सल्ल0 ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला मेरे तमाम सहाबा रज़ि0 पर फ़ख़्र फ़रमा रहे हैं और उमर रज़ि0 पर ख़ास तौर पर फ़ख़्र किया जा रहा है।

ये वो आदमी है जिस पर अल्लाह फ़ख़्र फ़रमाते हैं, जिस पर अल्लाह को फ़ख़्र है वो शख़्सियत, तो कितना बड़ा मक़ाम है कि आप सल्ल0 ने फ़रमाया मेरे बाद अगर कोई नबी होता तो उमर रज़ि0 होता। मेरे दो वज़ीर ज़मीन में हैं और दो आसमान में हैं। अबूबक्र व उमर रज़ि0 मेरे दुनिया के वज़ीर हैं और जिबरील व मीकाईल मेरे आसमान के वज़ीर हैं।

और आप सल्ल0 ने एक हाथ अबूबक्र और उमर रज़ि0 का पकड़ा और फ़रमाया मैं और अबूबक्र व उमर रज़ि0 क़ियामत के दिन इस तरह इकट्ठे खड़े होंगे कि मेरे दाएं तरफ़ अबूबक्र रज़ि0 निकलेंगे और बाएं तरफ़ उमर रज़ि0 निकलेंगे।

कितनी बशारतें मैं ने आपको सुना दीं, और बाइस लाख मुरब्बा मील का इस्लाम लाखों इन्सान जिसकी बरकत से मुसलमान हुए, इस्लाम को उनकी बरकत से इज़्ज़त मिली, बुलन्दी मिली और उन्हें अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मांग कर लिया, या अल्लाह! मुझे उमर

दे दे, और फिर उनको जो मौत आइ वो ग़फ़लत की मौत नहीं बल्कि शहादत की मौत है नमाज़ पढ़ाते हुए फ़ज्र की नमाज़ में खड़े हुए उन्हें अल्लाह तआ़ला ने शहादत का इनाम बख़्शा और जब मौत की दसतक महसूस किया तो अपने बेटे अब्दुल्लाह को बुलाया इतनी बशारतों के बावजूद फ़रमाया अ़ब्दुल्लाह! अम्मां आयशा रज़ि0 से पूछ कर आओ, कि उमर अपने साथियों के साथ दफ़न होने की इजाज़त चाहता है और ये न कहना कि अमीरुलमूमिनीन इजाज़त चाहता हैं बल्कि ये कहना कि उमर इजाज़त चाहता है, अगर वो इजाज़त दे दें तो मुझे मेरे मरने के बाद दफ़न करना अगर इजाज़त न दें तो मुझे क़ब्रस्तान में दफ़न कर देना, हज़रत अ़ब्दुल्लाह जब पूछने गए तो देखा कि अम्मां आयशा रज़ि0 रो रही हैं, हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने अर्ज़ किया कि अम्मां जान! मेरा बाप उमर अपने साथियों के साथ जगह चाहता है, तो हज़रत आयशा ने फ़रमाया ये जगह तो मैं ने अपने लिए रखी हुई थी लेकिन अगर उमर चाहते हैं तो उसे मैं अपनी ज़ात पर तर्जीह दूंगी, मेरी तरफ़ से इजाज़त है।

ये और बड़ी ख़ुशख़बरी मिल गई और ऊँची बात हो गई हज़रत अ़ब्दुल्ला रज़ि0 ने आकर अर्ज़ किया अब्बा जान! मुबारक हो, पड़ोस की इजाज़त मिल गई, क़्यामत तक का साथ, दुनिया का भी और आख़िरत का भी,

फ़रमाया, नहीं नहीं बेटा मुमकिन है मेरी शर्म में इजाज़त दी हो, जब मैं मर जाऊँ, मेरा जनाज़ा उठा कर ले जाना और वहां रख कर एक दफ़ा फिर इजाज़त मांगना, उस वक़्त अगर इजाज़त मिल जाए तो अन्दर ले जाना, ये सब कुछ फ़ज़ायल भी आपने देख लिए, शहादत भी आपने देख ली और हुज़ूर सल्ल0 के पड़ोस की जगह भी देख ली।

इस सबके बावजूद जब ये महसूस हुआ कि मौत आ रही है, तो उनका सर बेटे की गोद में था उसे इरशाद फ़रमया: बेटा मेरा सर ज़मीन पर रख दे मिट्टी पे रख दे, उन्हों ने आपका सर मिट्टी पर रख दिया, तो वो अपने गाल मिट्टी पर रगड़ने लगे और कहने लगे ويل لک يا عمران لم يغفر لک ربک ऐ उमर! तू बर्बाद हो गया अगर तेरे अल्लाह ने तुझे माफ़ न किया।

माफ़ी की कोई कसर बाक़ी थी, इस लिए मैं ने आपको उनके फ़ज़ायल व कमालात सुनाए ताकि पता चले कि कौन आदमी जा रहा है, ويل لک يا عمران لم يغفرلک ربک ऐ उमर तू बर्बाद हो गया अगर तेरे रब ने तुझे माफ़ न किया, यही दोहराते रहे (और जान जाने-आफ़रीं के सुपुर्द कर दी) ये वो शख़्स जिनके लिए जन्नत सजाई गई, जिनका इस्तिक़बाल फ़रिश्तों ने किया लेकिन मौत के वक़्त ये कैफ़ियत थी कि बार बार ये कह रहे थे मैं मर गया अगर मेरे रब ने मुझे माफ़ न किया,

हज़रत सुहैब रज़ि0 ने जनाज़ा पढ़ाया, मय्यत उठा कर जा कर हुज़ूर सल्ल0 के दरवाज़े के सामने रख दिया, सारा मजमा पीछे मय्यत आगे, अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 उनके बेटे आगे बढ़े और दरवाज़े पर दस्तक दी।

हज़रत अम्मां आयशा रज़ि0 अन्दर थीं, अर्ज़ किया अम्मां जान! मेरा बाप उमर बिन ख़त्ताब दरवाज़े पर हाज़िर हो चुका है और अन्दर आने की इजाज़त चाहता है; हज़रत आ़यशा रज़ि0 ने चादर उठाई, पर्दा किया और फ़रमाया, مرحبا بعمر उमर के लिए राहें खुली हैं और बाहर दूसरे घर में तशरीफ़ ले गईं। ताकि क़बर खोदी जा सके, जिस शख़्स को इतने एज़ाज़ मिल रहे हों वो मौत पर यूं कह रहा है बर्बाद हो गया मैं अगर तुझे मेरे अल्लाह ने माफ़ न किया।

जब हज़रत उमर रज़ि0 की क़ब्र खोदी जा रही थी हज़र अ़ब्दुल्लाह बिन अब्बासा रज़ि0 फ़रमाते हैं मैं ने महसूस किया कि मेरे कंधे पर किसी ने हाथ रखा है, जब मैंने पीछे देखा तो हज़रत अ़ली रज़ि0 खड़े हुए थे और उनकी आँखों में आँसू जारी थे और ये इरशाद फ़रमा रहे थे : ऐ उमर रज़ि0 ! मुझे पता था कि तू इस जगह के सिवा कहीं भी दफ़न नहीं हो सकता, तेरे लिए यही जगह थी इस लिए कि मैं ने एक दफ़ा नहीं बल्कि कितनी दफ़ा हुज़ूर से इन कानों सें सुना कि अल्लाह के नबी ने फ़रमायाः मैं और मेरे साथी

अबूबक्र रज़ि0 और उमर रज़ि0, मैं और मेरे रफ़ीक़ अबूबक्र और उमर रज़ि0, मैं और मेरे सहाबी अबूबक्र व उमर रज़ि0, ये बोल मैं ने बीसियों दफ़ा अल्लाह के नबी! से सुना। इसलिए मुझे यक़ीन था कि इस जगह में तेरे सिवा कोई आही नहीं सकता।

इतनी बड़ी तय्यारी करने के बावजूद लरज़ां व तरसां, कांपते हुए, थर्राते हुए मर गए, हमारे पास क्या है? फिर ये कैसी ग़फ़लत है इसको कैसे दूर किया जाए, मुझे समझ में नहीं आता कहां से वो अलफ़ाज़ लाए जाएं जो दिल के पर्दों को जा कर चीरें और अन्दर जा कर सोए हुए ईमान को बेदार करें, अपनी बेबसी नज़र आती है।